सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	दिनकालवेला	
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३॥	१
कालवे	कालवे	उद्वेगवे	अमृतवे	रोगवे	लाभ	शुभवे	३॥	२
लाभवे	शुभवे	चरवेला	कालवे	उद्वेगवे	अमृत	रोगवे	३॥	३
अमृत	रोगवे	लाभवे	शुभवे	चरवेला	काल	उद्वेगवे	३॥	४
कालवे	उद्वेगवे	अमृतवे	रोगवे	लाभवे	चरवे	शुभवे	३॥	५
शुभवे	चरवेला	कालवे	उद्वेगवे	अमृतवे	रोगवे	लाभवे	[illegible]	६
रोगवे	लाभवे	शुभवे	चरवे	कालवे	उद्वेग	अमृत	३॥	७
उद्वेगवे	अमृतवे	रोगवे	लाभवे	शुभवे	चरवे	कालवे	३॥	८
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रात्रि	
अमृत	चररात्री	कालरात्री	उद्वेगरा	[illegible]	रोगरा	[illegible]	३॥	१
[illegible]	रोगरा	लाभरा	शुभरा	चररा	कालरा	उद्वेग	३॥	२
[illegible]	कालरा	उद्वेगरा	[illegible]	रोगरा	लाभ	शुभरा	३॥	३
रोगरा	लाभरा	शुभरा	चररा	कालरा	उद्वेग	अमृतरा	३॥	४
कालवे	उद्वेगरा	अमृतरा	रोग	लाभ	शुभ	चर	३॥	५
		चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	३॥	६
				[illegible]	चर	काल	३॥	७
					रोग	लाभ	३॥	८

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ शीघ्रबोधवालब[illegible]लोक मूल ॥
मासर्यंते जगद्भासा भत्वा भास्वंतमव्ययं ॥ क्रियते काशि
ग्रहः ॥ १ ॥ टीका ॥ काशीनाथ जो है सो आचार्य ने सूर्य को [illegible]
है सूर्य जिनकी आभा जो है संसार सो प्रकाशित है और ऊ[illegible]के
कहिये अविनाशी जिनको नाहीं है विनाशकाल ऐसे सू
र्य ॥ ज्योतिष शास्त्र के अनेक ग्रंथांतरन को [illegible]लेकरि [illegible]
यह करते हैं ॥ १ ॥ मूल ॥ रोहिण्युत्तररेवत्य[illegible]स्वाति मृगो
वहलश्च वीवाहे मंगलप्रदा ॥ २ ॥ [illegible] ॥ [illegible] रोहिणी उत्तरा [illegible]
स्वाति मृगशिर मघा मूल अनुराधा हस्त ये ग्यारह नक्षत्र विवाह [illegible] मंगल के दा
ता है ॥ २ ॥ इति विवाह नक्षत्राणि ॥ मूल ॥ माघे धनवती कन्या फाल्गुने [illegible] सुभगा
भवेत् ॥ वैशाखे च तथा ज्येष्ठे पत्युरत्यंतवल्लभा ॥ ३ ॥ [illegible]का ॥ माघमास में वि
वाह करै तो कन्या धनवती होई ॥ फाल्गुन में सौभाग्यवती होई वैशाख तथा
ज्येष्ठ में विवाह है यतो ॥ अपने पत को अत्यंत प्यारी होई ॥ ३ ॥ मूल ॥ आषाढे कु

२

शी·टी त्वरद्विमासादन्येमासाश्च वर्जिताः॥ मार्गशीर्षमपि श्रेष्ठं तिविवाहे केपिकोवि
दा॥ ४॥ टीका॥ जो आषाढमासमें विवाह करै तौ कुलकी वृद्धि होई॥ अन्ये
मासकहियेः॥ और जो महीने है विवाहमें वर्जित है॥ और मार्गशीर्ष जो है
अगहन सोकोउ एकदुई आचार्य विवाहको शुभ कहते है॥ ४॥ [illegible]
मास॥ मूल॥ अमावस्याचरिक्ताचवारवेला [illegible] जन्मर्भं [illegible] रगा
श्चवर्जनीयाप्रयत्नतः॥ ५॥ टीका॥ अमा [illegible] और रिक्त [illegible] ४
॥९।१४॥ वारवेला और जन्मको नक्षत्र और [illegible] रवार॥ [illegible]
रगांडांतमूलये विवाहको यत्नपूर्वक वर्जै [illegible]
रिक्ताप्रसोश्चतिथयः क्रमात॥ वारवद्यंसमा [illegible]
दे॥ टीका॥ नंदाभद्राजयारिक्तायेपांचनामतिथि [illegible]
कहिये॥ १।६।११॥ भद्राकहिये॥ २।७।१२॥ जयाकहि [illegible]
५।१०।१५॥ इतिपरासंगानिये॥ इतितिथिनाम॥ मूल॥
योभौमिनंदने॥ चंद्रपत्रेपंचममश्च टेकाचार्गेन्यथाह

लाकहतेहै रविवारकौ ४ याममै अर्द्धयाम श्री मूल

५ गुरुवारकौ ८ यामार्द्ध ७ ॥मूल॥ दैत्यपूज्ये तृतीयः का [illegible]

हार्द्धं शुभे कार्ये वारवेला चक्र पते ॥ ८ ॥टीका॥ रंकौ [illegible]

इस प्रकार सौ इन यामनके अर्द्धयाममै वारवेला [illegible] चक्र [illegible] के

अथ वारवेला चक्रं

·४	·७	·२	·५	·८	·३	·६	याम
३॥	३॥	३॥	३॥	३॥	३॥	३॥	घटी
र·	चं·	मं·	बु·	बृ·	शु·	श·	वार

तहै ॥ इकौ सकौ ठके [illegible] ले [illegible] शुभम [illegible]

वेला ॥मूल॥ भद्रा [illegible]

दग्धा तिथिंच [illegible] मी [illegible]

॥टीका॥ भद्रा [illegible] वारमी

सुतयमघंटक योग [illegible] दग्धा तिथि [illegible] तन [illegible] चक्र [illegible] कु

लिक योग इतने दोष ये विवाह मैं वर्जित है ॥ ९ ॥मूल॥ दशम्यां च [illegible] या [illegible]

कृष्णपक्षे परे दले ॥ सप्तम्यां च [illegible] दश्यां विष्टि पूर्वे दले मता ॥ १० ॥ एकादश्यां

चतुर्थ्यां च शुक्लेपक्षे परे दले ॥ [illegible] पूर्णिमायां च विष्टि पूर्वे दले मता ॥

११ ॥टीका॥ अब [illegible] शुक्लपक्ष की जौनसी तिथिन में पूर्वदल अथवा परदल

टी·टी· विषेविष्टीजा भद्रा होती है॥ सो चक्र मैं विषैं समझ लीजियै॥ १०।११॥ मूल॥

वर्कंच्छ भद्राप्रवेशलतिथिपत्र			
कृष्णपक्ष	३	१०	परार्द्धतिथिः
कृष्णपक्ष	७	१४	पूर्वार्द्धतिथिः
शुक्लपक्ष	४	११	परार्द्धतिथिः
शुक्लपक्ष	८	१५	पूर्वार्द्धतिथिः
इति भद्रातिथिचक्रम्			

मेष वृष मकर रव षक के टस्यौ कं न्या मिथुन लाध
न लाग॥ कुंभ मीन स्थलि के [illegible] सुविं स्तिभद्रा वि· प ३
भुवन मध्ये॥ १२॥ टीका॥ ये भद्रा [illegible] चक्र म
स्तुलौक [illegible] पाताल [illegible] कर ता है
मेष वृष [illegible] मा
लोक मैं जानि [illegible] वार॥ [illegible]
भद्रा पाताल लोक मैं स्तत कुंभ मीन वृश्चिक [illegible]
मैं वास कर तै जानियै॥ १२॥ मूल॥ स्वर्गे भद्रा [illegible]
स्तु लोके यदा विष्टः सर्वकार्ये विनाशिनी॥ स्वर्ग [illegible]
तो शुभ कार्य कों करै औ पाताल मैं होय [illegible]
क मैं होय तो सर्व कार्य विनाश करै॥ १३॥ मूल॥ [illegible]
स्वस्थ धोमुखे॥ ऊर्ध्वस्था स्वर्ग मा भद्रा मन्मुखे म [illegible]

भ्र[illegible]

मथुन[illegible]

लोक मैं भद्रा होय तौ सन्मुख का है यै पाताल मै श्रो [illegible]

स्न मैं जो सन्मुख भद्रा होय जो सम्मुख की दाता है । य [illegible]

यौ रात्रौ भद्रा यदा दिने ॥ तदा विष्टिय दा दोष [illegible] ॥ [illegible]

जो कृष्ण पक्ष मै सप्तमी चौदशकी ॥ श्रौर सुक्ल [illegible] के

वे दल दिवा संज्ञक है ॥ सो रात्रि मै [illegible] के [illegible] श्रेम

मै ॥ ३१ ॥ कौ परदल भद्रा रात्रि संज्ञक है ॥ सो [illegible]

ये भद्रा सुख की दाता है ॥ २५ ॥ इति भद्रा [illegible] ॥ मीन [illegible]

धीवधकुंभयोः ॥ मेषकर्के द्वयो षष्ठी [illegible] वा [illegible] मी [illegible] मिथुन २

के सिंहे द्वादशी मकरे तुले ॥ एता [illegible] तिथयो दग्धाख्या मे [illegible] ये न ॥ २६

टीका ॥ मीन के श्रर धन के सूर्य नमै द्वितीया २ वृष के कुंभ के सूर्येन [illegible] चौथ ४

मेष कर्क के सूर्येन मै ६ कं न्या मिथुन के सूर्येन मै श्रष्ट [illegible] वृश्चिक सिंह के

सूर्येन मै दशमी १० ॥ मकर तुल के रवि मे द्वादशी १२ इन संक्रांतिन मै ॥ स्नाना

तिथै दग्धा जानिवी ॥ ये शुभ काम के विषै वर्जित करी है ॥ २७ ॥ शनि दग्धा [illegible] ॥

शी॰टी॰ मूल॥ मासांते दिनमेकं तु तिथ्यंते घटिका द्वयं॥ घटिकात्रयं च भांते च विवा
हे परिवर्जयेत्॥ १८॥ इति॥ टीका॥ मासांत कहिये संक्रांत के अंत का एक दिन
तिथ्यंत कहते है तिथिके अंतकी द्वयं घरी भांत [illegible] हैन नक्षत्र के त्रय दंड ये
विवाह मे वर्जित है॥ १८॥ मूल॥ मासांते म्रियते कंन्या तिथ्यंते [illegible]
नक्षत्रांते भवे धवे विधौ मृत्युर्द्वयो भवेत्॥ १९॥ टीका॥ मा[illegible] भौम
परै तौ भाम रुकौ ऋ कहते है॥ कंन्या [illegible] होई तिथ्यं[illegible]
ई नक्षत्र के अंत मैं विधवा होई॥ नक्षत्रान[illegible] हहोय तो [illegible]
मृत्यु होय॥ १९॥ मूल॥ सूर्ये च सप्तमी सोमे षष्ठ[illegible]ोमे च [illegible]
देवेज्यस्तृतीयाभृगुनंदने॥ २०॥ द्वितीयावर्जनीया [illegible]
का क्रोहि योगोयं विवाहादौ न शस्यते॥ २१॥ टीका॥ [illegible]
सो चक्र मे समझ लीजिये॥ इन वारन को इन तिथन की [illegible]
लिक योग होता है॥ २१॥ इति कुलिक योग॥ अब योग [illegible]
तैयो विडाल स्यालक वर्गोक:॥ कवर्गो सिंह नामा स्यात् [illegible]

समर्मौरि विवारे [illegible] ध [illegible] प्र पात नं संवर्तक
दग्धे २

र्गो कूर्कस्मृता: ॥ २२ ॥ टीका ॥ अवर्गादि अष्टाम [illegible]
ऐसे को कहत है जाके नाम को जो अक्षर पहिलो कुं [illegible]
ये ॥ तिनमें अ इ उ ए ये अक्षर अवर्ग है ॥ सो गरु [illegible]
ङ ये बिलाव वर्ग ॥ च छ ज झ ञ सिंह वर्गो ॥ ट ठ ड ढ ण श्वा [illegible]
सर्पो [illegible] तवर्ग [illegible] गौ पि पवर्गो मूषक स्मृतः ॥ यवो [illegible]
वर्गो मेष निश्चितः ॥ २३ ॥ टीका ॥ त थ द [illegible] पवर्ग [illegible]
वर्ग: ॥ य र ल व मृगा वर्ग ॥ श ष स ह मे [illegible] ॥ मूल ॥ [illegible]
आत्मवर्गे मित्र संज्ञक: ॥ उदासीने [illegible] स्ववर्गो मेदात्रि [illegible]
का ॥ अपने [illegible] र्गों सो पांचई वर्ग तिनसे जानिये चौथे सो शत्रुता [illegible] लो मरी
वर्ग सो उदासीनता है ॥ २४ ॥ इति अष्टकवर्ग ॥ मूल ॥ अश्विनी मृगा रेवत्यो
हस्त पुष्य पुनर्वसू ॥ अनुराधा श्रुति स्वाति कथ्य [illegible] देवता गणाः ॥ २५ ॥
टीका ॥ अश्विनी मृगशिर रेवती हस्त पुष्य पुनर्वसु अनुराधा श्रवण
शतभिषा ये देवतागण कहिये ॥ २५ ॥ मूल ॥ तिस्रः पूर्वा उत्तरा च तिस्रोप्या

वी.टी. द्वे च रोहिणी॥ भरणी च मनुष्याख्यो गणो शोक थितो बुधैः॥२६॥टीका॥
पूर्वा तीनो ३ उत्तरा तीनो ३ आर्द्रा रोहिणी भरणी इन मैं जन्म होय तो म
नुष्यगण जानिये॥२६॥मूल॥ कृत्तिका च मघा श्लेषा विशाखा शतता
रका॥ चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणस्मृतः॥२७॥टीका॥ कृत्तिका
मघा श्लेषा विशाखा शतभिषा चित्रा धनिष्ठा ज्येष्ठा मूल [illegible] राक्षसग
णो है॥२७॥मूल॥ स्वगणे परमा प्रीति [illegible] मध्यमा देव मा[illegible] [illegible]ल्प[illegible] राक्ष
योर्मृत्युः कलहो देव राक्षसे॥२८॥टीका॥ [illegible] स्वगण [illegible]
तौ अधिक प्रीति होय॥ देव मनुष्य होय तौ [illegible] मध्यमप्री[illegible]
ह राक्षस गण सो मृत्यु होइ॥ और देव गण अरु रा[illegible]
२८॥मूल॥ षष्ठे स्त्री पुंस योर्वैरं मृत्युश्चा द्वि मे धुर्वं॥ द्वि[illegible]
मे पंचमे कली॥३०॥टीका॥ स्त्री की रासि तै पुरुष की रा[illegible]
जानिये॥ और स्त्री पुरुष तै आठवे राशि आवै तो मृत्यु [illegible]
रुष होय तौ शुभ है और द्वादसमे वा रहे होय तौ॥ दरिद्र होय [illegible]

पांचवेपहोयतौकलहहोय॥३०॥इतिराशिमेलनं॥[illegible]

रविशः कविमेषोहरिर्धनः॥शूद्रयुग्मं तुलाकुं[illegible]

३१॥टीका॥मीन वृश्चिक कर्क येरासे ब्राह्मणवर्णज[illegible]

त्रीवर्णहै मिथुन तुलाकुंभ येशूद्रवर्णहै कन्यावृष[illegible]

है॥३१॥मूल॥नीतमामुद्वहेत्कन्याब्राह्मणीचविशे[illegible]

ब्राह्मणानहशोयदि॥३२॥विप्रवर्णे[illegible]यथानाशं[illegible]

ध्रुवंभवंतिवैधव्यंप्रुकमरहुछितायदि[illegible]॥टीका॥[illegible]

होयतौ॥अतएवहबहीनवर्णहोयतौ[illegible]निष्ठे[illegible]उत्तम

वर्णकन्यातेविवाहवर्जितहः॥[illegible]ब्राह्मणीविशेष[illegible]हः॥३२॥

अतजोब्राह्मणवर्णकन्यासो शूद्रवर्णवरकोविवाहहोयतौ जोशूद्रकह

कीकन्याहोयतौ सोवीनिश्चयकरविधवाहोय॥३[illegible]॥मूल॥पौष्णादिकंषट्क

५२ मर्णविषयवोमाद्रादिकंचौदशमघामाणं॥पौरंदरा[illegible]नवकुंभवद्युपंचम

गणकोविदग्धा॥३४॥टीका॥रेवतीनक्षत्रआदिदेष्वट्ईनक्षत्रपहलेभाग

शी. टी. काहियै श्रीरस्वाद्वादिदेकै १२ सादशन तत्र मध्य भाग के हे श्रेष्ठ स्वादि देकै
धन तत्र पर भाग काहियै है ॥ ३४ ॥ मूल ॥ एवं भागोपति श्रेष्ठो मध्य भागे तु कन्यका
परभागे च वनिता त्रे द्वयो प्रीतिर्भवे होयसी ॥ ३५ ॥ टीका ॥ एवं भागोपति होई श्रीरम
ध्य भागी स्त्री होइ तौ पति श्रेष्ठ कहियै ॥ जो मध्य भागी स्त्री श्रीर पर भागी पुरुष
होय तौ स्त्री श्रेष्ठ कहियै ॥ श्रीर जो ... पदौ नौ पर भागी हो ... तौ ... य तमै
अधिक प्रीति होय ॥ ३५ ॥ मूल ॥ सिंहा ... सर्वे द्वि ... लक्षरा ॥
मत्स्या जल चरा लेषां मयस्याने मरी एपाः ॥ ... टीका ॥ द्वि ... म
मव हैं ॥ श्रीर जीव पर रेख एक सिंह नाही हः ॥ द्वि ... श्री ...
लक्ष्य के सब बस है ॥ श्रीर जल के जीव जो हः ते मनुष्य के
भक्ष्ये विद्ध सौं आली है ॥ ३७ ॥ मूल ॥ मकरस्य पूर्व भागो मे ...
लक्ष्मदाः कीट संज्ञा कर्क सर्प श्च वृश्चिकः ॥ ३८ ॥ तुला ...
धनषो च्यते ॥ द्विपदे ते स्वगाईं तकुंभ मीनौ जला श्रिलै ...
शिको पाहिला आधा भाग उतराधा है के तीनि चरण क ...

एपर्यंतको चंद्रमाः॥ अथमेष अथसिंह॥ अथ [illegible] पीध [illegible]
तुष्पद चौपाएकी संज्ञा जानिये॥ औ [illegible] राशीकी
संज्ञा है॥ ३४॥ औ रतुला मिथुन कंन्या॥ अथ आधी धन [illegible]
र जानिये॥ कुंभमीनजलचर जानिये॥ ३५॥ इति राशिचक्र

अश्वि	रे.	पु.	रो.	श्ला	पूफा	स्वा	जे.	चि.	उफा	शा.	अभि	पुन	उफा	यो
ध.	मं.	कृ.	म.	म.	उफा	ह.	अनु.	वि.	श्र	पूषा	जि	प्रो	उभा	नि
०	०	०	०	०	मू.	०	०	०	०	०	तू	०	[illegible]	
घोडा	गज	मेढी	नाग	स्वान	मूस	मेसा	हिरन	व्याघ्र	वानर	सिंह	[illegible]	बिलाव	गऊ	[illegible]

नीवा [illegible]
रत्ते [illegible]
कोक [illegible]
म्याः॥ [illegible] कुलम
पिलानमूषकः फाल्गुनीमघा॥ [illegible] जोरोहिनि रश्लेषा [illegible] तरावंय
म॥ महिषौस्वातिहस्तौ च मतो ज्येष्ठानुराधिका॥ व्याघ्रौ चित्राविशाखे च
स्त्वाषाढौ च मर्कटौ॥ ४२॥ शतभाद्रपदासिंहौ न कुला [illegible] अभिजित स्मृतः॥
योनयः कीर्यता [illegible] वैरमैत्री विचार्यतां॥ ४३॥ [illegible]॥ इनचारोंश्लोकोंका
का स्वयंयोनिचक्रमें सम फलैना॥ चौदहयोनि [illegible] हनके [illegible] के॥ श्री

श्री॰टी॰ पने अपनेकोष्टकलहहोइ॥ इतियोनिविचारनिर्णय॥ अथयोनिवैरं
मल॥ गोव्याघ्रगजसिंहमृश्वमाहिषंवैरं चवमर्कमार्मवैरंवानरमेष
कंचमहलनहिंडोलोवैर॥ लोकानांव्यवहारतोनि[illegible]रंपरस्पो
रपमरस्योपरपिसदावर्ज्यं शुभमस्यार्थेसि:॥ ४४॥ टीका॥ गाईनेडियासो
वैर हाथीसिंहकोवैर नवलसर्पकोवैर वानरमेढाकोवैर [illegible]नावम्
षकसोवैर ऐसेवैरभावत्यागिकै [illegible]योनिविचा[illegible]लुवैक॥
स्त्रीपुरुष॥ औरस्वामीसेवकसो॥ औरगु[illegible]कलोकि
लनिर्वाहहेलमेंजल्लुरहै॥ ४४॥ इतियोनिश्रीति[illegible]
ओष्वसंख्याहानवपंचम॥ वरस्यपंचमेकंन्याकं[illegible]मायं
तत्रिकोणकेयाहंपुत्रपौत्रसुखावहं॥ षडाष्टकेमं
विचारयेत॥ ४६॥ टीका॥ जोपुरुषकीराशितेकं[illegible]
५।९ पतोतिसवरकेपिताकामृत्युहोई औरजो
मा॰१ कीराशि५ पंचईहोयतौ ताकीमाताकीमृत्युहोय

श्वेतां[illegible]
न्पदापव
न्वाजय
दिदं २

राशिते ५ पंचईराशिकन्याकीहोय॥ कंन्याकीराशिते॥ [illegible]

यतोयह त्रिकोणशुभहै॥ पुत्रपौत्रकेशुभहै हवेकी [illegible]

आठवेहोयतोमृत्युहोय तातेयत्नकरवि चाहियै॥ ४६ [illegible]

ल॥ वरस्यभास्करबलंकंन्यायांचगुरोर्बलं॥ दंपत्यो [illegible]

नान्यथाभवेत्॥ ४७॥ टीका॥ वरकोसूर्यबल चाहियै [illegible]

तिकाबलचाहियै॥ औरवरकंन्याकोचंद्रमाकाबल [illegible]

अष्टमेचचलेथैवद्वादशे [illegible] कारे॥ [illegible] तोवरोम [illegible]

शयः॥ ४८॥ टीका॥ जोवरकोसूर्य [illegible] होयतो [illegible]

होय यामेंसंशयनाही॥ मूल॥ जन्मन्यथांद्वतीयेवापंचमे [illegible] मेपिवा

नवमेचदिवानाथेपूजयापाणिपीडनं॥ ४९॥ एकादशेतृतीयेवाषष्ठे

वादशमेपिवा॥ वरस्यशुभदोनित्यंविवाहेदिननायकः॥ ५०॥ [illegible]

जोवरकीराशितेसूर्य॥ १॥२॥५॥ [illegible]॥ ९ होयतोयोपरिहारकरवाकरसौ॥ सूर्य

कीपूजादानजपादिक करकैविवाहशुभहै॥ ५१॥ औरजो॥ ११॥३॥६

२०॥ रवि होय तौ विवाह शुभकारी है कल्याणको दाता है॥५०॥ इति रवि
बलं॥मूल॥ अष्टमे वा दशे वापि चतुर्थे वा बृहस्पतौ॥ प्रजात कन्यका ते
कौ विवाहे प्राणनाशक॥५१॥ मूल॥ षष्ठे जन्मनि [illegible] सप्तलाये दशमे
पि वा॥ भरि प्रज्ञा प्रजित स्या[illegible] [illegible] शुभकारका॥५२॥टीका॥ जो
कन्याको बृहस्पति ॥८॥४॥१०॥ वां प्रजादान नहि देकोनि [illegible] कीजिये
तौ शुभ है॥५३॥मूल॥ एकादशो [illegible] पंचमे [illegible] नवमे
च प्रयाचार्ये कन्यायाः शुभकारक॥५४॥[illegible]का॥ जो [illegible]

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	[illegible]
लक्ष्मीप्राप्ति	मनसंतोष	धनसंपति	कलहनाश	ज्ञानवृद्धि	संपत्ति	राजसन्मान	शत्रुभय	धर्मलाभ	मनवांछा	सर्वलाभ	हानिहोय	[illegible]

षोवरो है [illegible]॥ दशवर्षे भवेत्कन्या ततऊर्द्धं रजस्वल
वर्षे मे गोरी की अवस्था जानिये॥ श्रीर नव वर्षे मे रोहि[illegible]

रो

सं राजा नियै॥ ताकै उपरांत रज बलाक हते है॥ ५ [illegible]

वैलं ॥ यं रोहिणी माकरम्य च॥ कं म्या चंद्रबलं दे [illegible]

५५॥ टीका॥ गोरी को ब्रहस्पति का बल देषै रोहिण [illegible]

यै॥ श्री रकं न्याको चंद्रबल मत्ये हः॥ ५५॥ मूल॥ मू [illegible]

त्मनं त्नौ षं द्वितीयके॥ त्रतीये धनसंपति चव श्रीव [illegible]

हानव छिद्र षष्टे संपति रत्तंम॥ सप्तमे राजसन्मा [illegible] धष [illegible]

५७॥ नवमे धर्मे लाभं च दशमे मानसं [illegible]॥ एका [illegible]

हानिमेव च॥ ५८॥ टीका॥ श्रवकं [illegible] श्री रवर व [illegible] लकहै

है ताको इस चक्र मै समझ लीजियै॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ [illegible] मतेन वि

शेषणं॥ मूल॥ गुरु विंदं केला गौरा [illegible] विंदु बलशील [illegible]॥ र [illegible] विंदु

बलजाक न्या श्री टाल न बला [illegible] ता:॥ ५८॥ टीका॥ गोरा जो है ताको ब्र

हस्पति चंद्रमा ए तीन ह्को बल विचारियै तो शुभ है॥ ५९॥ मूल॥ जी

वौजी वायदाता चंद्र व्य राता च चंद्रमाः॥ तेजदाता भवेत्सूर्यो [illegible] मित्र दाता

र्क ४

८

गी॰टी॰ महीसुतः॥ ६४॥ जीवहीन मृतो कन्या सूर्यहीन मृतो वरः॥ चंद्रहीनगता लक्ष्मी स्थानहानिकुजं विना॥ ६४॥ टीका॥ वृहस्पतिजी वृधी रक्षा के दाताहै चंद्रमाधनके दाताहै सूर्यतेजके दाताहै मंगलभूमिके दाताहै ६० वृहस्पतिहीनहोयतौकन्याकी मृत्युहोय॥ जो सूर्यहीनहोयतौ वर की मृत्युहोय चंद्रमाहीनहोयतौलक्ष्मीनाशहोय मंगल हीनहोय तौ स्थानहानिकरै॥ ६४॥ मूल॥ [illegible] नागलोके [illegible] ती दंदेत॥ कन्यादद्यान्मृत्युलोके [illegible] जबला [illegible] री दानकरैतौ पाताललोकके सुखको प्राप्तहोय॥ [illegible] वैकुंठवासपावे जोकन्याकरैतौ मृत्युलोकके सुखको [illegible]
मूल॥ संप्राप्तेद्वादशेवर्षेकन्यायोनविवाहिता॥ [illegible] मूल॥ तस्याःपिवतिशोणितं ६४॥ टीका॥ जोबारहेवर्ष [illegible] पिता [illegible] तौ महीनामहीनाप्रतिजोरजस्वलाहोयउसको [illegible] ष्टमाताकोपानकरकनाहोताहै॥ ६४॥ मूल॥ माताचैवपिता [illegible] कौ

शुद्धिर्नजायते॥ ५२ जा मि: सकुनेवोपिनस्याल्लग्नं श्चतिर्द्वे ॥ [illegible] गौरी

का॥ जो न्यार है बारह वर्षकी कंन्या होयतो वृहस्प [illegible]

लग्नविचारकै पूजादानकरैकै विवाहकीजे॥ ५३ ॥ [illegible] बल ॥

ता चैव जेष्ठभ्राता तथैव च॥ त्रयस्त्र नरकं यांति दृष्ट्वा [illegible]

५४॥ टीका॥ जो रजस्वला कन्याको देषै मातापिता [illegible] ॥ [illegible]

नरकके अधिकारी होते है॥ ५५॥ अथ नाडी विचार [illegible]

तके वापि अंतमध्यानि मानिच॥ आश्विन्या [illegible] लि

रेवत॥ ५६॥ ऊर्ध्वंगावेदरेखाश्च [illegible] लिखे

आद्यंनाडीचक्रं वदेद्बुधः॥ [illegible] नाडीदोषल्ल विप्राणां [illegible] त्रि

यः॥ गणदोषस्त्वै शै बुधयो [illegible] पादजैः॥ ५८॥ टीका॥ आदिमध्यं

त अंतमध्य आदि याप्रकार अश्विनीतै रेवतीपर्यंत गनिये॥ ५९॥ चारवे

षोवडी और दशरेषोतिरछी याहीप्रकार सताईसकोठाको नाडीचक्र

पंडितजनकहते है॥ ६०॥ नाडीको विचारवालगणको चाहिये सत्रीगण को

९

शी॰टी॰ वैश्यको योनि शूद्रकोवि वाम विशेषकार कैचाहिये ॥ ९८ ॥ मूल ॥ एकनाडी

चर [illegible]नक्षत्रे दंपत्योर्मरणं ध्रुवं ॥ सेवायां च भवेद्धानि विवाहे चाशुभं भवेत् ॥
९९ ॥ टीका ॥ जो वर कन्या एक नाडी के नक्षत्र विषै दोनो को जन्म होय तो
दोनो की मृत्यु होय ॥ और एक नाडी के वेधमे सेवा चाकरी करै तो हानि हो
य ॥ ९९ ॥ मूल ॥ आदिनाडी वरं हंति मध्यनाडी च कन्यका ॥ अंतनाडी द्वयो
मृत्युः नाडीदोषस्य जेहु धैः ॥ १०० ॥

अ	आ	पु	उ	ह	ज्ये	[illegible]	श	[illegible]	आदि
भ	मृ	पु	पू	चि	स्व	[illegible]	ध	[illegible]	मध्य
कृ	रो	श्लो	म	स्वा	वि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	अंत

टीका ॥ जो आदि नाडी का वेध हो
यतो वरको आदि ९ कहै ॥ और म
ध्यको वेद होयतो कन्याको दूषि
त है ॥ अंत नाडी का वेध लगै तो दोनो की मृत्यु होय ॥ [illegible] ॥ मूल ॥ [illegible]
नक्षत्र जातानां नाडीदोषो न गण्यते ॥ अन्य दंपति वेधे [illegible] पिन
दा ॥ १ ॥ टीका ॥ जो वर कन्या एक ही नक्षत्र को जन्म [illegible] ॥ टीका ॥ [illegible]
ष मानिये ॥ और ही और नक्षत्र जन्म होय हो तो विवाह सर्व [illegible] चदेतो

७२ ॥ इति नाडीनिर्णय ॥ मूलं ॥ पंचोर्ध्वरेखाः परिलेखयेद्बुरेखाः पंचतिर्य[illegible] ॥ गौ[illegible]

द्वयोश्चकोणयोर्द्वेद्वे चक्रं पंचशलाककं ॥ ७२ ॥ [illegible]

मादन्यानि भानिव ॥ ग्रहास्ते पु पदांतकायेचयत्र [illegible] वेल ॥

मानिकटेयाचगता भवति प्राणिमा ॥ तत्र तत्र स्थितस्य [illegible] ॥ पूर्व[illegible]

कोत्तमेः ॥ ७४ ॥ टीका ॥ पांचरेखा ऊर्ध्व कीजे आर पांच रेखा [illegible] ॥ द्वय द

यरेखा कोनन मैं धरे तिसको पंचसलाका चक्र कहते [illegible] दे

कै कृत्तिकाआदि नक्षत्र धरिये क्रम एवं सों ॥ ७४ ॥ जो

लग्न के निकट पूनो होय ॥ तिस नक्षत्र पर चंद्रमा ध

रिये ॥ इस प्रकार उत्तम मार्ग एक जो पंडित है सो कहते

हैः ॥ ७४ ॥ मूलं ॥ लत्तापातो युतिर्वेधो यामित्रं बुध

पंचकं ॥ एकार्गलोपग्रहौ च क्रांतिसाम्यं निगद्यते ॥

७५ ॥ दग्धा तिथिश्चवितिथ्या दश दोषा महाबला ॥ ए

एतान् दोषान्परित्यज्य लग्नं संशोधयेद्बुधः ॥ ७६ ॥

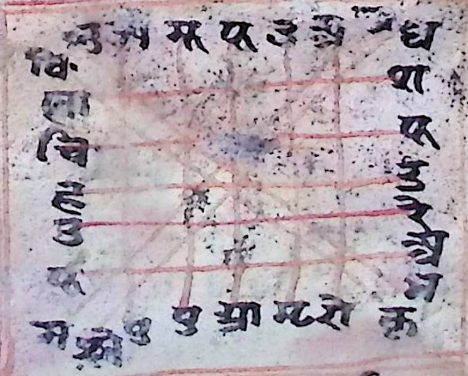

अथ पंचशलाका चक्रं

शी॰ टी॰ टीका॥ शुन दोषक हते है लता१ पात२ युति३ वेध४ यामित्र५ युधर्पं चक ६
एकार्गल ७ उपग्रह ८ क्रांतिसाम्य ९ दग्धातिथि १० ये दस दोष महाबलवान
है॥ इनसे बचायकै लगन सोधिये॥ ७५॥ मूल॥ न दग्धं [illegible] शंभानुः तृतीयं ल
तया कुजः॥ षष्ठं जीवोऽष्टमं मंदो हंति द्विगुणतः सदा ७६ नामेन सप्तमं चा
श्रीनवमं सिंहिकासुतः॥ हंति मेषं [illegible] कोणा विशंत [illegible] ७७ [illegible]
का॥ जौन नक्षत्र की लगन होय तेहि नक्षत्र तें दो ह्हे गाने [illegible] मेम गुरु शनि
है वा ग्रह या प्रकार लात मारते है और ३ मीम ३ ग्र [illegible] लनि [illegible]
है॥ ७६॥ और वाम भाग होयकै सातवें नक्षत्र को बुध लात [illegible] और
द्रू ९ पांचवें को शुक्र ५ और बाईस नक्षत्र कौ २२ चंद्रमा [illegible]
मूल॥ रविलता हरेद्वित्तं कु जस्य कुलतेमृति [illegible] वृहस्पते [illegible] मू [illegible]
कुलक्षय॥ ७७॥ बुधस्य कुरुते शासलताया हो विनाश [illegible] लिता
नित्यं त्रासदा सकला निधे॥ ७८॥ टीका॥ सूर्य की लात [illegible] ५
म की लात लगै तौ मृत्यु करै॥ वृहस्पति की लात लगै [illegible] प [illegible]

शनिकी लात लगै तौ कुलकौ दायक है । राहुकी लात तैं [illegible] नाश
लात दुखदायक है । चंद्रमाकी लात नाशदायक है । [illegible]
है । ७८ ॥ इति लत्तादोषः ॥ अथ मूलं ॥ सूर्ययुक्ताच्चंद्रभादेव [illegible] ३ । [illegible]
घा श्लेषा चित्रा च समानुराधा च रेवती ॥ ७९ ॥ श्रवणोपि [illegible] ॥ [illegible]
मिन्हले । अश्विनी मघ धिक कल्याण एव लग्नभावामें [illegible] है । दयक
त्रके सूर्य हो है उसी नक्षत्रमें के स्थानपर है तौ पातदोष [illegible] है
षा चित्रा ऽनुराधा रेवती श्रवण इन नक्षत्र इनके सूर्यके संयोग [illegible]
तिके पात कहते है । प्रथम सूर्यके नक्षत्र तैं गिनि रेखा खीचिये । जे नक्षत्र
पातक है है ते छोडे करिये । फिर अश्विनी आदि दैके फेर केन नक्षत्र लो गनि
ये ॥ ८० ॥ जो चोडे नक्षत्र मै तिन मै पर्यो होय तौ पात दोष लगै ॥ इति पातचक्र
मूलं ॥ पावकः पवमानश्च विकारः कलहोपरः । मृत्युर्दायश्च विज्ञेयो पात
षट्कं प्रकीर्तिताः ॥ ८१ ॥ टीका ॥ अथ छह भांतिके पात नाम लक्षण ॥ पावक १ प
वमान २ विकार ३ कलह ४ मृत्यु ५ क्षय ६ ये छह हैं पात अपने फल करते है ॥

शी॰२ २१ ॥ मूल ॥ पातेन पतितो ब्रह्मा पातेन पतितो हरिः ॥ पातेन पतितः
शंभुः तस्मात्पातं विवर्जयेत् ॥ २२ ॥ टीका ॥ पातने ब्रह्मा को पतन करी
और विष्णु को पतन करौ ॥ तातें विवाहमें पातदोष विशेष करकै वर्जे
है ॥ २२ ॥ मूल ॥ चित्रांगते पातः विचित्र देशे मेषे मघा मालवके निषिद्धः
पौष्णस्मृति चौतर देशजातः सर्वत्र वर्ज्यो च भुजंग पातः ॥ २३ ॥ टीका ॥
चित्रा नक्षत्र को पात विचित्र देशमें वर्जित है ॥ मूल मघा को पात मा
लव देशमें निषिद्ध है ॥ श्लेषा का पात सर्वत्र निषिद्ध [illegible] ॥ म [illegible]
सो मालव देशमें वर्जित है ॥ औरे रेवती जो है [illegible] र [illegible] यः
ला उत्तरमें निषिद्ध है ॥ इति पात निर्णय ॥ मूल ॥ पक्षग्रहे [illegible] हीय [illegible] की
त्रयदा भवेत् ॥ युति दोष लक्षत्र यो विना [illegible] नौ पर [illegible]
जो हीन नक्षत्र का चंद्रमा होय ॥ और उस ही नक्षत्र की [illegible]
तो तिसको युति दोष कहते हैं ॥ अकेले [illegible] ना होय [illegible]
शुभ ॥ २४ ॥ मूल ॥ रवि नाश युतौ हानि सौमे च [illegible]

मूलनाशं च राहुकेतू न निष्ठ्यौ ॥ २५ ॥ टीका ॥ जो मू[illegible] [illegible]
यतो हानि करै ॥ जौ म होय तो मृत्यु करै और राहुके[illegible] [illegible]
लनाश करै ॥ २५ ॥ मूल ॥ वर्गोत्तमगाते चंद्रे सोच्चे वा मि[illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible]होय तो
स्थूल भवेदंपसोऽप्रयसामदा ॥ २६ ॥ टीका ॥ जो चंद्रमा[illegible] [illegible] ॥ [illegible]
वर्गी एसै होय तो अथवा उच्च का होय वा मित्र रा[illegible] [illegible]धस्त्री ॥ [illegible]
बकानाश करै रवी पुरुषदेनी सुखी रहै ॥ इति यद्[illegible] [illegible] ॥
रेखा स्थितिर्वैधो द्विननादि भियहै ॥ [illegible] [illegible]
पो ९ दाचन: ॥ २७ ॥ टीका ॥ जो नक्षत्र की लान हो [illegible] औरता [illegible] [illegible] दरवोसे
मर्यै ज्ञादिक कोई यह होय तो [illegible] वेध कहिये ॥ तो [illegible] [illegible] पीछे ए
क महीना के ॥ अंत मै मृत्यु करै ॥ २८ ॥ मूल ॥ अश्विनी रेवौ फाल्गु एषा म
घा ची चाल सा धयो: ॥ अभिजि [illegible] पिरो हिएपा कृतिका च विशाखया ॥ २९
[illegible] [illegible] [illegible] दत्त पाद्रया ॥ पुनर्वसु [illegible] मूलेन [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ धनिष्ठा यां तथा [illegible] [illegible] ॥ रेवतुतर

शी.बो. फाल्गुन्येषा हस्तेनोत्तरभाद्रपात् ॥ ५० ॥ वामाशलाका [illegible] चित्रायां पूर्वभा
द्रपात् ॥ विद्धा मेता नि[illegible]जो नि विवाहे मान्कोविदैः ॥ ५१ ॥ टीका ॥ अश्विनी
से श्रो पूर्वाफाल्गुनी नामे एक रेखा है ऐसे जो दोनों दोर एक रेखा होय तो वेध
कहिये ॥ ऐसे ही अठाईस नक्षत्रन को जानिये येवे वेध पंचशलाका चक्र में.
समझलेना ॥ २२ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ मूल ॥ रविर्वेधे चवैधव्यं कुजवेधे कुलक्षयम् ॥
बुधवेधे भवेद्वंध्या प्रव्रज्या गुरुवेधनः ॥ ५२ ॥ [illegible]पुत्रो भृगु[illegible]धे च शौरे चंद्र
चंद्रेः विनाः ॥ परपुरुषरता गृहे होवे. तो. [illegible] ॥ ५३ ॥ टीका ॥ जो
सूर्य को वेध लगे तो विधवा होई ॥ मंगल को वेध लगै तो [illegible] य.
बुध की लात लगे तो वंध्या होय ॥ गुरु वेध लगे तो [illegible] होय ॥ [illegible]क्र की
लगे पुत्रनाश होय ॥ शनि चंद्रमा की लगै तो दुखी होय ॥ [illegible] तो पर
स्वगामिनी होई ॥ ५३ ॥ इति वेधफलम् ॥ मूल ॥ शनि[illegible]
जन्मक्षं संस्थिताः ॥ विवाहिता च या कन्या मासार्कमादि[illegible]
का ॥ शनि राहु भौम सूर्य इन मैं कोऊ ग्रह विवाहसमै [illegible]

तोकं न्याविधवा होय ॥ ५४ ॥ मूल ॥ चंद्रदेशं चनदात्रंयाम्पि [illegible] मल
शुभयुक्तंत दिष्ठेतिपापयुक्तं चवर्जयेत ॥ ५५ ॥ टीका ॥ [illegible] दात्र
चौरहैनदात्रपरकोऊयह होयतोयामित्रकहियै ॥ जो [illegible] ग्रह होयतो
शुभहै ५५ ॥ मूल ॥ चंद्रचांद्रीमग्रजीवोयामित्रेशुभकारकाः ॥ [illegible]
नर्मदायामित्रेनशुभप्रदा ॥ ५६ ॥ टीका ॥ जोचंद्रमा [illegible] बुधशुक्र ॥ [illegible]
ति शुक्रशुक्र जेग्रहलग्नकेचौरहैनदात्रपर [illegible] होयतोशुभकारी [illegible]
और जोसूर्यशनिराहुकेतु होयतो ॥ [illegible] यतो शुभ है ॥
५६ ॥ मूल ॥ चंद्राद्वालग्नतोवापि [illegible] शुभे ॥ [illegible] स्थिता [illegible]
व्याधिवैधव्यकारकाः ॥ ५७ ॥ टीका ॥ चंद्रमातेवालग्नकेमदात्रते सातवेके
ऊपरह होयतो व्याधिकरै विधवा करै ॥ ५७ ॥ इतियामित्रदोषः ॥ मूल ॥ धा
र्योतिथिर्मास ॥ २५ ॥ १२ ॥ २० ॥ ८ ॥ ४ ॥ दशाष्टवेदासंक्रांतितोयातिदिनैर्ध्रुवो
ज्यागृहेविंगलायादिपंचकस्यादोगलत्याग्निर्न [illegible] मत्तु ॥ ५८ ॥ टीका ॥
ध्रुवपंचककहतेहै तिथिकहियै २५ मासकहियै १२ [illegible] २० [illegible] ८ वेद ४

श्री·टी· संक्रांतिके जो दिन गये होय ॥ तिनको युक्त करिके ९ नवको भाग दीजिये जो
पांच शेष बचै तो पंचक जानिये ऐसे ही पांचो अंक विचारिये रोगपंचक है १५
अग्निपंचक बारहमे १२ राजपंचक दशमे १० चोरपंचक ८मे मृत्युपंचक
४मे ॥ ९८ ॥ मूल ॥ रवावर्के वारे [illegible] रोगपंचके सोम्ये च राजपंचक्षितिजोऽग्निदो
[illegible] षः ॥ शौरी च मृत्यु सुरमंत्रे चौरो विना ह्यकाले परिवर्जनीया ॥ ९९ ॥ टीका ॥ र
विवारको जो रोगपंचक लागै तो सोमको राजपंचक लागै [illegible] मंगलको अग्नि
क शनिश्चरको मृत्युपंचक गुरुवारको चोरपंचक [illegible] लेते है ॥
९९ ॥ मूल ॥ रोगं चौरं त्यजेद्रात्रौ दिवाराज्याग्निपंचकं ॥ [illegible]
मन्यकाले न निंदिता: ॥ १०० ॥ टीका ॥ रोगपंचक चोर ॥ [illegible] का है
मृत्यु मे है ॥ १०० ॥ और राज्य अग्निपंचक दिनमें नहीं लेते है [illegible]
त्युपंचकानिंदित है ॥ और समे मे न ही वर्जित है ॥ [illegible] ॥
मूल ॥ सूर्यभात्सं च मे विद्युत्सूतांकं शूल मष्टमे ॥ चतुर्दशे [illegible]
दशे तथा ॥ १ ॥ ऊनविंशे भवेदुल्का निर्घातश्चैकविंशतौ ॥ [illegible]

पंचविंशतिवज्रकः॥ २॥ टीका॥ सर्यकन उदतें पची [illegible]
ईयह होयतौ विंदु युदोपलगे ओर ८ आठवें फल [illegible]
१४ म मपातलगे अठारहे पर १८ केतुकादोषलगे [illegible]
सपरनिर्घात तेईसपर कंप पचीसपर वज्रदोषलगै [illegible] शील
शकु री विद्युत्पत फलो विनाशक॥ शनैःपातो वंशाघा [illegible] ॥ ३ [illegible]
कः॥ ३॥ द्रुमनाशकरी चोल्कानिर्घातोवधुना [illegible]
वज्रे ही विभिचारिणी॥ ४॥ टीका॥ विलदोषके [illegible] निर्घा
त भ्राताको घातकरे कंपनिसहीकपावे॥ वज्रदोषलगैतौ स्त्री विभचारि
णी दोष॥ ४॥ मूल॥ योगोके विष [illegible] देयो शांतिं शांतिसमे संध्येकृत्वा
शमीपूर्वेमंकमंमर्ध्रिदीयते॥ ५॥ टीका॥ जोयोगके [illegible] विषमहोयतौ ए
कजोरिये॥ और समसंककहोयतौ अठाईस जोरिये तो आधेकारिये ओषि
मोतेस्वेके जो [illegible] होयसो मर्ध्रिपरलिखिये॥ १५॥ मूल॥ विष्कुंभेचाश्वि
नीदेयाश्रीतौ स्वातिर्निगद्यते॥ सौभाग्यचविशा [illegible]

शी·टी· मुल:॥९·६॥ शीमनेकृतिकाहे यम पून राधा चांडके॥ रोहिणी च मृकमो·
त्योयतौ जेष्ठ प्रकीर्तिता॥ ७॥ गंडेमूलेमघो मूलेव श्रौ चाहुरे निगद्यते॥
पूर्वोषाढा प्रवेष्टो का व्याघाते च पुनर्वसु॥ ८॥ हर्षणे चोत्तराषाढा वज्रेपु
ष्यः प्रकीर्तिता:॥ त्रभिजिच्च त [illegible] श्लेषा चव्यतिपातके॥ ९॥ वरिया
न मृगतिर्दैयापरिधेच मघा तथा॥ शिवेधनिष्ठा [illegible] सिद्धौ पूर्वो च फा
ल्गुनी॥ १०॥ साध्ये शत भिषा देया [illegible] चोत्त [illegible]॥ एर्वो भाद्रपद
शुक्ले हस्तो ब्रह्म प्रकीर्तिता:॥ ११॥ उत्तरा भाद्रपद [illegible] चित्रा देय [illegible]·
घृतौ॥ स ये चंद्रमसौ योगे भवेदेकार्गलं तदा॥ १२॥ [illegible]
को [illegible] मिस्मृतं॥ यो गांके आद्यन [illegible] त्रेयमेकार्गल [illegible] का है
का॥ एकार्गल चक्र कीरेखा ले ताभि मे [illegible] कार्नेह [illegible]
वै॥ योगांके अंक श्रोर जे न नक्षत्र के है है ते [illegible]
यतौ एकार्गलदोष कहिये विष्कुंभ योग को श्रोर [illegible]
एसे हाक मसो चक्र लिखिये यो टीका इतनसा तो [illegible]

१०८॥१०९॥ ११०॥१११॥११२॥११३॥ इति त्रिर्गलानिर्णयः॥ मूलं॥ [illegible]

गतासो मघो मीनलि विबुधैः॥ सूर्यचंद्रमसो हि येषां क्रांति [illegible] २॥ [illegible]

मीनकन्यकयोर्युक्तो मेषसिंहेन संगमः॥ मकरे [illegible]

तेनच॥ २३॥ कर्केन वृश्चिकोवेधोवेधस्तुलकुंभयोः [illegible] पीत [illegible]

हानजीवतिकदाचनः॥ २४॥ टीका॥ तीन रेखाउरेसो [illegible]

के मघाकी रेखापर मीनकन्याति रछीपर [illegible]

के क्रमसो सबलग्ननको घरिकै चक्र बनाइये [illegible] रेखापर [illegible]

यें एहेलो क्रांतिसाम्य दोषकहिये॥ [illegible] जानिये॥ ऐसे

ही सब राशिनसो वेधचक्रमें [illegible] जिये तुलकुंभसो कर्केर वृश्चिकसो

मिथुन धनसो मकर वृषसो [illegible] सो॥ इन राशिनसो परस्पर समकक

रसाम्य दोषजिये॥ विवाहादिक [illegible] शुभकार्जवर्जेहै॥ २३॥ मूलं॥ क्रांति

साम्यकृतो दोषो हायादि पाणिग्रहो भवेत्॥ कन्याबे धव तांयाति ईशस्य द

हिमायादि॥ २५॥ टीका॥ जो क्रांतिसाम्यमें विवाह होय तो कन्या विधवा

होजाय॥ ईशवकहियेमत्स्यादेव तिन की पत्नी होयतौहं॥ १५॥ इतिक्रांतिसाम्य
मूल॥ मर्मवेधकंटकश्च शल्यं छिद्रं चलर्षकं॥ गते ऊध चलकं च परिस्याज्यंप्र
यत्नतः॥ १८॥ टीका॥ अवपांच दोषकहतेहै॥ मर्मवेधः १ कंटकः २ शल्यं ३
छिद्र ४ इन दोषन को यत्न करि त्यागिये॥ यह प्रणकजनकी आज्ञा है॥ १८
मूल॥ लग्नेपापे मर्मवेधः कंटकेनव पंचमे॥ चतुर्थे दशमे शल्यं छिद्रं न
वति सप्तमे॥ १९॥ टीका॥ लग्न को पापग्रह होयतो मर्मवेधक हिये औ
र चौथे ४ दशमे १० पापग्रह होयतो शल्य दोषक [illegible]॥ औ [illegible]
नमे पापग्रह होयतो छिद्र दोष जाननानवम [illegible]
यतो कंटक दोषक हिये॥ मूल॥ मरणं मर्मवेधस्या [illegible] का [illegible]
ये॥ शल्यं चन्द्र पते भीतिः पुत्रनाशश्च छिद्रके॥ २० [illegible] कारं [illegible]
मेंविवाह होयतो मृत्यु जानो॥ औरकंटक मे हो [illegible]
औरशल्य दोषलगैतो राजाका भय होय॥ जो [illegible]
नाशकरै॥ २०॥ इतिदोषः॥ मूल॥ जन्ममासेजन [illegible] वन

पुत्र ॥ ज्येष्ठेन ज्येष्ठगर्भस्य विवाहं कारयेत्क्वचित् ॥ २० [illegible]
मस्य राजन्मकान तत्र जन्मका दिन सो प्रथम मा [illegible]
वाह विषे वर्जित करे है ॥ २१ ॥ परं न जो मे के विषे [illegible]
कमतांतरे तेषां धाम हे ॥ २२ ॥ मूल ॥ न कन्या वरयो [illegible] शील
उनं ॥ द्वयोरेकतरे ज्येष्ठे न ज्येष्ठे दोषमावहेत् ॥ २२ ॥ टी [illegible]
तो प्रथम गर्भ होय तो ज्येष्ठमास मे विवाह दिशेषक [illegible]
एक ज्येष्ठा होय एक न हि होय ॥ तो ज्येष्ठ मे महीने मे [illegible] ह कछु दोष [illegible]
है ॥ २२ ॥ मूल ॥ सिंहेज्यगते कार्यं न विवाहं कदाचन ॥ मेषस्थिते द्विजानां
चासिंहे ज्येष्ठ शुभप्रदा: ॥ २३ ॥ टीका ॥ सिंह की बृहस्पति मे विवाह न हि क
रना केवल मेष के सूर्य मे [illegible] तो शुभफलदायक है ॥ २३ ॥ मूल ॥ रवौ
सार्द्धत्रयो भागा: पंच चंद्रे गुरौ त्रयः [illegible] शुक्रेंदु [illegible] पादि प्रक्षीणा वरदायिनी
२४ ॥ प्रत्येकं सार्द्ध भागाश्च मंदमंगलराहुषु ॥ ग्रहा बलयुता विप्रा त्र्यर्क्षन्ति
न दुर्वला ॥ २५ ॥ टीका ॥ सूर्य के ३ ॥ भाग ॥ चंद्र के पांच भाग ५ ॥ गुरु के ३ ॥ [illegible]

शी·टी· के ४ ॥ बुधके ४ ॥ ये इन भावनके विषे शुभ है ॥ २६ ॥ औ र शनि मंगल राहुके
ल इन भावनको छोडके ३ । ६ । ११ । इन विषे भाग पर्वेक ॥ जो लो बलि होय है तो लो शु
भ है जब क्षीण होय तब निर्मल है ॥ २७ ॥ इति [illegible] कफल ॥ मत्त ॥ केंद्रे
सप्तमहानिचाष्टत्रिकोणे शुभाः शुभं ॥ धने शुभप्रदाः केंद्रे पापाः षष्ठे च शोभने
रंध्रे ॥ तृतीयैकादशे सर्वे सौम्याः पापाः शुभप्रदाः ॥ ते सर्वे सप्तमस्थाने [illegible] दा
रकनाशकाः ॥ २८ ॥ टीका ॥ केंद्रस्थान [illegible] हि पहिले [illegible] नाम ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ १ ॥ लग्न च
तुर्थ सप्तम दशम ॥ जो इन स्थानन विषे शुभग्रह होय तो [illegible] है ॥ [illegible] सा
तवे स्थान में शुभ है शुभग्रह कहा के बुध शुक्र बृहस्पति [illegible]
कृष्णपक्षकी पंचमी पर्यंत का चंद्र का श्रेष्ठ बली होता है [illegible] का [illegible]
र ४ शुभग्रह है औ र सूर्य राहु शुक्लाष्टमी वाले १० प [illegible] का चंद्र [illegible]
यह जानियो ॥ औ मंगल शनि के तके कृष्णपक्ष मीते ३० ला [illegible]
लग्नते २ स्थान चंद्र भा शुभग्रहः पापग्रह लग्नते ४ [illegible]
औ र ३ ॥ ११ ॥ तीसरे ग्यारहै स्थान सर्वे ग्रह शुभ है औ र से पंच [illegible]

स्थानने ष्टहै ॥ २८ ॥ इतिफल द्वा ग्रह स्थि ॥ मूल ॥ शु [illegible]
द्वलनेष्टमेस्थितौ ॥ कुजेलाने ष्टमेचास्तिप्युक्के स्थानेष्टमे [illegible]
मेंहि के चाल नेस्र्ये चसप्तमे ॥ वुधेष्टमेचयामित्रे वि [illegible]
२९ ॥ क्रूरयोरंतरेलग्ने चंद्रंचपरिवर्जयेत् ॥ ग्रंथंत [illegible] शीत [illegible]
स्वकस्वकौ ॥ ३० ॥ टीका ॥ शनि स्र्ये जो सप्तम होय सौ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]
स्त्रोर भौम ॥ १ ॥ ४ ॥ ८ ॥ स्वरुशुक्र ॥ ७ ॥ ४ ॥ ६ ॥ वृहस्पति ॥ २ ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]
वुध ॥ ८ ॥ ७ ॥ येग्रह इतने स्थानमे विवाह दि [illegible] शक [illegible] हारे
है ॥ क्रूरग्रहमध्य चंद्रमा होयती [illegible] हिल [illegible] है [illegible] तीवर्जेनीकै है
वरकोशाघ्रही मृत्युकोदाताहैः ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ इतिष्टमाष्टमग्रहनिर्ण
यः ॥ मूल ॥ तुलाचमिथुनंकन्या [illegible] धन [illegible] ॥ [illegible] तेलानप्युमानि
संमध्यमाक्ष्वापरेस्मृताः ॥ ३१ ॥ टीका ॥ तुलामिथुनकन्या [illegible] धनका ए
वोदेइतनीलग्नैशुभहै: ॥ सौ [illegible] लग्नै मध्यम है ॥ ३१ ॥ मूल ॥ लतामालवके
देशेलालनकतुरुजांगले ॥ एकार्गलं चवाश्मीरे वेधंसर्वेत्रवर्जयेत् ॥ ३२ ॥ टी

का॥ लता दोष मालव देशमें वर्जनीक है॥ पात दोष वकु(?) जांगल देशमें·
निषिद्ध है:॥ एकार्गल दोष काश्मीर देशमें मने है:॥ श्री खें धन्य दोष सव

१	मे	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध
२	वृ	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं
३	मि	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि
४	क	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
५	सिं	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध
६	क	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	कं
७	तु	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि
८	वृ	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
९	ध	मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध
१०	म	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	क	सिं	क
११	कुं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि
१२	मी	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी

इतिमेषादि १२ द्वादशराशीनां नवांशचक्रं

देशमें वर्जित है॥ ३३॥ मूल॥ मेष
नवांशमें [illegible] वृषे च मकरादि
का:॥ लता [illegible] कुंभो सचक्रकों
[illegible]॥ ३४॥ गोलता
[illegible] दाह
ना॥ [illegible]
में च मध [illegible]
राशि [illegible]
मानक [illegible]
कोनवांश [illegible]
३४ नवांश [illegible]

सिंह धन ॥ इन तीनोंका पहिला नवांश मेषते नवये धनतें [illegible]
न्यासकर ॥ इन तीन का नवांशा मकर आदि दे कन्या [illegible] ॥ [illegible]
तुला कुंभ ॥ इन तीन का नवांशा तुला आदि मिथुन पर्यंत [illegible] ह: [illegible]
क मीन ॥ इन तीन का नवांशा कर्क आदि पर्यंत गनिये ॥ [illegible]
यै ॥ मेष तुल मिथुन कंन्या इन का नवांशा शुभ है औ र धन [illegible] ॥ टी [illegible] अवत
शुभा मिश्रित है ॥ औ र नवांशा जो है ॥ विवाह मैं मध्यम है ॥ [illegible]
अंशस्य पति र्यंशस्थे न्न मित्रं वा शुभ मेपि वा ॥ परषेत दा [illegible] पंति
फला: ॥ ३६ ॥ अंशका पति जो ग्रह: नवांश [illegible] मीसो [illegible] ॥ [illegible] वा ह्या
मा का मित्र होय वा औ र शुभग्रह होय लग्न पर ॥ अथवा इन की दृष्टि होय
लग्न पर होय तो औ र दोष सब कौ नि [illegible] करे ॥ ३६ ॥ [illegible] ॥ शुक्लाष्टमी समारं
भ फाल्गुण स्य दिनाष्टकं ॥ पापा मा मा [illegible] कं हुत्वा सा [illegible] होलाष्टकं बुधै: ॥ ३७
शत द्रु विपाशायां मैरावत्यां त्रि [illegible] रे ॥ होलाष्टकं विवाहा दौ त्याज्यमन्यत्र
शोभनं ॥ ३८ ॥ टीका ॥ फाल्गुण [illegible] शुक्लपक्ष की अष्टमी ते [illegible] मानक होल

१८ रिवोधलग्ने त्रिषड्डायुगस्वाराक्षंधलग्नात्रिधनायगाणाश्चि
वधिरैवकुब्रुपकिंदुजिवेनाद्दिरावप्राप्तमुनपाषिवाद्द
शी॰बो॰ इकबदीतेहै ॥ ३७ ॥ सोशतलद्रनदीकेतीर ॥ श्रोरपिपाशानदीकेतीर श्रीररोवत
नदीकेतीर श्रीरपुष्करनदीकेतीर श्रीरदेशहेतिनदेशनविषे विवाहादिकजो॰
उत्तमकार्यहैसोवर्जितहै ॥ ३८ ॥ [illegible] ॥ दिनेशदांधावषमेष
सिंहोवाश्रीचकन्यामिथुनंकुलीर ॥ मगातुलालिवोधिरपरान्हेसंध्यासकु॰
जायटधन्वमीना ॥ ३९ ॥ टि॰का दिनमेंयेअंधेलगनहै वृषमेष [illegible] तेह रात्रिके
अंधे कन्या मीन कर्क अपरान्हमेंवहरे मकर तुल [illegible] संध्यामेंलूले
धन कुंभ मीन ॥ ३९ ॥ मूल ॥ दिवांधोवरहमाचरात्रौ [illegible] नानाशकः ॥ कुब्ज
दोवधिरोलंगकुजोवंशविनाशकः ॥ ४० ॥ टीका ॥ दिन [illegible]
होयकेतोवरकीहानिहोय ॥ रात्रिकेअंधेमेंव्याहमेंहोय [illegible]
श्रीरवहरेलगनमेंपाणिग्रहहोयतोदुखदायकहै ॥ श्रो [illegible]
यतोवंशनाशहोय ॥ ४० ॥ मूल ॥ यत्रचैकादशोचंद्र [illegible]
धूलिकःसविज्ञेयोशेषाधूलिमुखोत्सवाः ॥ ४१ ॥ टी॰ [illegible]
माहोय अथवाद्दसरेतोसदेहोय सोउत्तमगोधूलिका [illegible]

कहते है ॥ ४१ ॥ मूल ॥ कुलिकोंतष्ट्रसामं चलानेषष्ट [illegible]

कल्याज्य: पंच दोषेन दुःखिलः ॥ ४१ ॥ टीका ॥ कुलिक [illegible]

तलानको श्रीरफुट है आठवे चंद्रमा होय तो गोधूलि [illegible] हे: [illegible]

रना लगन प दोषकर दूषित है ॥ ४२ ॥ मूल ॥ यद्दा नास्ता [illegible] गोधू

लिरितं नभ: ॥ सर्वमंगलकार्येषु गोधूलिस्तु प्रशस्यते ॥ ४ [illegible] टी [illegible] अब ल

ग्न येष्ट्र नाहोय ॥ श्रीरगायोकी खुरनकी धूरजकाशमें [illegible] होय

य ॥ सोवह घरी सकल उतम कार्य विषै मंगलकी दाता है ॥ तिसको गोधूली

कहते हैं ॥ ४३ ॥ मूल ॥ अष्टमे जीव भौमे च बुधे [illegible] मे ॥ लग्ने षष्ठा

ष्टमे चंद्रे तदा गोधूलि नाशकः ॥ ४६ ॥ टीका ॥ जो लगनते [illegible] आठये मे

भौम गुरु बुध शुक्र ये ग्रह होय शुभवा लगनको [illegible] आठवे ॥ १ ॥ ६ ॥ ८ ॥

चंद्रमा होय तो ॥ वह गोधूली नाशक दोष है तामें सर्व कार्य वर्जित है ॥ ४४ ॥

इति गोधूली: ॥ मूल ॥ लग्नादेका दशोषष्ठे लग्नपश्चकराग्रहा: ॥ तृतीये चाष्ट

मे सूर्ये सूर्यपुत्र प्रशोभने ॥ ४५ ॥ चंद्रे धने तृतीये च कुजपष्टे तृतीयके ॥ ३

शी·टी· धेज्ञौ नवषट्द्विद्वित्रिचतुःपंचदशास्थितौ ॥ ४६ ॥ शुक्रो द्वित्रिचतुःपंचघर्मकर्म
तनुस्थिते ॥ राहुर्द्वेशाष्टषट्पंचत्रिनवस्थः शुभः ॥ ४७ ॥ टीका ॥ लग्नतैसा
र दे स्थान मैं ये ग्रह शुभ हैं पूर्वकर्ता हैं सो २।३ स्थैराहु ट शनि ॥ ४।५ ॥ सो र
वे द्रुमा ॥ २ ॥ ३ ॥ सो २ भौम ॥ ३ ॥ ६ ॥ सो बुध बृहस्पति ॥ १ ॥ ३ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १० ॥ सो
र शुक्र ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ इन स्थान मैं शुभ मल: ॥ सो राहु केतु ॥ १० ॥ ६ ॥
२ ॥ ५ ॥ ३ ॥ ९ ॥ ११ ॥ इतने स्थान न मैं शुभ फल दायक कहे हैं ॥ ४६ ॥ इति ग्रहोद
योपुष्टक राय हाः ॥ मूल ॥ छायापादै रसोपेतैः एकादि शहतैर्भजेत् ॥ लब्धा वै
घटिका ज्ञेया शेषांके च पलास्मृताः ॥ ४८ ॥ टीका ॥ अर्ब दिन ना पवे [illegible]
नह: ॥ अपनी छाया उँगलि की अपने पाउका रना पिये ॥ जे [illegible] पाउ छाया होवेति ना
मे ६ सो रमिलावे फिर ताकसै इकइस मै ॥ २१ ततने को भा [illegible]
ये सो घरी दिन जाने ॥ जो बटता होय सो ताको पलजाने सो [illegible]
वचै तिन भाग प्रमाण अंकन परयेला इकै पलक [illegible]
४८ ॥ इति दिनघटिकापलाज्ञान ॥ मूल ॥ पूर्वोधाद्यन [illegible]

रेवती॥ विशाखाच यदामक्लिलदास्पाटह्मोदय॥ ४८॥ [illegible]
एंएसप्तहीनंचशेषकं॥ द्विगुणांचविहीनंचगतारात्रिमुहूर्त [illegible]॥ [illegible]
केमृगशीर्षेचमूलेचनवमोदय:॥ ग्रन्थमूलयदामक्लिष्ट [illegible]
५१॥ टीका॥ अवरात्रिगतशेषनिर्णय॥ पूर्वाषाढ मूल राधा ओर [illegible]
तौ॥ विशाखा॥ इननक्षत्रमेकोउनक्षत्रमाथेपरहोयतो॥ [illegible] वेनक्षत्र [illegible] उद
यजानिये॥ ५५॥ ओरजोनेननक्षत्रकामध्येहोय ताराजोनक्षत्रशिपरहोय ता
केगानिलीजे॥ पुनिसातकाभागदीजे शेषबचैसूलेआजे तामेंध्यगओरघटाई
ये॥ जोरात्रिगतगतवाभोग्यजानिये॥ ५०॥ ओरमृगशिरआमूलमाथेपरहोयतो
नवयेननक्षत्रकाउदयजानिये॥ ओरजोकहेतिनमेंआठवेकोकाहिये॥ ५१॥ इति
रात्रिज्ञानं॥ मूल॥ सिंहकुंभेतिरहा: [illegible] केंद्रेवृहस्पति:॥ मत्तमातंगयूथानां
शतंहंतिचकेशरी॥ ५२॥ टीका॥ जो [illegible] लग्नहू आरिष्टहोयतो [illegible]
सतेहैं॥ जोकेंद्रस्थानवृहस्पति [illegible] होय॥ १॥ ४॥ ७॥ १०॥ इनभावनमेंतौ जै
सेसैकडोहाथीकासमूहमे॥ सिंह [illegible] सोहनिडार [illegible] आरिष्ट

 नकोनाशकरै ॥५२॥ मूल ॥ शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दश शतानि च ॥ लग्नमेकं
लदोषाणां सुरेज्यः अपोहति ॥५३॥ टीका ॥ जो लग्न में शुक्र होय दश हजार दो
षनको हरै ॥ औ बुध तें हजार गुरु तें लक्ष दोष हरै ॥५३॥ मूल ॥ परिघार्द्धं व्यती
पातं वैधृतं सकलं त्यजेत् ॥ विष्कुंभे घटिका पंच शूले सप्त च कीर्तिता ॥५४॥ षट् गं
डे चातिगंडे च नव व्याघात वज्रयोः ॥ एते शुभ योगा [illegible] जो लग्ने सदा बुधैः ॥
टीका ॥ अब नव योग निषिद्ध है तिनकी [illegible] जो है परिघकी घड़ी ३० व्य
तिपात वैधृत संपूर्ण त्याग करै विष्कुंभकी ५ शूलकी घड़ी ७ त्याग किये ६ षट और
गंड अतिगंडकी घड़ी ६ व्याघातकी ९ वज्रकी ९ [illegible] शुभ कार्यन मे ॥ [illegible]
व्यतीपाते भवेन्मृत्युः गंडांते मरणं ध्रुवं ॥ [illegible]
के ॥५६॥ वैधृते [illegible] विष्कुंभे कामचारिणी ॥ [illegible]
मतवत्सकः ॥ परिघे च भवेद्दासी [illegible] ॥५७॥ [illegible]
बाह्य करे तो मृत्यु होय ॥ अर गंडांत मूल मे करे तो [illegible]
गंड मे रोग होइ ॥५७॥ वैधृत मे वैधव्य होय विष्कुंभ मे क [illegible]

धा॰ठक्षयहोय ॥ आघातमै मलवल्ता होय ॥ बालकम॰ [illegible]
राईदासीहोय ॥ अतमांसमदिरादिकसेवनकरै ॥ ५८ ॥ [illegible]
पद्माकारं लिखेचक्रं मष्टकोणसमन्वितं ॥ यस्मिन्नक्षत्रे [illegible]
मत्रयं ॥ ५९ ॥ त्रयस्त्रयस्त्रसर्वत्र ततः पूर्वादितो लिखेत् ॥ म [illegible] लक्ष्ती [illegible] ॥ ६ [illegible]
क्षयविनाशनं ॥ ६० ॥ पूर्वस्थाने भवेलक्ष्मी धनधान्यसम [illegible] ॥ आग्नेय
वेन्मृत्युः नारीकुलविनासिनी ॥ ६१ ॥ दक्षिणे दुर्मे [illegible] नारी दारिद्र्यं मृत्यु [illegible]
रू ॥ मैं कृते पुत्रलाभश्च सर्वसौभाग्यमेव च ॥ ६२ ॥ [illegible] धवाके [illegible] वायव्ये
आमिचारिणी ॥ उत्तरे धनधान्यानां ईशाने [illegible] पदा ॥ ६३ ॥ मंगलं सर्वकार्ये
षु पद्माचक्रं विचारयेत ॥ गर्गाचार्य [illegible] सर्वसिद्धिप्रदायकं ॥ ६४ ॥ टीका
पद्माचक्र सूर्यकेनक्षत्रते दिनकेनक्षत्रलौगनिये ९ नक्षत्र मध्यके कोठामै ३ धरि
ये ऐसे क्रमतें पूर्वादि दिशानमें तीन ३ तीन ३ नक्षत्र आठौ दिशानमें धरिये
जो न दिशानमें दिनकानक्षत्र परै ताको फल कहिये पूर्वे होय तौ लक्ष्मी धन
धान्य होय १ आग्नेयमें मृत्यु कुलविनाश २ [illegible] मृत्युः ३ नै॰ पुत्रला

नसौभाग्यसुख ४ प॰ वैधव्य होय ५ वा॰ अग्निकारणी ६ उ॰ धन धान्य सुख ७ ई॰
सर्वसंपदा होय॥ ७॥ पण॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ इतिश्री काशीनाथकृतौ शीघ्र
बोधविवाहप्रकरणं॥ ४॥ मूल॥ धान्यकुंभेहयामैर्नेष्ट वियुग्मं करत्रयं॥ पुन
र्वसुद्वयं पूषा मूलं चाप्युत्तरात्रयं॥ १ विवाहेनस्तरेमासे मार्गे मैं वैशाख फाल्गुणे॥ म
करे मिथुने मीने लग्ने कन्या तुला धनः॥ २॥ सौम्यार्कि वर्जिता वाराः संतचाद्विरा
गमे॥ ३॥ षष्ठी रिक्ता मादशी वर्ज्या मावास्या च वर्जिताः॥ ३॥ टीका॥ रो॰ म॰ म्रि॰ ऽ
न॰ श्र॰ ध॰ ह॰ चि॰ स्वा॰ पुन॰ पुष्य॰ मूल॰ उ॰ ३ इतने नक्षत्र द्विरागमन को श्रेष्ठ है॥ नौ
रविवाह ते ऊन वर्षे स्यागाहन फाल्गुण॥ वैशाख ये मास हैं मकर मिथुन [illegible]
न्या तुला धन॥ ये लग्न श्रेष्ठ है शुक्र मंगल शनिवार॥ रिक्ता [illegible] यो वर्जित
ति द्विरागमनं॥ मूल॥ श्रवाद्रात्रयं मार्द्रयुग्मं म[illegible] पूषा [illegible]॥ मध्य[illegible]
नः सूर्यो भौमे रिक्ता विना तिथिः॥ ४॥ श्रावैशाखेत्रये मासे मूल [illegible]
चापे पुंसवनं कुर्यात् सीमंतं चाष्टमे तथा॥ ५॥ टीका॥ श्राद्रा [illegible]
म॰ रे॰ ह॰ मृ॰ पु॰ षा॰ उ॰ षा॰ इतने नक्षत्रन में सीमंत जो पुंसवन [illegible]

धातेव्रतयहोय ज्याघातमैमलवत्सा होय वालकमरिसा [illegible]
रविमंगलवृहस्पतितिथेरिक्ता ॥ ४।९ ॥ १४ ॥ येवाजेतहै [illegible]
३ ॥ मासचैत्र ॥ २ ॥ ५ ॥ ११ ॥ १२ ॥ येलगनलीजे ॥ सुव्याजामेदे [illegible]
ननदानस्थिरतानिमितकीजे ॥ श्रीरश्रीमंतश्रेष्ठमा [illegible] कीजे ॥ ५ ॥ इति
नवनसीमंतकर्मविष्णुपूजा ॥ मूल ॥ शुभैत्रिकोणेकेंद्रे [illegible] येषष्ठे त्रि
दे ॥ टीका ॥ जो त्रिकोण ॥ ९ ॥ ५ केंद्र ॥ १ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १० ॥ इनस्थानमैसोम [illegible] २
३ ॥ ६ ॥ ११ ॥ इनमैपापग्रहहोयतो ॥ जोइस्त्रीसेप्रसंगकरैतोसंतानन होइ ॥ ६ ॥
जीकीसंधीलगनेवजोहै ॥ ६ ॥ इति गर्भाधानम् ॥ मूल ॥ पुनर्वसुवयेहलत्रये
मैत्रेध्येमृगे ॥ मूलेषूत्तराधनिष्ठास्युःद्वादशेकादशे दिने ॥ ७ ॥ श्रमस्त्रापिशुभे
योगेवारेवुधशशांकयोः ॥ मानोगुरौस्थिरेलग्नेवालनामकृतःशुभः ॥ ८ ॥ टी
का ॥ पुन॰ पुष्य॰ ह॰ चित्रा॰ स्वातः॰ अनु॰ ज्ये॰ मूल॰ उत्तरा॰ ३ ध॰ ॥ येनक्षत्र चौर ॥ ११
१२ ॥ दिन ॥ चं॰ बु॰ वृ॰ शु॰ ॥ येवारस्थिरलगनमैवालककोनामधरिये ॥ ८ ॥ इति ना
मकरणम् ॥ मूल ॥ मैत्रत्रयेहरिकंसे चिधर्देवे दितिद्वये ॥ स्वातिहस्तोत्तराषाढे

शी॰टी॰ पश्चार्धे मह्येव च॥ ९॥ सिंहत्रयेघटेलग्ने मासयोः श्वचलस्थयोः॥ यात्रातिथौ
च निष्कासः शिशुनैवार्कभौमयोः॥ १०॥ टीका॥ ऽनु॰ उ॰फा॰ म॰ श्र॰ ध॰ रो॰ रे॰ पु
अ॰ स्वा॰ ह॰ उ॰ षा॰ रे॰ मृ॰ श्रा गच्छ॥ इन नक्षत्रमे॥ सिंह कंन्या तुल कुंभ॥ श्रास्ती
सरे चौथेमासमे शुभतिथै॥ येयात्रा तिथैं कहीहै॥ तिनमै बालककोनक्षत्र दर्शी
नकरावै भौमशनिवार वर्जितकरैहै॥ [illegible] इति बालनिष्कासनम्॥
पुनर्वसुहयैचित्राविशाखामृगणीस्वयं॥ मूलश्वाद्री मघाहस्याश्रवणरोद्दराम
ज्या स्तथा॥ २१॥ सोमशुक्रवुधाशीघ्रमस्तीस्नानकर्मणि॥ हस्याश्वतिपदाषष्ठीनवमा
वतिथिवर्जयः॥ टीका॥ पु॰ पुष्य॰ चि॰ वि॰ मृ॰ ह॰ म॰ श्वा॰ आ॰ येनक्षे श्र॰ ध॰ [illegible] रु॰
रे॰ स्व॰ येवर्जितहै॥ श्री सोम शुक्र वुध शनि येवर्जित [illegible]॥ [illegible]
षिधहै॥ इनमैप्रसूतिस्नाननहिंकरना॥ इति प्रसूति[illegible]॥ अथ [illegible]॥ [illegible]केनार्के
स्तादिपंचके छिन्नमंधनिष्ठायां च रेवती॥ गुरौ शुक्रे बुधे [illegible]नौ
वर्ष॥ २३॥ तानेमीनस्थकन्यायां मिथुनं च वृषभे शुभः॥ पुष्ये [illegible]
स्मेशुभा॥ २४॥ टीका॥ ह॰ चि॰ स्वा॰ वि॰ ऽनु॰ ऽभि॰ घ॰ रे॰ पु॰ [illegible]

घ धन शुक्र लग्न मीन कन्या मिथुन वृष ॥ एसेमहूर्त [illegible]
सुधारणकरावैतौश्रेष्ठहै ॥ २४ ॥ इति श्रीवस्त्रधारण [illegible]
रेवत्यो मूलं त्वाखान राधयोः ॥ धनिष्ठा चत्रयो पूर्वो उ [illegible] १
एतेयत्र गता मानि प्रसूतिस्नान कोविदैः ॥ वारे भौमार्के [illegible] सप्त [illegible]
मदैवहि ॥ २६ ॥ टीका ॥ अथ प्रसूतिस्नान विशेषणं च पु [illegible] सूती [illegible] मूलो
दि पञ्जन महूर्त कहते हैं ॥ रे० उ० ३ रे० मू० स्वा० ५ न० ध० [illegible] ३ [illegible] मू० ॥ १५ [illegible] महूर्त
उत्पा मैं कि जे वाकी रहै ते लीजिये ॥ और भौम शनि रवि गुरु ये वार शुभ है ॥ प्र
सूती स्नान कराइये ॥ विशेषक रवे शुभ है ॥ २६ ॥ इति प्रसूती स्नान ॥ मूल ॥ मृ
लादित्य द्वयं ग्रासं ध्रुवं [illegible] मग: कर [illegible] ॥ [illegible] स्य वेनि [illegible] शुभ मैं दाक मृ
मि [illegible] ॥ २७ ॥ टीका ॥ मृ० पु० पुष्य० श्र० म० [illegible] ॥ धनदत्तत्र [illegible] को जो रहै सो नद
त्र और शुक्र शनि भौम वार इन विषै प्रसूता स्त्री को कूपका पूजन उत्तम मैं ॥ २७ ॥ मू
ल ॥ नवान्न भोजनेयाह्यं वक्ष्ये प्रोक्तं मशोषतं ॥ वारायके [illegible] मैं मौन दत्र [illegible]
सौम्याः ॥ २८ ॥ टीका ॥ नये अन्न के भोजन [illegible] हि रायके येशोनर

ती॰टी॰ विवाहकोवर्जैहः॥ श्रवण मृगशिर नक्षत्र रविसोमवारयेवबुधके मुहूर्तेतेन
वान्नभोजनकोअधिकलियेह॥१८॥इतिनवान्नभोजनं॥ अथवस्त्रधारण
मुहूर्तम्॥मूल॥ आद्यान्नप्राशनेप्रवोक्तश्चोडूविवस्त्रोयमः नक्षत्राणिपौरस
जपनारेसौमार्केनंदने॥१९॥ द्वादशीसप्तमीरिक्तापर्वअष्टाचवर्जिताः॥ लग्नेवृच
ऋषेच्या देवषकन्याचमन्मथः॥२०॥ शुक्लपक्षेशुभेयोगेसंयाशुभचंद्रमाः॥
मासेषष्ठाष्टमेपुंसांस्त्रीणांमासप्तपंचमे॥२१॥टीका॥ अवबालकेअन्नप्राशन
कामुहूर्त॥ इतनेनक्षत्रादिकवर्जितकहेहै ए॰३ पो॰श्रा॰श॰मृ॰शनिसोमवारे १
५ औरप१२॥०॥४॥९॥१४॥३०॥ अहे॥२४॥ येतिथेअतव्यतिपातयोग इतनेलग्नमें
मीन मिथुन वृष कन्या इननेलग्नलीजे॥ औरशुक्लपक्ष...शुभमहो...
जे अतशुभचंद्रमाहोय पुत्रकूअन्नप्राशनकरैहे आठवें... के॥ ...के...
पांचवेमहीनामेंकीजिये॥२१॥२०॥इतिप्रथमअन्नप्राशन... ...
योजेष्ठामृगौच श्रवणत्रये हस्तत्रयेवरेवत्यांशुक्लपक्षे... ...
गोस्त्रीधनःकुंभेमकरे मन्मथलग्ना॥ सोमवारेशुभयो... ...
... ...

२२ ॥ टीका ॥ श्रवणं इनको मृदु हे तथा कहते हैं ॥ पुनर्वसु पुष्य [illegible]
धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वाति रेवती येन नक्षत्रा शुभ लाभ पत्र [illegible] ॥ [illegible]
में ॥ २२ ॥ औ र वृष कन्या कुंभ धन मकर मिथुन येलगने [illegible] की [illegible]
र ॥ इतने श्रवण सब श्रेष्ठ हैं श्री रजन्मको मास रिक्तातिथि [illegible] मी [illegible] सप्त [illegible]
वर्जे हैं ॥ छातिकूडाकर्म ॥ मूल ॥ हस्तत्रयेहरिरवं दे पूर्वो [illegible] षु चले ॥ मूलेपौ
ष्ण चन नक्षत्रे बुधे कोऽस्त शुक्र योः ॥ २४ ॥ दैवो स्थाने मीने चा [illegible] लेवर्षे च [illegible]
विद्यारंभे त्रिवर्जोऽष्ट षष्ठि ना ध्याय रिक्तका ॥ २५ ॥ टीका ॥ विद्यारंभका नक्षत्र
कहते है ॥ ह॰ चि॰ स्वा॰ श्र॰ ध॰ श॰ उ॰ मू॰ श्रे॰ पुन॰ पुष्य॰ श्ले॰ अ॰ रे॰ वार॰ बु॰ व॰ शु॰ ॥ ये
शुभ हे ॥ २५ ॥ मूल ॥ रिक्तायांच अमावस्या [illegible] विपक्ष [illegible] वर्जयेत् ॥ बुधे [illegible] वासरे म
ध्यौ शनि भौमे मृत प्रदः ॥ २६ ॥ टीका ॥ [illegible] ३० १४ ४ १४ ॥ ये तिथै वर्जित है ॥
औरबुधचंद्रवारमे विद्याकरे तो मूर्ख होई ॥ शनि भौम वारमें करे तो मृत्यु होई
२६ ॥ मूल ॥ विद्यारंभे गुरुः श्रेष्ठो मध्यमे रविभार्गवौ ॥ बुधेन्दु श्रेष्ठ पविद्याया शनि
भौम पारत्यजेत् ॥ टीका ॥ विद्यारंभ को गुरुवार श्रेष्ठ है शुक्र रविवार मध्यम है

बुधतो मतुच विद्यारंभको न हते है शनिभौमवर्जी है ॥ २७ ॥ इति विद्यारंभ
मुहूर्त ॥ पूर्वाषाढाश्विनी हस्तत्रये च श्रवणत्रये ॥ ज्येष्ठा मार्गे मृगो पुष्ये रेवत्यां चो
त्तरायणे ॥ २८ ॥ द्वितीयायां तृतीयायां पंचम्यां दशमीत्रये ॥ सूर्ये शुक्रे ब्राचार्ये
वारे प्रदेतथासिते ॥ २९ ॥ लग्ने च धनुषि धनुसिंहे कन्या मिथुनयो रपि ॥ व्रतबंधप्र
मे योगे ब्रस्तत्रि विशां भवेत् ॥ ३० ॥ पापो भौम शनि केतुः कुयं राहुः रविस्तथा ॥
सौम्यसोमबुधश्चैव गुरुतस्तु शुक्रोतथैव च ॥ ३१ ॥ टीका ॥ अब यज्ञ[illegible] पवीतका मुहूर्त
कहते हैं ॥ पू॰षा॰ अश्वि॰ ह॰ चित्रा॰ स्वा॰ श्र॰ ध॰ श॰ ज्ये॰ मृ॰ [illegible] उ॰ मा॰ म॰ पुष्य॰
रे॰ ॥ श्रु उत्तरायण सूर्य शुभ है ॥ तीज ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥ १० ॥ ११ ॥ १ [illegible] तिथि [illegible] है सो
र रवि गुरु शुक्र ये वार शुभ है ॥ शुक्लपक्ष श्रेष्ठ है ॥ सो रवध [illegible] मिथु
न ये लग्न श्रेष्ठ है ॥ अस्त शुभ योग होइ इनमें ब्राह्मण क्षत्रि [illegible]
वर्णको यज्ञोपवीत दीजिये और रवि हद्दुषमें चारि हे वे [illegible]
रहे ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ इति उपनयन मुहूर्त ॥ अनिरुद्ध [illegible]
रे ॥ न गो विधियुग मुहूर्ते प्रथमगो सौम्यवारके ॥ ३२ ॥ दिल [illegible]

प्रथास्यतं ॥ चैत्रपोषहरिस्वापंवर्षेचयुग्गलंत्यजेत ॥ टीका ॥ [illegible] ॥ मध्येम [illegible]
अ॰ध॰श॰पुन॰पुष्य॰चित्र॰ह॰उ॰३ पू॰मू॰रे॰येनक्षत्रअ॰ श्री [illegible] पुष [illegible]
है ॥ औरमिथुन कर्क धन कुंभ मीन चैत्र और पोष आषाढ [illegible]
मेहै ॥ ३३ ॥ इतिकर्णवेधः ॥ मूल ॥ पूर्वाषाढोहितिर्देवैविधिपु [illegible] ॥ [illegible]रा
फाल्गुनीहस्तत्रयंमूलंचरेवती ॥ ३४ ॥ मैत्राश्विनीचलानोपि [illegible]
मिथुनंमकरोराशोवालकमेलिकोविदैः ॥ ५३५ ॥ श्रावण [illegible] तिके
फाल्गुणेतथा ॥ मासेषुमार्गशीर्षेश्चवालकमेलिशस्यते ॥ ३ [illegible] वज्रव्याघातश्रूला
निव्यतिपातश्चगंडकैः ॥ विष्कुंभपरिघोवर्ज्योवारेभौमस्यमा [illegible] ॥ ३७ ॥ टीका ॥ पू
षाढपुनर्वसुपुष्य॰रो॰मू॰अ॰ध॰श॰उत॰फा॰ह॰चि॰स्वा॰मृ॰रे॰ [illegible] येशुभहै ॥ सिंह ॥
कन्या कुंभ वृश्चिक मिथुन मकर येलग्ने ॥ ३५ ॥ श्रावण॰वैशाख कार्तिक॰ फाल्गुन
येमासशुभहै ॥ ३६ ॥ वज्रव्याघात शूलव्यतिपात अतिगंड विष्कुंभ परिघ येयोगव
र्जितहै ॥ मं॰श॰येवारवर्जैहै यामहूर्त्तहैमें मकानकीनीउधारिये ॥ ३८ ॥ इतिवालक
मे ॥ मूल ॥ आर्द्राशलमियाश्लेषाविशाखावामरुणोदयस्त ॥ स्वाक्त्येचद्वादशीरिक्ताभ

शी·टी· विंद्रत्रयो ष्मी ॥ ३८ ॥ अतिपञ्चतिथौ वारे त्याज्यौ शनिकुजौ तथा ॥ स्मृतिदेवप्रतिष्ठायां स्थिरलग्नो नरायणे ॥ ३९ ॥ टीका ॥ अब वापीकूपतडाग बागको मुहूर्त कहते हैं: ॥ और इन कूपादिकनकी प्रतिष्ठाको यह मुहूर्त है: ॥ श्र·श·श्ले·वि·म·कृ· येन नक्षत्र नकायेन विषै वर्जे है: ॥ १ ॥ ४ ॥ ९ ॥ १४ ॥ ६ ॥ ३० ॥ ८ ॥ १ ये तिथि वर्जी है: ॥ शनि भौम वार इ नमें देवालयादिक प्रतिष्ठा नाही कर्तव्य है ॥ स्थिरलग्न और उत्तरायण सूर्य इनमें की

प्रतीष्ठा जिये ॥ ३९ ॥ इति देवालयवापीकूपतडागादिप्रतिष्ठा ॥ मूल ॥ विशाखामेर सौ

ख्याश्लेषा पंचम घा तथा ॥ आमावास्या च रिक्ता च वारे भौम रवि तथा ॥ ४० ॥ ग्रह प्रवेशे चैव स्पर्शषाट चकीर्तितः ॥ अ स्थिर नक्षत्र ॥ स्थिरे लग्ने ... पदे वुधैर्मितः ॥ टीका ॥ अब प्रवेशको मुहूर्त कहते हैं: ॥ वि·म·श्ले·म· येन नक्ष... हैं: ॥ अमावास्या सत रिक्ता तिथि मंगल रविवार ये दोऊ वर्जित है: ॥ और ... और वृष सिंह वृश्चिक कुंभ ये स्थिर लग्न में और स्थूलपद में उत्तम ... कार्य ॥

ग्रहप्रवेशः ॥ मूल ॥ अनुराधा चतुर्थं च मघादितिथौ करे ॥ ... श्रुतिं ... त्रयं ॥ ४२ ॥ गोखोजुषि हलेकार्ये हया मूर्ये शनिकुजः ॥ सप्त ... नाये ...

द्वितीयाद्वयपर्वंच ॥ ४३ ॥ त्रिमित्रिमित्रिमिपंचाब्धिमिपंचत्रिमिद्वयं ॥ सूर्यभात्ते
मंजाविह्यानिवृद्धिहलक्रमात् ॥ ४४ ॥ टीका ॥ स्व॰ ज्ये॰ मू॰ ... म॰ पुन॰ पुष्य
श्रव॰ रो॰ म॰ रे॰ उ॰ ३ येनक्षत्रहलकर्मकोश्रेष्ठहै ॥ श्रीरसूर्यके ... ते ...

अथ हलचक्रम्			
३	३	२	
	५	५	
	३	३	३

लोकमतेहलचक्रमेसमझलीजीय ॥ श्री ... निमालकार
श्रीर ॥ ६१ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥ १२ ॥ २ ॥ ३० ॥ ४३ ॥ ये ... श्रीरव्यतिपात
योगइतनेसर्वेवर्जितहै प्रथमहानि ... वृद्धि फिरहानि
याहीप्रकारगानिये ॥ ४५ ॥ अथहरेतकामुहूर्त ॥ मूल ॥ श्र
वराधात्रयंहलह्युगाश्चैचादितिद्वयं ॥ यात्रायांरेवतीमिं शाखा
द्राद्यामरणीद्वयं ॥ मघात्तराविशाखोचसर्पोश्चान्सचमध्यमा ॥ षष्ठीरिक्ताद्वादशी
चपर्वःणीचपर्ववर्जयेत् ॥ ४६ ॥ लग्नेकन्यामन्मथश्वमकरश्चतुलाधरः ॥ यात्राचं
द्रबलेकार्येशकुनंचविचारयेत् ॥ ४७ ॥ टीका ॥ अबयात्राकामुहूर्तकहतेहैं ॥
स्व॰ ज्ये॰ मू॰ ह॰ म॰ श्र॰ पु॰ पुष्य॰ रे॰ येनक्षत्रशुभहै श्रीर ॥ ६ ॥ ४ ॥ ८ ॥ १४ ॥ १२ ॥ ३० ॥ १५ ॥
येतिथवर्जितहै श्रीरव्यतिपातत्यागके ॥ क॰ मि॰ तु॰ म॰ येलग्नशुभहै चंद्रबलश्र

शी॰टी॰ कसगुणविचारकै यात्राकरिये ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ अथदिशानषेधं ॥ मूल ॥ शनौचं
द्रेत्यजेत्पूर्वे दक्षिणस्यां दिशां गुरौ ॥ सूर्ये शुक्रे पश्चिमायां बुधभौमेतथोत्तरे ॥ ४८ ॥
टीका ॥ शनिसोमवारको पूर्वमें दिक्शूलहै ॥ ताको सन्मुखन चलिये और गुरुवा
रको दक्षिणमै रविशुक्रवारको पश्चिममै और मंगलबुधवारको उत्तरमै दिशाशू
लजानिये ॥ मूल ॥ सर्वोदिगमनोहस्तरेषामैत्राश्रवणोमृगः ॥ सर्वसिद्धिकरः पुष्यो
विद्यार्याचगुरौयेथा ॥ ४९ ॥ टीका ॥ अबसर्वदिसनके चलिबे [illegible] सर्वदिशाकेक
हतेहै ॥ ऽश्वि॰श्र॰ह॰रे॰म॰पुष्य॰ येन त्रसकलासिद्धिकेदा
तारै ॥ जैसो विद्याको ल्हस्पतिसमानगुरु ॥ ४९ ॥ इतिसर्व
दिग्गमननक्षत्राणि ॥ मूल ॥ प्रतिपत्सुनवम्यांचपूर्वस्यां
दिशियोगिनी ॥ अग्निकोणे तृतीयायां [illegible]कादश्यांतथास्म
ता ॥ ५० ॥ त्रयोदश्यांच पंचम्यां दक्षिणस्यां शिवप्रियां ॥ द्वा
दश्यांच चतुर्थ्यांचनैऋत्यकोणगामिनी ॥ ५१ ॥ चतुर्दश्यांच
षष्ठ्यांच [illegible]श्चिमायांचयोगिनी ॥ पौर्णमास्यांचसप्तम्यांवायु

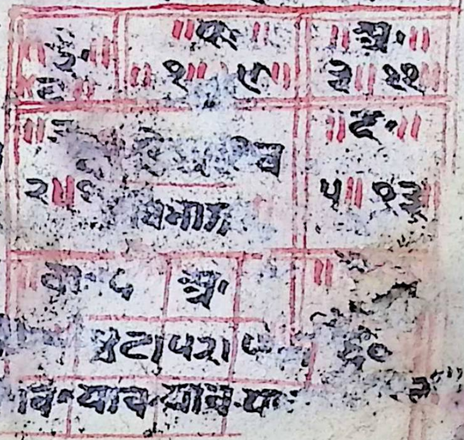

कोणेचपार्वती॥५२॥दशम्यांचद्वितीयायांमन्नरम्यांशिव[illegible]ग्रीरवेद्रप्रमा
वाष्टम्यांयोगिनीनिमुदाहृता॥५३॥टीका॥ग्रयमयोगि[illegible]कोदिक्का
स्त्राठेदिशानमेवासहोताहेसचक्रमेसमरुलीजिये॥५॥५[illegible]॥[illegible]२॥
योगिनीसुखदावामेपृष्टेवांछितदायिनी॥दक्षिणेधनहं[illegible]मेवा[illegible]
या॥५४॥टीका॥यात्रामेवाईयोगिनीशुभहेसुखकरेस्रो[illegible]होयमन
वांछितपूराकरे॥जोदाहिनेहोयतोधनकीहानिकरे[illegible]होयतोमृत्यु
करे॥इतियात्रायांयोगिनीफलम्॥मल॥मासस्यप्रतिपत्श्रेष्ठाद्वितीया ८
कार्यकारिणी॥आरोग्यदातृतीयाचचतुर्थीकलहप्रदा॥[illegible]मीचप्रियानित्यं
षष्ठीकलहकारिणी॥मद्यपानसमायुक्तासप्तमीसुखदासदा॥५६॥अष्टमीव्या
धिदानित्यंनवमीमृत्युदामता॥दशमीअमिलामस्य[illegible]कादशपिहेसदा॥
द्वादशीप्राणसंदेहासर्वसिद्धात्रयोदशी॥शुक्लावायदिवाहृ[illegible]वर्जनीया
चतुर्दशी॥५८॥पौर्णमास्यांचमावस्यांप्रस्थानंनैवकारयेत्॥तिथि[illegible]त्रयेचमा
संतेगृहात्गोतेदिनत्रयम्॥५९॥टीका॥इसपांचश्लोकनवेंअर्थसरलहे॥ग

मनको अशुभ पशुभ तिथिक होइहै ॥ तिनका फल समझ लीजियें तिथिक्षयमे मासांतमे और संक्रांति रविचंद्रग्रहणमैतीन दिनमानिये ॥ अैसे अशुभयोगमे गमन न कीजे ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ इति यात्रा निषेधः ॥ मूल ॥

अथ दिवस ढ्योढि दिवा सचलयेघटिका राहुचक्रं								
दिशा	पू॰	वा॰	द॰	ई॰	प॰	अ॰	उ॰	नै॰
घड़ी	३॥	५॥	२५	२४	१८॥	२१॥	१८॥	३०
यावत	यावत	यावत	याव	याव	यावत	यावत	याव	यावतू

अ [illegible] ग्रहाणै पुप्र श्रमासंस्थहितेशं ॥ पूर्वस्यां वामतो राहुर्नृपयोर्गर्षः दिशं व्रजेत ॥ यात्रायां दक्षिणे राहुः योगिनी वामतः शुभ ॥ [illegible] यमाख्याते चंद्रमा सन्मुखे शुभः ॥ ६१ ॥ टीका ॥ अब चौघटी राहुकी घ[illegible] दिशा को राहु दिनप्रति चलत है ॥ इसी चक्र में समझ लीजे ॥ जो चार पहर दिन का क्रम है ॥ सोई राहु को जानियें ॥ ६० ॥ यात्रा मैं राहु दाहिने शुभ है ॥ योगिनी वाई शुभ

अथ रात्रौ चलतघटिका [illegible] चक्र								
दिशा	पू॰	वा॰	द॰	ई॰	७	अ॰	उ॰	[illegible]
घटी॰	३३॥	३७॥	४१॥	४५॥	४८॥	५२॥	[illegible]	[illegible]
यावतू	याव	याव	याव	याव	याव	याव	[illegible]	[illegible]

हः॥ श्रोत्र पीठि दाहिने की शुभ म हः॥ युद्धादिक क्रूर कर्मे विषै श्रो॥ चंद्र शुभ मो॰
कर्मे के विषै सन्मुख दाहिने शुभ म हः॥ ६१॥ मूल॥ चंद्रश्च मे॰ ...दिक्रमे ए॰
वत्स ह्यं॥ मेषादिके पूर्वादि यांसन्मुखे दक्षिणे शुभः॥ ६२॥ टीका॥ अब चंद्रमा
जो है चारो दिशा कुं चलता ... मेषादिक राशि को
सन्मुख दाहिने सदा शुभ मे ... ६२॥ मूल॥ मेषे
च सिंहे धनपूर्व भागे वृषे च कन्या मकरे तु
याम्यां॥ मिथुने तुले कुंभ तु पश्चिमायां कर्के
लौ मीन च उत्तरेषु॥ टीका॥ मेषके चंद्रमा पूर्व

	पू॰	द॰	प॰	उ॰	
मे॰	१ वृ॰	२	मि॰ ३	क	४
सिं॰	५ क॰	६	तु॰ ७	वृ॰	८
ध॰	९ म॰	१०	कुं॰ ११	मी॰	१२

दिशा मै वसत है॥ वृषके चंद्रमा दक्षिण मै॥ मिथुन के चंद्रमा पश्चिम मे कर्के
के चंद्रमा उत्तर मै वास करत है॥ याही भांति तीनि तीनि आवर्त फिरते है॥ इति
चंद्रवासचक्रोदाहरणं॥ मूल॥ सन्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुखसंपदाः॥
पृष्ठतो मरणं चैव वामे चंद्रो धनक्षयः॥ ६४॥ टीका॥ सन्मुख चंद्रमा धनलाभ क
रै पीठ पीछे मृत्यु करै॥ दाहिने सुख करै बायें धनकी हानि करै॥ ६४॥ मूल

यामयुग्मे च रात्रौ च वामे पूर्वादिगो रविः ॥ यात्रास्मिन् दक्षिणो वामे प्रवेशे॰
ऽप्यकेऽर्क्यं ॥ ३५ ॥ टीका ॥ पहर राति रहे तें २ पहर दिन चढे लौ सूर्य पूर्व दिशा॰
रहता है ॥ पहर भर उपरांत दो पहर तक तीन पहर दिन चढे तलक दक्षिण
दिशा में रहत है ॥ तीन पहर उपरांत २ पहर पश्चिम में रहत है फिर पांच पह
र उपरांत वै पहर उत्तर दिशा में रहत है ॥ ऐसे प्रकार सूर्य चारों दिशा में चल
त है ॥ यो यात्रा में वाम दक्षिण शुभ है ॥ औ प्रवेश में पीठ सन्मुख शुभ है ॥ इति
रविविचार ॥ मूल ॥ मनुः १४ भानु १२ दिशा १० सप्ते: ८ रसं ६ वेदा ४ स्तन २
क्रमात् ॥ रविवारान्मुहूर्तोयं कुलिको निंदितः शुभः ॥ ३६ ॥ टीका ॥ अब कु
लिक योग कहते है ॥ रविवार को चौदहो १४ मुहूर्त कुलिक [illegible] है सो
मवार को बारहो १२ भौमवार को दशवो १० बुधवार को [illegible] यार
को छठो ६ शुक्रवार को चौथे मे ४ शनिवार को २ दूसरो [illegible]
ये ॥ मुहूर्त प्रमाण दुई घडी को कहत है ॥ सो प्रातकालते [illegible]
शुभ कार्य मे वर्जित है ॥ ३६ ॥ मूल ॥ गतानागाद्विशुणा [illegible]

शेषसाजंयुतश्चैकोसप्तशेषेप्रमस्थितं ॥ ६६ ॥ कालहो [illegible]
सौम्यफलप्रदः ॥ सूर्यशुक्रबुधश्चंद्रोमंदजीवबुधक्रमा [illegible] जस
त्ततवाद्गिण्येतत्क्रमात् ॥ शुभग्रहस्यशुभदोमहूर्तोनिष्ट [illegible] ॥
का ॥ प्रथमसातवारजेहै सोएकहीवारमेभोग्यहोतहै तो [illegible] कहे
तेहै ॥ सोजेसेशुभाशुभकार्यकोजोवारप्रसस्थहोइतिसका [illegible] दिलीजे
ये ॥ सूर्यउदयसोजेताघरीगतभईहोई तिनकोद्विगुणीकीजेतामेपभागदी
जे शेषबचेतोघटाइकेतामेंएकओरमिलायवै ॥ फिरउसमेसातकोभागदीजि
ये ॥ जोअंकबाकीबचेतोवर्तमानदिनसोसीधेक्रमसेंगनियें ॥ तोनहोरावर्ता
इयेंजेसेरविवारकोएकबचेतोसूर्यकी [illegible] शु·श·८ याहीप्रका
रवर्तमानदिनसोआदिदैकेगनिये याप्रकारकरिपहिलेसूर्योदयतेघरी २
पल २५ पर्यंतपहिलेवारकोफिरघडीचार ४ पल ८ यावत् [illegible] कोफि
रघरी ७ पल २० यावत् तासाछुटयेक्रमसों सू·शु·बु·चं·श·वृ·मं· ऐसेभोग्य·
मानहोतहै सोसमझलीजिये ॥ इतिमहूर्तेदेवताकालहोरानिर्णयः ॥ ६६ ॥

शी॰ टी॰ ई॥ ६९॥ अथ अष्टवादि प्रयोजन सर्वांक मुहूर्तम्॥ मूल॥ तिथिवारं च न
क्षत्रं नामाक्षर समन्वितम्॥ द्विविचल मिलितं रससप्ता८ भाजितम्॥ ६९
आरम्भे भवेद्धानि मध्यभ्रमे रिपोर्भयं॥ अन्तभ्रमे भवेन्मृत्युः सर्वांके वि
चारी भवेत्॥ ७०॥ टीका॥ पक्षकी परिवासे तिथि गनै जो तिथि होय ताको अंक
लीजिये॥ औ रवारको अंक रव्यादि गनिके लीजिये औ र अश्विनी ते गनिके न
क्षत्रांक लीजे औ र जाको मुहूर्त विचारियै॥ ताको प्रकार ले वाले प्रगट नामके
अंक ले करि सब अंक एकत्र कीजे॥ ताहि पिंडको त्रिगुण करिके छह ६ को
भाग दीजे॥ औ र उसी पिंडको त्रिगुण करिके सातको भाग दीजे॥ औ र ताही पिंड
कौ चौगुण करिकै॥ आठको भाग दीजे जो पहिले भाग मे [illegible] आवे तौ शत्रु ते
अंकपरे तौ कछु हानि होइ॥ औ र मध्य पिंड मे भाग शून्य [illegible] तौ शत्रु ते भय हो
य॥ औ र अंत के पिंड मे भाग शून्य परे तौ मृत्यु भय अथवा [illegible] कष्ट करे॥ औ
र आदि मध्य अंत तीनो भागन मे शेष अंक बचे तौ सिद्धि [illegible] जय सुख
को दाता है॥ ७०॥ इति सर्वांक निर्णयः॥ मूल॥ शशिभ्रमं [illegible] शेषं दिश [illegible]

यैप्रवाहे नहि किंचनापि ॥ प्रष्टुर्जीयस्याद्वयमानमात्मा [illegible] पूर्व वःविः [illegible]
मतं ॥ ७१ ॥ टीका ॥ यात्रामें चंद्रमाको स्वर होय तो शुभ है [illegible] हे ॥ औ
र सूर्यको होय तो विलंब होय कार्यमें ॥ और दोनो स्वर हो[illegible] शुभ नही है
तामें कार्य ना होय बायों स्वर चंद्रको दाहिनो सूर्यको सो जो पृछक व[illegible] और स्वर ना स्वर
एक होय तो चंद्रमाको कार्यसिद्धि होय शीघ्र ही ॥ और जैसे सूर्य[illegible] तो कार्य ना हो
य ॥ और पृछक पाठ पीछे होयके जो पृछे तो शुभ है ॥ और दा[illegible] शुभ है ॥ ७१ ॥
मूल ॥ दक्षिणे दुर्लवदाशुक्रो सन्मुखे हंति लोचने ॥ वामे पृष्टे शुभो नित्यं रौचयेच्चा
लमाशुभः ॥ ७२ ॥ टीका ॥ अब शुक्रको विचार कहते हैः जात्राके समये दाहि
ने शुक्र होय तो सुखको दाता है ॥ सन्मु ॥ सन्मुख होय तो नेत्रोमें पीडा होय ॥ और जो
बायें अरु पीठ पीछे होय तो कार्यसिद्धि है [illegible] ॥ और जो शुक्रके उदय अस्तमें यात्रा
करै तो शुभ है ॥ ७३ ॥ इति यात्रायां विचार[illegible] मूल ॥ पुष्येमादूपदायुग्मं मैत्रे श्र
वणाचाश्विनी ॥ हस्तोत्तरा मृगः स्वाती तथा श्लेषा च रेवती ॥ ७४ ॥ ग्राह्यानि भा
नि चैतानि क्रयविक्रयणो बुधैः ॥ चंद्रमा गौव जीव[illegible]वारा शकुनी मन्तमं ॥ ७५

शी॰टी॰ टीका॥ पुष्य॰ पूर्वाभा॰ उत्तराभा॰ ऽनु॰ श्र॰ ह॰ मृ॰ स्वा॰ उत्तरा॰ ऽश्वि॰ श्ले॰ रे॰ येन
नक्षत्रमसलेवेकों पंडितन शुभकहेहै निश्चैकरकै॥ और सोमशुक्र गुरु और
उत्तम शकुनी विचारकैं सकल वस्तु लीजे वेचिये गाई भैंस घोडा इत्यादिसमे
त॥ ७४॥ इतिक्रयविक्रयः॥ मूल॥ धनिष्ठा पंचके स्याद्यत्र एकाष्ठादिसंग्रहे
सा जायाद्दक्षिणो दिग्यात्रा गृहाणां छादनं तथा॥ ७५॥ टीका॥ धनिष्ठा आदिदै
पांचनक्षत्रकों पंचक होत है॥ तामें तृण काष्ठादिककों संग्र[illegible]नाकीजे॥ और
दक्षिण दिशाको नाचलिये नाघर छवावे नकरावे॥ ७५॥ मूल॥ तैलाभ्यंगे रवे
तापः सोमे सोभा कुजे मृती॥ बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुः[illegible]सर्वं॥ ७६॥ र
वौ पुष्पं शनेः प्रवीं भौमवारे च मृत्तिका॥ गोमयं शुक्रवारे च [illegible]जोन दोषभा
क्॥ ७७॥ टीका॥ जो रविवारकोतेललगावेतौ संताप होय [illegible]को [illegible]भा॰
भौमकों कष्ट होय बुधकों धन लाभ होय शुक्रकों दुख [illegible]
षपावे गुरुवारको हानि होय रविकोंतेलमें फूल डालिकें [illegible] रवा [illegible]
मंगलकों मृत्तिका शुक्रकों गोबरकेयोग करतेललगावे [illegible] ए २९॥

इतितैलाभ्यंगः ॥ मूल ॥ हस्तत्रयेवुसयुगोमघार्यमापुष्येधः ... वार २७
मूलान्त्राधाहयरेवतीषुस्थिरेषुलानेषुवधुप्रवेशः ॥ ... ॥ २६ ॥
रो॰मृ॰म॰पुष्य॰ध॰श्र॰उ॰३॰मू॰ऽनु॰श्वि॰रे॰ इतननक्षत्रनमे ...
शकरा इयेस्थिरलग्नोकेविषे ॥ २८ ॥ इतिवधूप्रवेशः ॥ मूल ... ध्येषा
तिरोहिण्योश्चपुनर्वसुः ॥ रोहिणी ॥ रोगीस्नानंरेवतीचवर्ज्यं ... त्रयं ॥ ...
रिक्तातिथौचरेलग्नोवारेचरविभौमयोः ॥ स्नानंचरोगी ... क्तद्विजभोज
नसंयुतं ॥ ८० ॥ टीका ॥ श्ले॰म॰स्वा॰रो॰पुन॰उ॰३ इतननक्षत्रमेरोगीकोस्नानव
र्जितकरै ॥ ७९ ॥ औररिक्तातिथिऔरचरलग्नऔररविभौमवार ॥ ६ ॥ ८ ॥ १२
इनचंद्रमामेंरोगीकोंस्नानकरावेतोवक्तकेएहै ॥ ब्राह्मणकोंभोजनकरावे
८० ॥ इनमुहूर्तेमेंस्नानतेसाधककरिलग्नकेयहविचारिये ॥ इतिरोगीस्नानं
मूल ॥ आनंदःकालदंडश्चधूम्राद्धोथप्रजापतिः ॥ सौम्यध्वांक्षोध्वजश्चापि
श्रीवत्सोमज्रलोकुन्तः ॥ ८१ ॥ छत्रमित्रंमानसाख्यंपद्मारख्यंलुंबकलया ॥ ३
सातमृत्युकाणाख्यसिद्धशाभपशुभौमृत्तः ॥ ८२ ॥ मुशलंगदमातंगराक्षसश्च

चरस्थिरः॥ वर्द्धमानश्चविज्ञेया श्चराधं शतिरित्यमी॥ २३॥ फलत्वनामस
दृशो योगो दैवज्ञैर्भाषिताः॥ अश्विनी रविवारे च योगो ह्यानंद संज्ञकः॥ २
४॥ मृगशीर्षे शीतरश्मिश्लेषायां क्षितिनंदने॥ बुधे हस्ते नुराधा च देवरा
जपुरोहितः॥ २५॥ भार्गवे चोत्तराषाढो शनौ शतभिषा तथा॥ तदानंदाद्य
योगास्यात्कालदंडादयः क्रमात्॥ २६॥ टीका॥ अब आनंदादियोगादिकक
हे है सोवार और नक्षत्र मिलकरके होत है॥ अश्विनी और रविमिलके आ
नंदयोग होते है॥ मृगशिर और सोमवारको श्लेषा और [illegible]मंगलवारको हस्त
बुधवारको गुरुवार अनुराधासो शुक्रवार उत्तराषाढ से और शतभिषा श
निवारको इसीभांत आनंदयोग होत है॥ इसीरीतसे सब [illegible] मिलीजै जैसा
नामजिसयोग होतहै सोई फलजानिये॥ उत्तममध्यमफल [illegible] जानना है॥ अ
व आनंदादियोगसंज्ञा॥ आनंद १ कालदंड २ धूम्र ३ [illegible]लिः ४ सौ
म्य ५ ध्वांक्ष ६ ध्वज ७ श्राधिट ८ श्रीवत्स ९ वज्र १० मुद्गर ११ छत्र [illegible] १२ मित्र
१३ मानस १४ पद्म १५ लुंबक १६ उत्पात १७ मृत्यु १८ काण १९ [illegible] २०

व
वारे
भौमे

आयु २१ शुभ २२ अमृत २३ मुशल २४ गद २५ राक्षस २६ चार २७ हि[illegible] २८
इन अठाईसमे जो विशेष करि आधान है सो कहत है ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६
मूल ॥ हस्तसूर्ये मृगो सोमे मैं तथाश्विनी ॥ वुधे मैत्रे गुरौ पुष्ये [illegible] सूर्ये रवे ॥
२७ ॥ रोहिणी रविपुत्रस्य सर्वेसिद्धिप्रदायकः ॥ अमावस्यतो [illegible] योगाः प्रो-
क्ताः पुरातने ॥ २८ ॥ टीका ॥ अव अमृतसिद्धयोग कहत है [illegible] कालकार्यसि-

र॰	चं॰	मं॰	बु॰	व॰	शु॰	श॰	वार
ह॰	मृ॰	अश्वि॰	अनु॰	पु॰	रे॰	रो॰	नक्ष
अम॰	अम॰	अम॰	अम॰	अम॰	अम॰	अम॰	सिद्धि

द्धी सिद्धिका [illegible] कहै [illegible] श्लोक
की उत्तिमा फिकवा चक्रमे समझली
जियै ॥ २७ ॥ २८ ॥ मूल ॥ मघादित्ये वि
शाखेंदुः भौमे चार्द्रा नलगुरौ ॥ वुधे मूले
त्रिधे शुक्रे यमघंट शनैकरे ॥ २९ ॥ टीका ॥ रविवारको मघा नक्षत्र होय तो य
मघंटयोग कहिये ॥ सोमको विशाखा भौमको आर्द्रा वुधको मूल गुरुको कृत्ति
का शुक्रको रोहिणी शनिको हस्त होय तो यमघंटयोग कहिये तामें शुभका
र्य वर्जित है ॥ २९ ॥ मूल ॥ नंदा सूर्ये च भौमे च भद्रा भार्गव चंद्रयोः ॥ वुधे जया

शी.टी. गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदाः ॥५०॥ टीका ॥ रविसोमवारको नंदा तिथि होय तो मृत्युयोग जानिये ॥ शुक्रसोमवारको भद्रा तिथि होय तो मृत्युयोग होयता है ॥ बुधवारको जया तिथि गुरुवारको रिक्ता शनिवारको पूर्णा तिथि होय तो मृत्युयोग जानिये ॥ शुभकार्यके विषै मृत्युको दाता है ॥५०॥ मूल ॥ अंधाक्षं चिपटाक्षं च काणाक्षं दिव्यलोचन । गणये[illegible]रोहिणीपू[illegible]ः सप्तवारमनुक्रमात् ॥५१॥ मू ॥ टीका ॥ अंधक्ष चिपट काने सुलोचन चार भांतिके नक्षत्र होय है ॥ रोहिणी आदि दे क्रमते सातवार गिनिये ॥ जो किसीकी वस्तु जाती रही है ताके विचारमें कहे है सो चक्र धरा है तामें समझ लीजिये ॥ ५ ॥ मूल

रो.	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	अंधेलोचन
मृ.	श्ले.	ह.	अनु.	उ.	श.	अ.	चिपट
आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	कानलोचन
पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	सुलोचन

अंधे चलमते [illegible] मंदे चैव दिनत्रयम् ॥ काणे [illegible] मासमेकं तु सनेत्रे नैव दृश्यते ॥ ५२ ॥ टीका ॥ जो अंधे नक्षत्रमें वस्तु जाय तो जल्दी मिलै दिव्यलोचनमें जाय तो उ

नमेमिले॥ रत्नंधादिनक्षत्राणां॥ जोकानेमेजायतो ३ दिनमेदिनमेमिले स
लोचनमेजायतोनाहीमिले॥ १॥ मूल॥ पुनर्वसुमृगाश्वाज्ञाअश्वमेत्रकरं
त्तथा॥ पूर्वोषाढोतथार्द्रायामूलंदक्षिणचारिणः॥ ५३॥ कृ[illegible]कारोहिणीपुष्यो
चित्राश्लेषाचरेवती॥ शतंधनिष्ठाश्रवणोनवमध्यमचा[illegible]॥ ५३॥ ज्येष्ठा
नीभरणीस्वातीविशाखाफाल्गुनीद्वयम॥ मघाभाद्रपदा[illegible]नवचोत्तरचा
रिणः॥ ५४॥ टीका॥ पुन·मृ·अश्वि·ज्ये·ऽनु·ह·पू·षा·उ·षा·मू· ये अठाइननक्षत्रपू
र्वदिशातेदक्षिणकोचलतेहै॥ ऽश्वि·भ·स्वा·वि·पू·फा·उ·फा·म·पू·भा·उ·भा·
येनवपूर्वतेउत्तरकोचलतेहैः॥ ५५॥ इतिनक्षत्रप्रचारः॥ मूल॥ त्र्यमतीन्द्रदिशो
वत्सो मासानांचत्रिकंत्रिकं॥ भाद्रोभाद्रपदंकृत्वासर्वतोदिशः चतुष्टयं॥ ५६॥
यात्राविवादसंबंधंगारंचारहहमेयोः॥ मृतेमिलनंयस्संवत्सस्याभिमुखंत्य
जेत्॥ ५७॥ टीका॥ इंद्रदिशाजोहैपूर्वतासेजोदिदेवत्सकहतेहै॥ वत्सके
रूपयोगतीनमहीनाएकदिशामेरहतेहैः॥ भादोकेमहीनेतेतीनमहीनापहि
लेपूर्वदिशामेरहतहै॥ औरअगानतेउमहीनादक्षिणमेरहतहै याभांतिक्र

दृष्टं दृष्ट च फाल्गुनो गहसेडतम

टी·टी· मसो विशाखास्तजानिये ॥ वत्सयोगाके सन्मुखयात्रा श्रीमविवादसंबंध घर कासार आरोपणं राजासेमल्ला कातकरनी. स्त्रीस्युरुष इतने कार्य ना कीजे ॥ गायेस्रोरूपी उपरसु नहः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ मूल ॥ त्रयंयमेष्वदाने पराविधौ पंच मगात्रयं ॥ एकमात्रे चन त्रत्रे चत्वारि च पुनर्वसौ ॥ ५८ ॥ पुष्येत्रयं रसः साप्येम घायां मा निपंचच ॥ १ ॥ चित्रास्वातौ रेकमेकंनन्रु धं चहिदैवतं त्रयंस्या·दनु· राधा च ज्येष्ठायां चत्रयमस्मृताः ॥ २ ॥ मूले हस्ता चत्व धं चपूर्वाषाढोत्तथोत्तरे त्रयं चाभिजितश्रोत्रं श्रवणे चत्र येतथा ॥ ३ ॥ धनिष्ठायां च चत्वारः शतंशतभि षां मुच ॥ त्रयं त्रयं भाद्रयोग्वत्रावि शेद्विपचोतके ॥ ४ ॥ टीका ॥ श्रवत्रवाइसनक्ष त्रजो जितने जितने नक्षत्रके ऊँडसो उदयक्ष्माकाशमे सो [illegible] रे समझलीजि

अ	भ·	कृ	रो	मृ	आ	पु	पु	श्ले	म	पू	उ	ह	चि	स्वा	वि	अनु	ज्ये	मू	पू	उ	[illegible]	श्र	ध	श	पू	उ	रे
२	३	५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३	११	४	८		६	६	१०	२	२	२२

ये ॥ ५ ॥ शीतन नक्षत्र प्रचारः ॥ मूल ॥ लग्नेष्टमव्ययेमृत्यै देवत्र पाप [illegible] भागौ ॥ श्राकाशःदे वी चंद्रेलग्नेषष्ठेष्टमेव्यये ॥ ५ ॥ वादशी दशमेमौमे डाकिनी दुष्ट [illegible] स्मृताः ॥ घन दोषो

भवदोषोद्वादशेमस्त्रमेवुधः ॥६॥ यामित्रेद्वादशेजीवे देवदे निम्नायके ॥ अष्टे
व्यये दैत्यपक्षोजलदेव्याश्च दूषणं ॥७॥ शनैश्चरे व्यये चाष्टे स्मादामवातयः
यामित्रेद्वादशेराहौ कुगतिर्जातिदूषणं ॥८॥ पितृदोषो भवे धाहानिति
वर्णितं ॥ वृषेगगाने देव्याश्च ज्वरकुलस्त्रनेत्ररुक ॥९॥ मिथुने महामायादो
षो वेलाज्वरोनिलः ॥ कर्कचशाकिनी दोषो हास्यरोदनमे ॥१०॥ सिंहेज
ले प्रेतदोषो द्विवाशीतिज्वरारुचिः ॥ ग्रहदोषश्च कन्यायां क्रोधालस्यहतीव्रे
याः ॥११॥ क्षेत्रपालभवे दोषो तुले संतानपीडनं ॥ वृश्चिके नागदोषश्च ज्वाला
देहे कुबुद्धिता ॥१२॥ चापे देहभवे दोषो ज्वर शोको ॥ मकरे चंडि
का दोषो देहभंगो ज्वरोनिलः ॥ मलिन प्रेतदोषश्च कुंभे देहस्य पीडनं ॥ मीने
चापिगाना दोषोज्वरोर्जजालदर्शनं ॥१४॥ लग्नेधर्मे तृतीये च षष्ठेपापग्रहे य
दा ॥ हतोगारे जलशस्त्राग्निरस्यैव सर्ववंशजः ॥१५॥ शनौ जले कुजे शस्त्रे युतेस्यै
सर्ववंशजः ॥ राहु विक्रमतोनष्टः शांतिपूजाद्विजार्चनैः ॥१६॥ लग्ने गोत्रदोषोपि
परदेवैरपीज्यते ॥ शत्रुक्षेत्रे शत्रुदोषो मित्रक्षेजलसंभवः ॥१७॥ टीका ॥ जोस

शी·टी· षेलग्नमैहोय अथवा॥८॥१२॥होयतौ क्षेत्रपालकोदोषजानिये॥जवशरी
रमैव्यथापावै तवक्षेत्रपालकापूजनकरैतौशांत होय॥अरजोजन्मकाल
मैंचंद्रमा॥१॥६॥८॥१२॥होयतौआकाशदेवीतदोषकरिकरहोय॥५॥अरजन्
मकालविषैजोमंगल॥१०॥१२॥होयतौडाकिनीदोषकहिये अरजोबुध
७॥१२॥होयतौवनदेवीदोषजानिये॥१०॥६॥जोवृहस्पति॥७॥१२॥होयतौ
देवदोषजानिये अरजोशुक्र॥७॥१२ होयतौजलदेवीकादोषहोय॥७॥जो
शनिश्चर॥७॥१२॥होयतौग्रामवामकोकरै अरजोराहु॥७॥१२॥होयतौकु
गतिहोय अपनीजातहीसेदोषउपजै॥१०५॥ अरजोमेषलग्नमेजन्महोय
तौ अथवायवृषरै॥ अरजोसिंहलग्नहवरैतौ पितृदोषहोय [illegible] होयकुरूप
अरजोवृषमैजन्महोयतौ आकाशदेवीतदोषहोयज्वरहोय॥उलटाभया
नकस्वप्नहोइ॥जोककलग्नमैजन्महोयतौ॥नेत्रमैपीडाकरै॥ मिथुनलग्नमै
जन्महोयतौ जोनिश्चयस्वरूपरैतौ महामायाकादोषहोय ६ [illegible] ज्वरहोय:
जोककलग्नमैजन्महोयतौ शाकिनीदोषतै हँसैरोवै॥ अतमोलक्षण [illegible]

जो सिंहलग्नमेंजन्महोयतो प्रेतकीपीडाहोय दिनमेंज्वरहोयरात्रीकों ॥ जोहि
जो कंन्यामेंजन्महोयतो देहदोषहोइ ॥ देहमेंपीडा ॥ क्रोध [illegible] सरीकी
मथाहोइ ॥ ११ ॥ जो तुलामेंजन्महोयतो देत्रपालते पीडाकरे ॥ वृश्चिकमें
जन्महोयतो सर्पतेभयहोइ ॥ देहमेंपीडाजरनिउपजेकुष्ठहोय ॥ १२ ॥ ध
नलग्नमेंजन्महोयतो देहदोषज्वरशोकपेटपीडाहोय ॥ मकरलग्नमेंजन्म
होयतो चंडिकातेदोषहोइ ॥ अंगभंगहोइ अमलज्वरहोइ ॥ कुंभलग्नमेंज
न्महोयतो प्रेतदोषकरै ॥ मलीनशरीररहैपीडाकरै ॥ जोमीनमेंजन्महो
यतो योगनीतेदोषहोय महाज्वरहोय ॥ ११४ ॥ औरजो इनस्थाननमें १२
८ ॥ ३ ॥ ६ ॥ पापग्रहहोयतो विषपीकेमरेकी जलमेंडूमरेकी शस्त्रघातहो
इ वा ही कुलवालेसे ॥ ११५ ॥ जो इनहीस्थाननमें शनिहोयतो जलमेंवडे
मंगलहोयतो हथियारनसेमेंरे ॥ औरसूर्यहोयतो निजवंशवालेकेहाथ
कोविषसेमरै ॥ औरराहुहोयतो उलटीप्रकृतीखगावेउपजे चोरी औरकु
मार्गअनेककनकरैजुवाखेले ॥ जोकेतुग्रहहोयतो ब्राह्मणकिपूजाकरेतो

मु॰चि॰ संतानसुषरी होई ॥ १२६ ॥ जो ष देत्री आरिष्टग्रह होय तौ घर के अथवा
गोत्री जनत दोषकरै ॥ जो पराये देव मै दूषित ग्रह होय तौ परमनुष्यजनित
दोषकरै ॥ जो शत्रु देत्री ग्रह होय तौ शत्रुजन जनित दोष होई ॥ मित्रष
जन बांधवादिकन कौ शत्रुकरि जानै ॥ १२७ ॥ इति दोषज्ञान ॥ मूल ॥ अ
द्वेसे चाश्विनी हस्त मूलं पुष्यो नरात्रयं ॥ सिद्धियोगो धनिष्ठा च तिथि र
ष्याष्टमी तथा ॥ १२८ ॥ टीका ॥ रविवार को ॥ अ॰ह॰मू॰पुष्य॰उ॰३ ध॰ इन नक्ष
त्रन मै कोई होय तौ औ रखष्टमी तिथि होय तौ सिद्धियोग होय ॥ उत्तम कार्य
कीजै ॥ इति सिद्धियोग ॥ मूल ॥ सूर्ये विशाखा भरणी ज्येष्ठा मैत्र मघा नथ्या
चतुर्दशी द्वादशी च विना सप्तमी तिथी ॥ १२९ ॥ इति कु[illegible] ॥ [illegible] ॥ सोमे
पुष्याभिराधा च श्रवणो रोहिणी मृगः ॥ नवमी द्वादशी [illegible] सिद्धियोग
श्च कीर्तिताः ॥ इति सिद्धियोग ॥ मूल ॥ चंद्रे चित्रा विशाखा [illegible] स्वाती [illegible]
बुधैः ॥ एकादशी तथा षष्ठी वर्जनीया त्रयोदशी ॥ १२२ ॥ टीका ॥ सोम को ॥
चित्रा ॥ वि॰पू॰षा॰उ॰षा॰ होय तौ औ ११ ॥ ६ ॥ १३ होय तौ कुयोग होई ॥ [illegible] ॥

इति कुयोगाः॥मूल॥सोमे मूलाश्विनी सर्प्ये मृगोश्चोत्तरभाद्रपात्॥ दृश्ता
ष्टमी तृतीया च सप्तमी च त्रयोदशी॥२२३॥टीका॥सोमको दिन मू॰श्वि॰
श्ले॰मृ॰उ॰भा॰॥८॥७॥३॥१३॥ये तिथै होय तो सिद्धियोगः॥मूल॥ दि॰धाशतभि
षाद्रौ च धनिष्ठा पूर्वभाद्रपात्॥मघा चोत्तराषाढे च विती [illegible] दशमी कुजे॥२३
टीका॥मंगलको॥श॰आ॰ध॰पू॰भा॰म॰उ॰षा॰॥२॥१०॥ये [illegible] दिन और तिथै॰
होय तो कुयोगाः॥२२३॥मूल॥बुधानुराधा पुष्यश्रवणे [illegible] रोहिणी मृगाः
द्वादशी सिद्धियोगो च द्वितीया सप्तमी तिथिः॥२२४॥टीका॥बुधको [illegible]
श्र॰रो॰मृ॰॥१२॥२॥७॥ये तिथै सिद्धियोगः॥२२४॥मूल॥बुधे मूले धनिष्ठा
च रेवती चाश्विनी मृगाः॥तृतीया नवमी चाथ [illegible] प्रतिपत्तिथिः॥२२५॥टी
का॥बुधको॥मू॰ध॰श्वि॰रे॰मृ॰॥३॥९॥१॥ये तिथै होय तो कुयोगहः॥२५॥मूल
इति कुयोगाः॥गुरौ च दशमी पंच पौर्णमास्यां विशेषतः॥पौष्णाश्विन्यानुराधा
चोत्तरात्पुष्यपुनर्वसुः॥२२६॥टीका॥जो बृहस्पतिको [illegible] तिथि होय तो॥५
१०॥१५॥नक्षत्र॥श्वि॰अनु॰पुष्य॰रे॰पुन॰होय तो सिद्धियोग का हियै॥२२६॥इति सि

द्धियोगः॥मूल॥जीवे शतभिषाद्रौ च कृत्तिकोत्तरफाल्गुनी॥ विधे मघा अष्टमी
षष्ठी चतुर्थी च विवर्जिताः॥१२७॥टीका॥जो गुरुवार को शतभिषा॥ आ॰कृ॰
उ॰फा॰रो॰म॰॥ ४॥ ६॥ ८॥ ये तिथि हो य तो कुयोग है॥१२७॥इति कुयोगः॥मूल॥
शुक्रे चित्रायमा एवो श्रवणाश्च पुनर्वसुः॥ सिसा चैका दशी षष्ठी प्रतिपच्च त्र
यो दशी॥१२८॥टीका॥शुक्रवार को चित्रा म॰उ॰फा॰रे॰श्र॰। प्रि॰पु॰॥११॥ ६
१॥१३॥ये तिथि हो य तो सिद्धियोग है॥१२८॥इति सिद्धियोगः॥ भार्गवे रोहि॰
णी पु ष्या ज्येष्ठाश्लेषा मघा तथा॥ द्वितीया सप्तमी चापि वर्जनीया सदा बुधैः
१२६॥टीका॥शुक्र को रो॰पुन॰ज्ये॰श्ले॰म॰॥ २॥ ७॥ ये तिथि हो य तो कुयोग है॥
इति कुयोगः॥मूल॥शनौ च रोहि णी स्वाती श्रवणा पूर्व फाल्गुनी॥ मघा च न
वमी सिता चतुर्थी च त्रयो दशी॥१३०॥टीका॥शनिश्चर को रो॰स्वा॰श्र॰पू॰फा॰
म॰॥ ९॥ ४॥१३॥ ये तिथि हो य तो सिद्धियोग कहिये॥१३०॥इति सिद्धियोगः॥
मूल॥शनौ हस्तोत्तराषाढा चित्रा चोत्तरफाल्गुनी॥ रेवती च मघा वर्ज्यो ति
थी षष्ठी च सप्तमी॥१३१॥टीका॥शनि को ह॰उ॰षा॰चि॰उ॰फा॰रे॰मघा॥ ६

७॥ येतिथि होय तौ कुयोग जानियै॥१३१॥ तामैं शुभ कार्य नहीं कीजियै॥ इति
नक्षत्रादितिथिवारशुभाशुभयोगाः॥ मूल॥ चरं चलं स्मृतं स्वाती पुनर्वसुः
श्रुतित्रयं॥ क्रूरमुग्रं मघापूर्वोत्तरतीयं भरणी तथा॥१३२॥ ध्रुवं स्थिरं संज्ञितं हैषं
रोहिणी चोत्तरात्रयं॥ तीक्ष्णो दारुणो श्लेषा ज्येष्ठार्द्रा मूलमेव च॥ लघुक्षिप्रं
स्मृतं पुष्यो हस्तोश्विन्यभिजित्स्मृतं॥ मृदु मैत्रं स्मृतं चित्रानुराधा रेवती मृगः
१३४॥ मिश्रं साधारणं प्रोक्तं विशाखा कृत्तिका तथा॥ नक्षत्रेष्वेषु कर्माणि ना
मतुल्यानि कारयेत्॥१३५॥ टीका॥ अब अठाईसो नक्षत्र की सात संज्ञा जानि
यै सो जुदी जुदी कहते है॥ तामै प्रथम स्वाति· पुन· श्र· ध· श· इनकी चर चलसं
ज्ञा है॥ इनमाह चर कार्य सब कीजियै २ और पूर्वा ३ म· भ· ये क्रूर उग्र संज्ञक है॥
इनमै क्रूर कठिन कार्य कर्तव्य है॥ और रो· उ ३ ये ध्रुव स्थिर संज्ञक है॥ इनमै
स्थिर कार्य कर्तव्य है॥ और ज्ये· श्ले· आ· मू· ये तीक्ष्ण दारुण संज्ञक है॥ इनमै ती
क्ष्ण कार्य करियै ४ और ह· पुष्य· अश्वि· अभि· ये लघु क्षिप्र संज्ञक है॥ इनमै स
ब खेल प्रयोजनादिक कार्य कर्तव्य है॥ और चि· अनु· रे· मृ· ये मृदु मैत्र संज्ञक है

शी॰टी॰ इनमेंकोमलकार्यमित्रादिसंबंधकर्तव्यहै ६ औरवि॰कृ॰येमिश्र[illegible]साधारण
संज्ञकहै ॥ इनमैंसाधारणसामान्यकार्यकरिये ॥ औरयेसबसंज्ञाहीक्रमतेच
क्रमैंसमझलीजियै ॥ जिसकाजैसानामहैतासमे
तैसोकार्यकीजि
यै ॥ इतिनक्षत्रसं
ज्ञा ॥ १३२ ॥ १३३ ॥
१३४ ॥ मूल ॥
शनिचक्रंनराकारं
लिखेद्यत्र शनिर्भवेत् ॥ तन्नक्षत्रंमुखे
दत्त्वायावन्नामनक्षत्रं ॥ १३५ ॥ तावद्विचार
येतत्रतेषुजन्मशुभाशुभम् ॥ एकंमुखेचनक्ष
त्रेचत्वारिदक्षिणेकरे ॥ त्रयंत्रयंपादयोश्चचलामहस्ते[illegible]त्रयं ॥ [illegible]त्रिहृदयेन
वेहहृदिपंचगुह्यद्वयं ॥ १३८ ॥ मेकैकदक्षिणेकुदो १ नद[illegible]शाक[illegible]च ॥ हृदि[illegible]

शतनक्षत्राणिमध्यसंज्ञाचक्रम्

स्वा॰	पु॰	श्र॰	ध॰	लघुक्षिप्र॰ ५
म॰	पफा॰	पुना॰	[illegible]	[illegible]चरचल॰ १
रो॰	उफा॰	[illegible]	[illegible]	[illegible]
श्ले॰	अषा॰	[illegible]	[illegible]	क्रूरस्थिर ३
ह॰	पुष्य॰	[illegible]	[illegible]	तीक्ष्णदारुण ४
चि॰	अनु॰	[illegible]	मृ॰	[illegible]मैत्र ६
वि॰	कृ॰	[illegible]	०	[illegible]साधा॰ ७

रेवदा तिणे हस्ते लाभे वामे च रोगयला ॥ ३९ ॥ हृदि श्री मस्त [illegible]
लं ॥ नेत्रे सुखं गुदे मृत्युः कुक्षौ शोक विचिंतयेत् ॥ ४० ॥ ज [illegible] ःसु
ल्याणे जो यते सदा ॥ अमेषे व विचारणा ॥ णिवाहनानि व ह [illegible] का ॥
अव शनि चक्र का विचार कहते हैं ॥ नर के सा आकार व [illegible] त्र ए
र शनि होय तानक्षत्र मे जन्म के नक्षत्र लों गिनै ॥ फिर शनि [illegible] दे
ग मे सव नक्षत्र स्थापत करै ॥ जहां जाके जन्म का नक्षत्र परै तं [illegible] ानि
ये १ नक्षत्र मुख मे धरै ४ दाहिने हाथ मै तीन ३ तीन ३ दोनो [illegible] धरै
ये हाथ मे चार ४ ललाट मै तीन ३ दो दो २२ नेत्रन मे हृदे मै ५ [illegible] मे दो
२ दाहिने कूख मे एक क्रम पूर्वक धरिये जो मुख मे जन्म आवे तो हानि करै ॥
दाहिने हाथ मे परै तौ लाभ होय ॥ वाये हाथ मे परै तो रोगी होय हृदे मे परै तो
लक्ष्मी प्राप्त होय माथे मे परै तो राज परिपालै ॥ पाय मे परै तौ भ्रमता फिरै ॥ ने
त्र मे परै तौ सुलक्षण है गुदा मे परै तौ मृत्यु होय कोष मे परै तो शोक होय ताके नि
मित्त जप र जाव्रस भौज दान पीपर से वा करै ॥ जव कल्याण सुख प्राप्त होय श्री

पी.टी. स्थनेकविचारवाह माहिकनके चोरहै॥ तिनहीकाफलशुभाशुभहोतहै॥
२३६॥ २३७॥ २३८॥ २३९॥ २४०॥ २४१॥ इतिशनिचक्रनिर्णय॥ मूल॥ मेषेश
नौगुर्जरेपुष्यनासेचार्बुदेवृषे॥ मिथुनेजायतेपीडास्थलेमूलस्थलीपुच
२४२॥ कर्केकाश्मीरेवा आशनकप्रस्थेमगाधिपे॥ शनैश्चरेचकेनार्यामाल
वायांतिसंक्षयं॥ २४३॥ तुलावृश्चिकचापेषुयाहिजातिशनैश्चरः॥ नववर्षेति
तदामेघाःपृथ्वी दुर्भिक्षपीडिता॥ २४४॥ दुर्भिक्षंमकरेकुंभेजायतेवहुधा
शनौ॥ मीनेचसर्वेलोकानांदुर्भिक्षंलक्षयोभवेत्॥ २४५॥ टीका॥ जबमेषरा
सिकाशनिश्चरहोयगुजरातदेशमेपीडाकरै॥ वृषकाहोयतौ [illegible] नेत्त
त्रअर्बुददेशकोपीडाहोय॥ मिथुनकाहोयतौमूलस्थलीदे [illegible] हुतै
कर्ककाकाश्मीरदेशमेंपीडाकरै॥ सिंहकाहोयतौइंद्रप्रस्थ [illegible]
रै॥ कन्याकाहोयतौमालवदेशमेंपीडाकरै॥ वृश्चिक [illegible]
मेघपीडावरषै॥ पृथ्वीदुर्भिक्षकरकैपीडितहोय॥ जो [illegible] नवीसठांली
अन्नमत्ताविकै॥ मीनकाहोयतौसंपूर्णपृथ्वीमेंकाल [illegible] ॥२४५॥ ग्रंथमुक्त मुं

त्ती ॥ १४२१ ॥ २५ ॥ इति शनि वासरफलम् ॥ मूल ॥ यत्र मा[illegible] सोमकवीर्य्याः
चसततं ॥ दुर्भिक्षं तत्र भंगं च तदा लं च भयं स्वयं ॥ १४६ ॥ टीका [illegible] मंगलका येसे
वर विवार पर दत्त भंग होय महा भय होय ॥ १४६ ॥ [illegible]
मूल ॥ सोमस्य पंच वारास्तु यत्र मासे निरंतरं ॥ धनधान्यस[illegible]
मेदिनी ॥ १४७ ॥ टीका ॥ जो महीने में पांच सोमवार परे तो धन[illegible]
होय पृथ्वी आनंद करै ॥ १४७ ॥ इति पंच चंद्रवासरफलं ॥ मूल ॥ य[illegible]सेभंग
लं च जायते पंच वासराः ॥ रक्तेन पूरिता पृथ्वी तत्र भंगा लतं भवेत् ॥ १४८
टीका ॥ जिस महीने में पांच मंगलवार होय लोहसे[illegible]जे औरत
त्र भंग होय ॥ १४८ ॥ इति पंच भौमफलं ॥ मूल ॥ बुधस्य पंच वारा[illegible] जायते च नि
रंतरं ॥ प्रजानां सुखमुत्पन्नं दुर्भिक्षं च प्रजायते ॥ १५० ॥ जा मास में पांच बुध
होय प्रजा सुखी होय ॥ १४९ ॥ इति बुधफलम् ॥ मूल ॥ यत्र वारे पंच वारा जा
यते च बृहस्पती ॥ विग्रहे पश्चिमे देशे पीडायुक्तं च जायते ॥ १५० ॥ इति ॥ टीका
जा मास में पांच गुरुवार होय तो पश्चिम दिशा में विग्रह होय व पीडा युक्त होय

शी॰टी॰ १५०॥इतिपंचगुरुवारफलम्॥मूल॥शुक्रश्चपंचवाराश्च यत्र मासे भवंतिहि
प्रजावृद्धिसमिंदं चसुखं तत्र प्रवर्त्तते॥१५१॥टीका॥जा मास मैं पांच शुक्रवा
र परै तौ प्रजा की वृद्धि होय अन्न उपजै॥१५१॥इतिपंचशुक्रफलं॥मूल॥श
नौवारेयदापंचपातालेकंपतेफणी॥ईशानदेशभंगाश्च वह्निदाहो महर्घ॰
ता॥१५२॥टीका॥जा मास मैं पांच शनिवार परै तौ पाताल विषै शेषनाग कां
पैं ईशान देश भंग होय अग्निदाह दाह होय अन्न अकरो होय॥१५२॥इति
पंचशनिफलं॥द्वापकमासपंचपंकवारफलानि॥मूल॥अंगुल्यो विंशतिस्सू
र्य शंकु सोमे च षोडश॥कुजे पंचदर्श गुल्मो बुधवारे चतुर्दश॥५३॥त्रयोद
श गुरौ वारे शुक्रे द्वादश कीर्तिताः॥शंकुमलेयदाछाया मन्वा न्ते च प्रजाय
ते॥५३॥तदा चाभिजित ज्ञेया घटिकैका स्मृता बुधैः॥ [illegible] सर्व [illegible]
सिद्धि योति कृतानि च॥१५६॥जाते भिजित राज्यस्य व्यापारे सिद्धि [illegible] मध्ये
क्रूर वियोगेन सर्वे मंगलदायकः॥१५७॥टीका॥रविवार के दिन बीस अंगुली
की सीक नाप के छाया कीजै॥सोमवार कौ सोलै अंगुल [illegible] ॥१५ अंगुल मु

धको १४ गुरुको १३ शुक्रको १२ शनि ११ जबपह रले [illegible] सौ मकरी छाया
सीकके मूलमै तब अभिजित्म हूर्त घरी २ एकका होत है [illegible] कालकार्ये सि
द्धि होय ॥ जबकार्यै आपा रकूरक मोदि ॥ १३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ [illegible] जित्म हूर्त
मूल ॥ अर्घवृद्धिः फाल्गुणे स्या चैत्रस्य धनसंपदा: ॥ वैशाखे [illegible] राजाउ
वा स्वस्त्र भयसी ॥ १५६ ॥ आषाढे चौ द्दिते शुक्रे जलं भवति दुर्लभं ॥ श्रावणे च प
शुपीडा भाद्रे धान्यस मुच्चय: ॥ १५७ ॥ आश्विने सर्वे संपति: शुभं कार्तिक मार्ग
यो: ॥ पोषे माघे दिते शुक्रे तत्र भंगोय चुद्रत: श्र गो स्तते: ॥ १५८ ॥ टीका ॥ जो शु
क्रका उदय फाल्गुणमै होय तो अन्न सस्ता होय ॥ चैत्रमै होय तो मेघ नीकाव र
षै ॥ चौपायन का सुख होय धन संपदा अधिक होय वैशाखमै होय तो राजान
मै विग्रह होय ॥ जेठमै उदय होय तौ वर्षा नीका होय आषाढ मै वर्षा थोडी होय ॥
श्रावणमै होय तो पशुवन को पीडा होय ॥ भादौमै होय तौ अन्न बहुत उपजे
१५८ ॥ आश्विनमै होय तौ संसारमै संपति की वृद्धि होय ॥ कार्तिक मार्गशिरमै शु
भ है ॥ पोषमाघमै उदय होय तौ तत्र भंग होय देशपति कौ विध्वंस होय ॥ १५९

शी॰टी॰ इतिग्रन्थोदयफलं ॥ मूल ॥ पूर्ववायुर्हेलिकायां प्रजाः भूपाल योः सुखं ॥ प
लायनं च दुर्भिक्षं दक्षिणो जायते ध्रुवं ॥ ९८० ॥ पश्चिमे तृणसंपत्तिः उत्तरे धान्य
संभवं ॥ यदि वेद्वाथवा वायुवृष्टिः दुर्गे राज्ञोपि संचयेत् ॥ ९८१ ॥ टीका ॥ जो होलीके
दिन पूर्वकी पवन चलै तो दहन समै राजा प्रजाको सुख होय दक्षिणकी चलै
तो दुर्भिक्ष होय काल पडै ॥ ९८० ॥ पश्चिमकी चलै तो तृणकी वृद्धि होय ॥ उ॰ चलै
तो धान्य बहुत उपजै ॥ जो पवन नहि चलै तो धूआं ऊंचो झपटसी थी आ
काशमे जाय तो राजा गढ कोट का आसरा लेके बैठ रहै विग्रह होय ॥ इतिहुता
सनीयफलम् ॥ मूल ॥ एकादश्यां कार्तिकस्य यदि मेघसमो भवेत ॥ आषाढे चतु
र्दावृष्टिः जायते नात्र संशयः ॥ ९८२ ॥ टीका ॥ जो कार्तिककी एकादशीकू बादर
होय तो मेघ थोडा बरसै ॥ तो आषाढके महीनेमे वर्षा अच्छी होय ॥ ९८३ ॥ मूल ॥
कृष्णपक्षे दशम्यां च वृष्टिः पौषस्य जायते ॥ तदा भाद्रपदे मासे [illegible] मे वृष्टिमय
सी ॥ ९८४ ॥ टीका ॥ जो पौषवदी कृष्णपक्षकी दशमीको मेघ [illegible] भादोके मही
नेमे वर्षा अधिक होय ॥ ९८५ ॥ मूल ॥ वैशाखे माघ [illegible] मूलेन [illegible]

ते ॥ नक्षत्रे वादिवाहस्तंनदाने दृस्तिते मही ॥ २६४ ॥ टीका ॥ [illegible] धकीसक्ष [illegible]
कोवरषै औरज्येष्ठकेमूलनक्षत्रमैवरषै ॥ वर्षाकेनक्षत्र [illegible] ष्टिथीयरसै
अन्नउपजै ॥ २६४ ॥ मूल ॥ पंचम्यां प्रथमे पक्षे आषाढे च [illegible] पयो वा ह
लदा धाम्ने धरामा मनुजले रपि ॥ २६५ ॥ मू ॥ टीका ॥ साउनका पह[illegible] ली पंचमी
कोमेघवरषै तो वरषा विशेष होय अन्न विशेष होय ॥ २६५ ॥ [illegible]
य ॥ मूल ॥ आषाढपूर्णिमायां च यन्नक्षत्रं विचारयेत् ॥ पूर्वाषाढे सुभिक्षं च
मूले दुर्भिक्षमुच्यते ॥ २६६ ॥ उत्तराषाढके शिष्टमां पीडा कर[illegible]ट संगति ॥ टीका ॥
आषाढकी पूर्णिमाको जोन नक्षत्र होय ताको विचारिये ॥ [illegible] पूर्वाषाढ होय तो
सुभिक्ष होय मूल होय तो दुर्भिक्ष होय ॥ और जो उत्तराषाढ [illegible] य तो षोडनको
पीडा होय ॥ २६६ ॥ इत्याषाढपूर्णिमाफलं ॥ मूल ॥ ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षे प्रतिप
च्चय दासवेत ॥ रवेर्वारत्तदावायुः वातवर्द्धांतकारकः ॥ सप्तविग्रहे भौमे
बुधे दुर्भिक्षमुच्यते ॥ २६७ ॥ शनौ वा हि शनैर्वारे जीलंकापिन ह[illegible] ॥ सोमस्य
कः सुरेज्यानां यद्दिवारप्रजायते ॥ २६९ ॥ घनधान्यसन्तोष्पत्तिः ॥ सोहे हेम सेल्स

वे ॥ १६९ ॥ टीका ॥ ज्येष्ठकी पहली परवा रविवार होयतौ पवन वकुत चले व
लहूटै भौमवार होयतौ विग्रह होय दुर्भिक्ष पडै ॥ शनिवार होयतौ मेघ थोडा व
रषै जो सोम शुक्र गुरुवार होयतौ धन धान्य उपजै संतानकी वृद्धि होय ॥ इति
ज्येष्ठप्रतिपदाफलं ॥ मूलं ॥ पौषमासस्य संक्रांतौ रविवारयदा भवेत् ॥ धान्य
स्य द्विगुणं मौल्यं भौमवारे चतुर्गुणम् ॥ त्रिगुणं शनिवारे च बुधशुक्रे समं भवेत्
सुराचार्ये च सोमे च मौल्यं मर्द्धं न निश्चितं ॥ क्रूरेला मंकृतौ धान्ये सौम्ये हानिप्रदा
भवेत् ॥ टीका ॥ जो पौषकी संक्रांत रविवार होयतौ अन्न द्विगुणो मोल विकै ॥ भौ
मवार होयतौ चौगुणो मोल विकाय ॥ १७० ॥ बुधशुक्रवारी होयतौ साधारण
भाव विकाय ॥ शनिवारी होयतौ त्रिगुणो मोल विकाय ॥ १७१ ॥ गुरु सोमवार प
रै तौ आधे दाम होय ॥ जो शुक्रवार पै रै तौ त्रिगुणो मोल विकाय ॥ १७२ ॥ क्रूरवारी
होयतौ नफा होय ॥ १७२ ॥ इति पौषमासफलं ॥ मूलं ॥ मीनसंक्रमणे सूर्ये . र
वौ सभी रणः ॥ भौमे पीडा पशूनां च दुर्भिक्षं च शनैश्चरे ॥ वृत्तपात
मिथ्या संचरते मही ॥ हिंसकाय परे लोकाः यदि वाहिः ॥ १७४ ॥

तोयदि मीनस्थबुधेवारे प्रजायते ॥ दाव भंगमहामारी [illegible] नं समसंचिंतकं
२७५ ॥ संक्रांतो रविवारे च प्रजानां परमं सुखं ॥ भौमे भौमे [illegible] वारे षुपातं [illegible]
हर्षदेता ॥ २७६ ॥ टीका ॥ मीनकी संक्रांति रविवार होयतो व[illegible] । घ[illegible]
पवन चले ॥ भोमवार तेपशूपीडा होय शनिवार ते दुर्भिक्ष प[illegible] ॥ २७७ ॥ म[illegible]
संक्रांति होयतो रक्तपात मिथ्यावाद हिंसाकामातुरी आधिक होई ॥ २७४ ॥ बु
धवार होयतो दत्रभंग होइ मरीपरें शोकभय चिंता वढे ॥ २७४ ॥ सोमवार होय
तो प्रजाकू आनंद होई ॥ रविशनिवार होयतो अन्यमे युद्ध होय ॥ २७५ ॥ २७६ ॥
इति मीनसंक्रांतिफलं ॥ मूल ॥ संक्रांत्याधरनक्षत्रादा[illegible] धिगाएपते ॥
त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुनः पुनः ॥ २७७ ॥ पंथाभोगोव्यथावस्त्रहानिश्च वि
पुलं धनं ॥ षड्भिर्भोगोफलं षट्कं मासिमासि विचारयेत् ॥ २७८ ॥ टीका ॥ संक्रांति
के समयके नक्षत्रते आपने नक्षत्रलो गने ॥ तामें तीन लौ होई पंथा चलावे श्रो
र ६ लौ भोग करावै १२ लौ व्यथा करे १८ लौ वस्त्रखर्च करे फिर २१ लौ पंथी
होई २७ लौ भोगकरै याप्रकार मासमास विचारै ॥ इति संक्रांति दिननक्षत्रफलं

शी॰टी॰

मूल ॥ रोहिणिचक्रं लिखित्वा रोमेषसंक्रांति भादिकं ॥ अष्टाविंशति वै तत्र लिखेन

नक्षत्रसंकुलं ॥ १७९ ॥ संधौ द्वयं द्वयं द
द्यान् मध्ये चैकैकमेव च ॥ चत्वारः सागरा
स्तत्र संधयश्चाष्टसंख्यया ॥ १८० ॥ अंगा
गोलत्र चत्वारः नदाः पृष्ठे स्थलानि च
रोहिणीपतिना [illegible] लप्लुमाप्नु
मे ॥ १८१ ॥ जातो मयमेला चंद्रस्यैव च ष्य जल
मप्रिया ॥ समुद्रे तु महावृष्टिस्तटे स्व
ल्प शोभने ॥ १८२ ॥ पर्वते [illegible] मात्रं स्या
ड्वृष्टिश्च संधिषु ॥ टीका ॥ अ [illegible]
निर्णीय विषम [illegible] [illegible]
हिणीयत [illegible] त्तहे [illegible]
स्पाको [illegible] लिकाच [illegible]

गर्भे विषै लिखियै ताकी आवर्ते विषै रोहिणी चक्र ॥ २८ [illegible] कोलि [illegible]
नक्षत्र दुरन्त दुष्ट समुद्र न मै धरियै ॥ एक एक नक्षत्र आन मै [illegible] कन [illegible]
धन मै धरै तहां मेष की संक्रांति जान नक्षत्र मै हो इतान नक्षत्र [illegible] कोरो [illegible]
समुद्र के नजीक परै तौ वर्षा अधिक होई ॥ आन मै परै तौ [illegible] कहे [illegible]

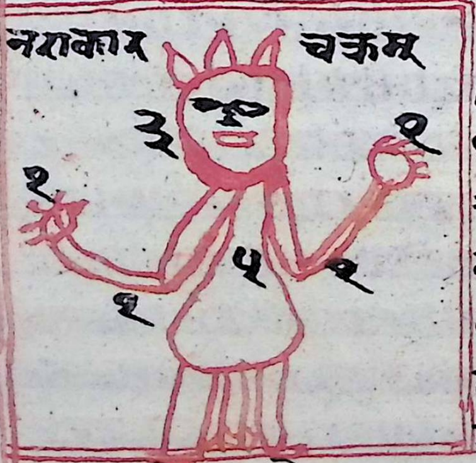

और संधन मै परै तौ कहा वर्षै क[illegible] विषै ॥ अ
श्विनी के ठौर संक्रांति धरियै ॥ [illegible] ॥ २२० ॥ २२१ ॥
२२२ ॥ इति रोहिणी निर्णयः ॥ मस्त[illegible] ॥ [illegible]राकार लिखे
चक्रं स्वर्ये यत्र समवस्थितः ॥ तन्[illegible] र्कं कृत्वा त्र
योदद्याच्च मस्तके ॥ २२३ ॥ मुखे त्रं [illegible] स्कंधयोस्तद
द्यादेकैकमेव च ॥ बाह्वोर्द्वयं तथैकैकं पाण्योरेकै
कमेव च ॥ हृदये पंच गुह्ये चैकं नाभौ चैकं प्रदाप
येत् ॥ जंघयोरेकमेकं च षड्[illegible] पादयोर्द्वयोः ॥
पादे ॥ ॥ मस्तके पट्टबंधि स्यान्मुखे मिष्टान्न भोजनं ॥ २२४ ॥ स्कंधे गा

शी॰टी॰ ऊर्द्धगामी स्याद्धाङ्घ्र स्थानच्युतो भवेत्॥ पाणौ च जायते चौरो हृदये मानी स्वरो
न्नरः॥ १८७॥ स्वल्पतोपि भवेन्नाभौ परदाररतो गुदे॥ जंघयोः परदेशी स्या
त्स्वल्पायुश्चरणद्वयं॥ १८८॥ नरचक्रे स्वर्येन नक्षत्राज्जन्मभावाधिमापिते॥ टी
का॥ अब नरचक्र कहते हैं॥ ताको गणित चक्र मैं समझ लीजिये॥ ओर जो
सूर्य के नक्षत्र ते ओर जन्म नक्षत्र लों गनिये॥ जहां जो नक्षत्र मैं नरचक्र
के जन्म नक्षत्र परे ताको फल कहते है॥ जो माथे मै जन्म [illegible] नक्षत्र परे तो॥
निज कुटंब नायक होय॥ ओर जो मुख में परे तो मीठे अन्नादिक विशेष भो
जन करै॥ कांधेन में परे तो कुटुंब का मालिक अग्रगामी होय॥ ओर जो बा
हुन मे परे तो जन्मभूमि छुटि जाय॥ जो हाथन में परे तो चोरी करै॥ जो
हृदय मे परे तो ठाकुर होय॥ ऐश्वर्य अधिक होय को ईश्वर [illegible] सन्मान
होय॥ ओर जो नाभी मे जन्म नक्षत्र परे तो थोरे मे जन्मै [illegible] रहै॥ जो गु
दा मे आन परे तो पर स्त्रीसे रमै॥ जंघान मे परे तो प[illegible]शी होय ओर च[र]
न मे परे तो थोरी आर्वल जिये॥ इति नरकार चक्रे नक्षत्राणां स्थानेषु शुभाशुभफलम
२॥

६

मूल॥ग्रामेयत्रभवेद्दृक्षोनदाग्रामस्यमस्तके॥ २८६ सप्त [illegible] सप्तपादक्षोःस
प्तातारकाः॥मस्तकेचधनीमानंपृष्ठेहानिश्चनिर्धनं॥ २८७॥ हृदये ३ [illegible]
पतिःपादेपर्यटनंसदा॥टीका॥जिसग्राममेंवसाचाहेंतिसगांवकोराशिके
नक्षत्रतेजोवसाचाहेताकेनक्षत्रलोगानिये॥तामेतेग्रामकोनक्षत्रआ
दिदेकेसात७नक्षत्रग्रामकेमाथेपरदीजेओरसात७नक्षत्रपीठपरदी
जेओर७पायनमेंदीजे॥जोगावकेमाथेपरवसेयाकोनक्षत्रपरेतोधन
मानहोई॥औरगाउकेधनीसन्मानअधिककरेऔरजोपीठकेनक्षत्र
मेपरेतोहानिहोय॥जोहृदयकेनक्षत्रमेपरेतोसुखवृद्धिकरे॥और
जोपायनमेपरेतोभटकतफिरेग्राममेरहनेनहिपावे॥ २८९॥ २९०॥
इतिग्रामवासफलम्॥मूल॥मूलेशेमूलवृक्षस्यघाटिकापरिकीर्तिताः॥लं
नस्यघाटिकात्वचेचैकादशस्मृताः॥ २९१॥ शाखायांचनवप्रोक्तापत्रे
प्रोक्ताचतद्देशः॥पुष्पेपंचफलेवेदाःशाखायांचत्रयंस्मृतं॥मूलनाशो
हिमूलस्यस्कंधेमहानिर्धनत्वयः॥ २९३॥ त्वचेभ्रातविश्रंशायशाखायांमा

ना

शी·टी· तपीडनं॥ परिवारक्षये पत्रे पुष्पे मंत्री च भूपते॥ १९४॥ फले राज्ञा शिखायां
स्यादल्पजीवी च बालकं॥ १९६॥ टीका॥ मूलनक्षत्र मे बालक होय॥ ता
को विचार कहते है॥ मूलवृक्ष बनाये श्रो रुंटी
रजे इमे धरिये॥ सैसे क्रमसे सब चक्रमे सम फली
जै॥ जो नइ मे पहेतो मूल नाश करे॥ श्रो रज हाते
डाहे चलती है तिनइ घरीन मे जन्म होय तो हा
नि होय श्रो र जो जडान की १२ ना घरीन मे ज
न्म होय तो माई को विनाश करे श्रा पीडा होय॥
श्रो र शाखी की पांच घरी मे जन्म होय तो मा[illegible]
डा करे श्रो र पत्रन की १४ घरीन [illegible] [illegible]
नाश होय॥ श्रथवा श्रपने कुल [illegible] [illegible]

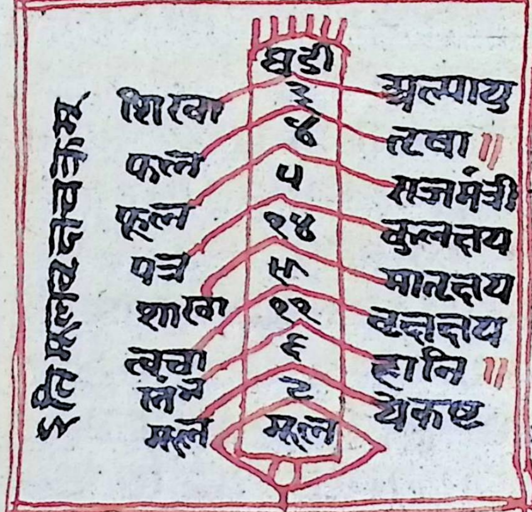

की ३ तीन घडी मे होय तो श्रावेल थोडी होय॥ १९७॥ १९८ [illegible]
लम्॥ मूल॥ रेवत्यादिग्र गांते चयावतिष्ठति चंद्रमा॥ ता[illegible] बुध[illegible]

खेदद्विशेशुभः ॥ १९५ ॥ टीका ॥ रेवतीनक्षत्रतिमिंगाशि[illegible]वानाते [illegible]ते
षकाचंद्रमारहै ॥ तहांलौशुक्रअंधारहै सोतामेमनक[illegible]
हीशुभहै ॥ १९५ ॥ इतिशुक्रनिर्दोषविचारः ॥ मूल ॥ प्रा[illegible]
पंचसप्तादिनंशिशुः ॥ १९६ ॥ विपरीतंतुवक्तव्यंतत्वदेवगुरु[illegible]जा
वशुक्रकाउदयहोयपूर्वेपश्चिमतव ५ ओर ७ दिनमा[illegible]ये पूर्वे [illegible] ॥
दिनमानियेबालकपूर्वे औरदिन ७ पश्चिमशुभकार्य[illegible]क्रमसे
हीगुरुकोजवअस्तहोय तवदिन ५ मात ७ पश्चिमपूर्वे [illegible] सात पूर्वो
याभातिवृहस्पतिकोउदयअस्तवक्तव्यमानिये ॥ १९६ ॥ इति[illegible]कोदयास्तक
लग्न ॥ मूल ॥ तृतीयेदशमेषष्ठेसदाक्ष्येशुभावह ॥ प्रथमेदशमेषष्ठेतृतीये
सप्तमेशशि ॥ शुक्लपक्षेद्वितीयाल्पपंचमेनवमेशुभः ॥ १९७ ॥ ताराशुभप्रदासर्वे
ष्वपंचसप्तवार्जिताः ॥ तृतीयेनवमेषष्ठेसदाक्ष्येशुभावहः ॥ १९९ ॥ प्रथमे
दशमेषष्ठेतृतीयेकादशेशशी ॥ यदिस्यात्सबलश्चंद्रस्तारापि[illegible]शदायिनी
२०० ॥ तृतीयेपंचमेताराससप्तमेचनृणांभवेत् ॥ जन्मभाऊणाये[illegible]मान्नक्रम

शी॰टी॰ शुद्ध दिनभावधिः ॥ १ ॥ नव भिर्युक्त हरेद्भागं शेषं ताराविनिर्दिशेत् ॥ जन्मसंपद्विप
त् क्षेमप्रत्यरिः साधकोवधः ॥ २२२ ॥ मैत्राति मैत्रतारास्युः श्रियाल[illegible]यानचैव
ह ॥ त्रिषष्ठे दशमे भौमे राहुः केतौ शनिश्शुभः ॥ २०३ ॥ षष्ठेष्टमे द्वितीये वा चतुर्थे
दशमे बुधः ॥ द्वितीये पंचमे जीवे सप्तमे नवमे शुभः ॥ २०४ ॥ एकादशे ग्रहाः सर्वे
सर्व कार्येषु शोभनाः ॥ ग्रहाणां गोचरं ह्येयं फलं विज्ञै शुभाशुभं ॥ २०५ ॥ टीका
शुक्लपक्ष मे २।५।७ ॥ तारा शुभ हे सकल कार्यन को ॥ और [illegible] ५ [illegible] ॥ वर्जित हे और
र ॥ ३ ॥ ९ ॥ दे ॥ सर्य होयतो जन्मकाल शुभ है ॥ और ॥ ९ ॥ दे ॥ [illegible] ॥ तद्मासली होयतो
अशुभ है तारा क्लेश को करै और ॥ ३।५ ॥ तारा होयतो ॥ [illegible] होयतो कल्लेश ना॰
होय ॥ तातें इषजन जो हैं पंडित ते तारा का विचार करते हैं [illegible] नक्षत्र [illegible]ते
दिन के नक्षत्र लौं गनिये ता मैं नव को भाग हरिये जो शेष [illegible] सो [illegible] रा लिये
जन्मकाल विषै आपापन्हा [illegible] विपत्तिवायुद्ध मैं विचा[illegible] [illegible]हे ॥ [illegible] ॥ स्मृति
तीन मित्र तारा इनकौ इं श्रावतै विचारते हैं ॥ ३।५ ॥ दे ॥ ७ ॥ [illegible]
होयतो शुभ है और ॥ ६।८।९ ॥ ७ ॥ इन स्थान विषै होयतौ बुध ॥ शु

गुरु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥ शुभ है औ र ग्यारहै स्थान सर्व ग्रह शुभफल के दाता है [illegible] ले
कायेन वे विशेषो चरग्रहणे को फल शुभाशुभ या प्रका [illegible]
२०५ ॥ इति गोचरग्रहाणां फलानि ॥ मूल ॥ दशम्यावधि [illegible] दि [illegible] च
न्द्रमाः ॥ ततः परं क्षीण चंद्र शुभकार्ये विवर्जितः ॥ २०६ ॥ टी[illegible] ॥ शु [illegible] की
दशमी ते औ र पक्ष की दशमी पर्यंत चंद्रमा पूर्णबली सब का [illegible] कार्य में [illegible] उत्तम
है औ र कृष्ण ॥ १० ॥ ते शुक्ल दशमी पर्यंत क्षीण चंद्रमा जानिये सो शुभकार्य न
में वर्जित है ॥ २०६ ॥ इति पूर्ण क्षीण चंद्र निर्णयः ॥ मूल ॥ पुनर्वसु [illegible] योर श्रुति यु
ग्मंक मूलं ॥ रेवती द्वितीयं ज्येष्ठ मघा शीर्षं च ग्रह हस्ते ॥ २०७ ॥ [illegible] प्राणहरे साज्ञा
मघा मैत्रं च रोहिणी ॥ उत्तरा कृत्तिका वारा । भानु भौम शनिश्चरे ॥ २०८ ॥ रिक्ता [illegible]
मी षैष्या दौ रविं दद्यो निशि ॥ संध्या विधिषु [illegible] डांते भोजनांते च योग है ॥ २
९ ॥ टीका ॥ इन नक्षत्रन में बालन है बनवाइये भ॰ म॰ रो॰ कृ॰ रवि॰ भौम॰ श
नि॰ ये वार ॥ ४ ॥ ९ ॥ १४ ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ ३० ॥ ये तिथि वर्जित है ॥ रात्रि औ र संध्या के समय
औ र गांडांत मूलन में भद्रन में औ र भोजन करै पर औ र गोसाला में बालन

शी·टी· वनवावनेवर्जितहै॥इतिनिरूपणौरं॥२०७॥२०८॥२०९॥मूल॥रेवतीयुगलं·
पुष्यो रोहिणी मृगा मैत्रयोः॥ श्रवणो न रः श नेष्व राज्ञोपि दृभिषेचनं॥२२०॥टी
का॥ रे·अश्वि·पुष्य·रोहिणी·म·स्व·श्र·उ·३ ज्ये·इतनन लच्छन मे राजाका जो अभि
षेचन है तिलक॥ सो करिके राज्य वे ठावै॥२२०॥इतिराजाभिषेचनं॥मूल॥
रेवती युगलं ज्येष्ठा मैत्र हस्तत्रयो मृगाः॥ पुनर्वसु श्रविणेयाः [illegible] तीये श्रवणे बुधैः
२२१॥ वस्त्रारोपं चवानिर्ज सर्वे शिविष्णुकारयेत॥ मा हनानि चयं श्राण्य मनंच
विधीयते॥२२२॥टीका॥ रे·अश्वि·ज्ये·पुन·स्व·ह·चि·त्वा·म·इतन लच्छनके तिर
केमरवहै॥२२१॥ इनमेंव स्त्रलगावै औरसवारी जिरेवती वाहन हाथी घोडा·
औररथयंत्र रहटवाजेनगारे॥ आदिक बनावने उत्तम है और विशेषका·
चलना येवाते इन नक्षत्रमें सिद्धि होय॥२२॥मूल॥पूर्वात्रयं [illegible]
स्वाकृतिकायनं॥ मूलं चाश्वो मुर्ले [illegible] नल कोयं गोपाल [illegible] मका [illegible]
येच वेननं विवरस्य च॥ मुले वाश्वो मृ [illegible] धानत्कार्येकारयेदुधः॥ २२३ [illegible]
येनतत्रऊंधेमुखहै॥ पूर्वा ३ म·श्ले·वि·कृ·भ·म·इनमे [illegible] कार्ये [illegible]

रूमित्रामारादि संबंधकार्ये श्रीरशत्रुसंघातन्त्रादिक उत्तमकर्ममेजोंहै ॥ एकले ।
ग्रफा बावडी तडागोना आदिजो गोरनाके कर्ममेहे सोसबसिद्धहै ॥ १
मूल ॥ उत्तरात्रतीयंपुष्यो रोहिण्यो द्रीश्रुतित्रयं ॥ ऊर्ध्व [illegible] हे यत्र [illegible]
[illegible]मणोषणः ॥ २५ ॥ प्रासादस्तेत्रगेहानि प्राकारध्वजतोरण ॥ [illegible]
[illegible] मण्वं च कुर्यात् दूर्ध्वमखो गुणैः ॥ २६ ॥ टीका ॥ येन द[illegible] ऊर्ध्वम[illegible] उ·
र·म·री·आर्द्रा·श्र·ध·श· इनमेऊर्ध्वमखकार्येकीजे शिरोपाउ पहिरे तत्रध
रै घरवनावे ध्वजपताका चमरबंधनवार बागलालकाविवाह अभिषेक
घोडेकीसवारी येकार्यसिद्धिहोय ॥ २६ ॥ इति श्रेयचऊर्ध्वनीये [illegible]नक्षत्राणि
मूल ॥ पुनर्वसुस्वयंचित्रामृगाश्वी चकरत्रयं ॥ मूलश्रुतित्रयं मे त्रंभिषकुकर्मा
[illegible] स्मृते ॥ २७ ॥ सोमसुक्रस्य रेज्यानां वाराः शकुन सत्तमं ॥ लग्नेषुचापमीने
पुरुषवगालोललाधरः ॥ २८ ॥ टीका ॥ [illegible] सेमा दिमे श्रीपधकारिये वे चतुला र
ये श्रीसाधवनवाइये श्रीरथाइये पुनः पुष्य रे·उ·श्र·म·ह·चि·स्वा·मृ·श्र·श·
धन· ॥ २९ ॥ सोमसुक्रयेवार धन मीन वृष तुला उत्तमसगुणाहोयतो श्रीषधि

शी·टी· स्त्नाद्ये श्रोरयवाद्ये ॥२१८॥ इति मेषजन्मकर्म ॥ मूल ॥ स्वमावास्याष्टमीत्या ज्या
पौर्णिमा च चतुर्दशी ॥ रविवारे वर्जनीयो गोपशूलं च निर्गमे ॥ २१९ ॥ चित्रोत्त
रा रोहिणी च श्रवणोपि विवर्जयेत् ॥ एतेषु पशु जातो [illegible] मशु भं निर्गमं भवेत्
२२० ॥ टीका ॥ इति पशुनिर्गमः ॥ मूल ॥ उत्तराच विशाखायां रोहिणी च पुनर्व
सुः ॥ नव म्यां च चतुर्दश्यां स्वश्रमां नानये त्पशुः ॥ २२१ ॥ पूर्वा मैत्र द्वयं मूलं वा
सव रेवती करः ॥ पुनर्वसु द्वयं यात्रा द्ये पशूनां क्रय विक्रये ॥ २२२ ॥ टीका ॥ उ·३
चि·रो·॥ श ॥ २४ ॥ ९ ॥ येती नि तिथि नक्षत्र न मे पशूना ली जिये ॥ २२ ॥ श्रोर पूर्वा·
३ हनु· अ· म· ध· रे· ह· पुन· पुष्य· इन मे पशूना ली जिये ॥ २२ ॥ मूल ॥ पूर्वाभा
द्रपदा युग्मं स्वांति श्रवणे रेवती ॥ हस्तो तराम्लो मैत्र नक्ष [illegible] ॥ २
२३ ॥ या स्वा निमा नि चैतानि क्रय विक्रयणे बुधैः ॥ चंद्र [illegible] ना [illegible] नारा
शकुनमत्तमं ॥ २२३ ॥ टीका ॥ पूर्वा· पू· भा· उ· भा· वा· श्र· [illegible] ह· [illegible]
नरे· श्ले· येनक्षत्र श्रीरचंद्र बल· श्रु· ये वा क्रय विक्रय श्री शुभ है उत्तम श
कुन लेके ॥ २३ ॥ २२४ ॥ इति क्रयविक्रय ॥ मूल ॥ नं दा लिथिक्ष [illegible] मा दो पूर्णा

वतथांधिके ॥ घटिकैकाशुभेत्याज्यातिथिगंडे घटीद्वयं ॥ २२५ ॥ टीका ॥ नंदा तिथिकी आदिकी घटी १ पूर्णाके अंतकी घडी १ अशुभ है: २५ ॥ इति गंडांत तिथ: मूल ॥ ज्येष्ठाश्लेषारेवती च नामंते घटिकाद्वयं ॥ आद्यौ ... गंडघटिकाद्वयं ॥ २६ ॥ टीका ॥ ज्ये. श्ले. रे. इनकी अंतकी घडी २ ... की आदिकी घडी २ अशुभ है शुभकार्यमे वर्जित है ॥ २२६ ॥ ... ॥ मूल ॥ मीन वृश्चिककर्कांते घटिकार्द्धं परित्यजेत् ॥ आदौ ... सिंहस्य घटिकार्द्धकं ॥ २२७ ॥ टीका ॥ मीन वृश्चिक कर्क इनकी ... आधी घडी और मेष धन सिंह इनको आदिकी आधी घडीमे शुभकार्य ... जिये: २२७ ॥ इति लग्नगंडांत ॥ मूल ॥ तिथिगंडे भगंडे च लग्नगंडे ... जातकं नजीवति यदा जातो जीवते च धनी भवेत् ॥ २२८ ॥ टीका ॥ तिथिगंड नक्षत्रगंड लग्नगंडकी जो घडी कही है इनमे जो मनुष्यका जन्म होय तो जीवे नही जो कदाचित् जीवे तो धनी होय ॥ २२८ ॥ इति गंडांतफलं ॥ मूल ॥ सप्तम्यां च रवेर्वारो बुधस्य तिपदाहने ॥ भवतो ... सदा योगो वर्जितव्यः सदा बुधैः ॥ २२९ ॥ टीका

९८

शी॰टी॰ सप्तमी रविवार औ पडवा बुधवारकी होय तो ताकों संवर्तो नामयोग कहते हैं॥
सो शुभकार्य कों वर्जे है॥२२९॥मूल॥इति संवर्तनामयोग॥ शुक्रे नंदा बुधे भद्रा
शनौ रिक्ता कुजे जया॥ गुरौ पूर्णेति तिथिर्ज्ञेया सिद्धियोगः प्रदाहृतः॥२३०॥टीका॥ जो
शुक्रवारकी नंदा तिथि होय औ बुधवारकौ भद्रा होय शनिवारकौ रिक्ता होय मं
गलकौ जया तिथिः गुरुवारकौ पूर्णा तिथिः इन वारनकौ औ इन तिथनके मेल
सों सिद्धियोग कहिये॥ तामें जो कार्य करे सिद्धि होय॥२३१॥इति सिद्धियोग॥मूल
विष्कुंभ प्रीति आयुष्मान् सौभाग्य शोभनस्तथा॥ अतिगंड सुकर्मा च धृति शूल
स्तथैव च॥२३४॥ गंडो वृद्धि ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा॥ वज्र सिद्धि व्यतीपातो
वरीयान परिघः शिवः॥२३२॥ सिद्धि साध्य शुभ शुक्ल ब्रह्मेंद्र [illegible] सप्त
शति राख्याता नामतुल्यानि कार्येतत्॥२३३॥टीका॥ विष्कुंभ १ प्रीति [illegible] आयुष्मा
न ३ सौभाग्य ४ शोभन ५ अतिगंड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शूल ९ गंड १० वृ[illegible] ध्रुव
१२ व्याघात १३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्धि १६ व्यतिपात १७ वरीयान् १८ [illegible] १९
शिव २० सिद्धि २१ साध्य २२ शुभ २३ शुक्ल २४ ब्रह्म २५ ऐंद्र २६ वैधृति २७ येना

मछल्पफल कहते हैं॥ २३३॥ इति सप्तविंशति योग॥ मूल॥ [illegible]
गुणं हत्वा हीन मे वैक कारयेत्॥ सप्तमि [illegible]
ले॥ २३४॥ टीका॥ शुक्ल प्रतिपदा ते जे तिथि गत भई [illegible]
तिन मे तकौ द्विगुण करिकै ता मे एक घटाइये फिर [illegible] औ
शेष अंक कव वैसो करण जानिये॥ स्वव करणौं के नाम [illegible]॥ मूल॥ बव
बालव कौलव तैतल गर वणिज [illegible] इते कर
णानि च॥ २३५॥ कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां शकुनिः पश्चिमे [illegible]॥ चतुष्पा
त् नागश्च अमावस्यां द्वले द्वये॥ २३६॥ टीका॥ बव १ बा[illegible] कौलव ३
तैतल ४ गर ५ वणिज ६ विष्टि ७ ये करण चरसंज्ञा कहिये॥ २३५॥ कृष्ण
पक्ष की चतुर्दशी को पश्चिमदल कहिये अंत की आधी तिथि मे शकु
नी नाम करण होत है॥ तिसका हाथी का स्वरूप है॥ और अमावस्या के पू
र्वार्द्ध कहिये पहले॥ आधी तिथि लौ चतुष्पद नाम करण होत है॥ और
परार्द्ध अंत की आधी तिथि मे नाग नाम करण होत है॥ २३६॥ मूल॥ प्र

शी॰टी॰ क्षयतिपदांतेचववाख्यकरणोभवेत्॥ एकादशाख्यविज्ञेयाचरस्थिर
विभागशः॥ २३८॥ टीका॥ शुक्लपक्षकीपड़वाकीउतरती ३० घड़ीमेव
वनामकरण होतहै। ताकेनिकासवेकौप्रकारपूर्वहीकेश्लोककीरीत
सैसमझलीजियै॥ जातिथिकेगएतसोजोकरणआवे सोतिथिकेउतर
ती ३० घरीमेसमझियै और पूर्वदलमेंआधीतिथिपर्यंतउसकेपहिला
रीवालाकरणजानियै॥ याक्रमसोंविष्टीनामकरणजो [illegible] आईकी
भद्रातामेंमातौचरकरणपरेहैकेफिरभद्राकेउतीरान [illegible] मैववकरण
होतहै॥ औरयामैशुक्लपक्षकीपरवातेकृष्णपक्षकी [illegible] पर्यंत २८ तिथि
यैहिगुणाकरकैपरीक्षाचरकरणजानिवेकौप्रकारहै [illegible] २९ थी [illegible] करणे
निर्णयः॥ मूल॥ दर्शायमान्तोच्यातालंद्रौतद्रोदित [illegible]
पितशेभगोयेमहिषावाहः॥ २३९॥ त्वष्टेच्यायुशनकवी [illegible]
ग्रतिः॥ जलविष्णुविधिर्विहस्तुः वासवोवरुणस्प [illegible]
हिर्बुध्नपूषेतिकथितावुधैः॥ अष्टाविंशतिसं [illegible]

ष्वराः॥ २४१॥ टीका॥ अब अठाईस नक्षत्रों के स्वामी दे[illegible] ॥ म्नेश्वर ॥ ना[illegible] व

वक्र मे अश्विन्यादि रेवती पर्यंत क्रमपूर्वक लिखे ते [illegible]

न मे देवताकी पूजन प्रतिष्ठादिक करै सो ताके नक्ष[illegible]

४०॥ २४२॥ इति नक्षत्राधिपतिः॥ इति श्री काशीनाथकृते [illegible]

कालिलक नक्षत्रप्रकरणं द्वितीयं॥ २॥ मूल॥ शिरोमुखेद[illegible] ष्व

कृत्तिके जनः॥ सवणो धनधान्यानां लाभस्तस्य न संशयः॥ [illegible] टीका॥ [illegible]

ईश्वर कै पंचक कम्पना हाथ माथपै मस्वपे कान ने [illegible] बुवाये है॥ कृ· अग्निदेवता

रे· उ· पू· श· ध· श्र· उ· पू· मू· ज्ये· अ· वि· स्वा· चि· ह· उ· पू· म· श्ले· [illegible] आ· मृ· रो· क॥ भ· यमदेवता

पुष्पदेव · अहिर्बुध्न · अजैकपाद · वासवदेवस्य · विष्णुदेवस्य · विधिदेवस्य · विश्वदेवस्य · राक्षसाधिप · इंद्रदेवस्य · मित्रदेवस्य · इंद्राग्निदेव · वायुदेवस्य · त्वष्टृदेवस्य · सूर्यदेवस्य · यमदेवस्य · भगदेवस्य · पितृदेवस्य · सर्पदेवता · बृहस्पतिदे · अदितिदेव · श्रीरुद्रदेव · चंद्रमादेव · श्रीब्रह्मदेव · अग्निदेवता

षतौ धन धान्य लाभ होय कार्यसिद्धि होय यामे संशय नहीं है॥ २॥ मूल

स्कंधपयो वा कंठ हलत [illegible] शीला मोहिदुःखिताः॥ कुचना भिस्माला जो म

शी॰टी॰ त्रपानादिसिद्धिः ॥२॥ टीका ॥ जो प्रश्न पूछनके समय अपनेकों छेयाके
ठ याहाथसें हाथमलै तो लाभ होई कष्टसें और कोल अथवा नाभि में हाथ
छुवायकै तो साधारण लाभ होय ॥२॥ मूल ॥ जंघालिंगकटिस्पर्शे कन्या
लाभ सुतोद्भवः ॥ जानुगुल्फपदस्पर्शे महाक्लेशप्रजायते ॥३॥ टीका ॥ जो
जांघ लिंग कटि छुयकै पूछै तो कन्यापुत्रादिक संतानकी उत्पत्ति होय ॥
और खोटे अथवा घाई छुयकै पूछै तो अथवा गुल्फ छुवे [illegible] महाक्लेश
होय ॥३॥ मूल ॥ केशस्पर्शे भवेन्मृत्युः फलस्पर्शे शुभं भवे[illegible]
कसंस्पर्शे कार्यसिद्धिर्न जायते ॥४॥ टीका ॥ जो केश छुवे [illegible]
और जो फल छुवे तो शुभ होय और तिनका व[illegible]निछुवे [illegible]
होय ॥४॥ मूल ॥ काष्ठपंकपदस्पर्शे ग्रहपीडा भयं भवेत् [illegible]
डादिस्पर्शे सिद्धिः प्रजायते ॥५॥ टीका ॥ लकडीकों की [illegible]
ग्रहपीडा होय भय होय और सोंधका मद्यका भांडा छुवे [illegible]
म सिद्धि होय ॥५॥ मूल ॥ शून्यालये श्मशाने च शुष्कवृक्षे [illegible]

लग्ने मस्त्रो धनस्थाने प्रश्ने क्लेशश्च जायते ॥ ६ ॥ टीका ॥ सप्तमे घर ॥ [illegible]
पर समस्तायन भूमिमे घायल के घर गुल्म लक्ता [illegible]
पापस्थान विषे ॥ इतनी चोरवैठके प्रश्नपछे तो मेहा [illegible]
देवग्रहेन दातारे दिमस्थाने शुभं भवेत् ॥ सर्वं टिव्हचा [illegible] ॥ [illegible]
न जायते ॥ ७ ॥ टीका ॥ देवस्थान में नदी के तीर ॥ उलमंठ [illegible]
के पछे प्रश्न तो शुभ है ॥ और चारो कोन शुद्ध दिशान के [illegible]
श्रेष्ठ है ॥ और वो दिशामे होके पछे तौ नेष्ट है ॥ ७ ॥ मूल ॥ [illegible] शीना दि
प्रश्न ॥ तिलोमीने चमेषे च घट्य्रः पंच श्रुति पलं ॥ चतस [illegible] वृषके कुंभे प
लाख्याल्काश्च षोडशः ॥ ८ ॥ मकरे मिथुने पंच घटिका विंशद्वा पलं ॥ पंच
कर्के च चापे च शशिवेदा पलास्मृताः ॥ ९ ॥ कंन्या पंच तले पंच पलाश्च
द्वल था मूयः ॥ घटिका पंच मीने हे लो दये वेदा पलास्मृताः ॥ १० ॥ एवं लग्न
प्रमाणं स्यात्कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ टीका ॥ सब लग्नके घटीपल कहते
है सो समझ लीजिये ॥ इति लग्न प्रमाणं ॥ मूल ॥ सूर्ये धेनुश्च ताभ्याम

म.	वृ.	मि.	क.	सिं.	कं.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	[illegible]
३०	४	५	५	५	५	५	५	५	३	४	३	
१५	९२	५	४२	४२	४५	४५	४२	४२	५	१६	४५	

गोधूमारक्तचंदनं॥
चंद्रेशंखंकर्पूरंचव
स्त्रंचसितंतंदुलाः॥ कु
जेवस्त्रप्रदानंच्यार
क्तवस्त्रंगुडोदनं॥ बुधेकर्पूरकाश्यावहरिवस्त्रहरिन्मणिः॥ पीतवस्त्रंध
यंजीवेहरिद्रान्नाणकानिच॥२२॥ श्वेतवस्त्रंशुक्रोसितोदेय [illegible] धान्यानि
धानिच॥ शनौतैलंतिलादेयाः कृष्णगोदानमुत्तमं॥ राहौ [illegible] छा
गौमाषकृष्णतिलसर्षपाः॥ ध्वजमेषोवदानंहि केतोश्चा [illegible]॥२४
वर्णगोविप्रदर्जाभिः सर्वेशांशांतिफलप्रदाः॥ टीका॥ सू [illegible] क
हतेहै सूर्यकोलालगाईताबा गेहूं रक्तचंदन॥२१॥ चं [illegible]
दन श्वेतवस्त्र चावल॥२२॥ मंगलको लालबैल लालवस्त्र [illegible]
कपूर मूंगा हरावस्त्र हरीमणि पन्नाइत्यादिक हरे [illegible]
वस्त्रदालचनेकी सुवर्ण॥२३॥ शुक्रको दानश्वेत वस्त्र [illegible] सु

शनिकोतेल कालीगऊ कालावस्त्र तिल लोहा [illegible] ग्रहर ॥ [illegible]
कोमतनजा भैंस छेरी कोयला मक्करी उडद तिल [illegible] ॥ [illegible]
कोमतनजा मेंढा हथियार सवणे सामवस्त्र दीजे ॥ [illegible]
नादियेतैसकलग्रह शांत होते है ॥ इतिग्रहदानम् ॥ [illegible] ॥ [illegible]
तंचसर्वा ष्टिश्च सुखी नरः ॥ पढं ॥ वृषेगुरौ स्वल्पवृष्टिः [illegible] पीड [illegible]
त्रः ॥ सुनावृष्टिप्रजा नाशो रौरवं मिथुने गुरौ ॥ १८ ॥ कर्क [illegible] मह [illegible] ष्टिः
[illegible] गोमहर्घता ॥ सिंहे गुरौ सुभिक्षंच सुवृष्टिश्च प्रजासुख ॥ १९ ॥ [illegible]
रोगपीडा सुभिक्षं सस्यजन्मच ॥ तुलेगुरौ शस्यनाश [illegible] प्रजा
यते ॥ २१ ॥ अलो जीवेच दुर्भिक्षं राजचौरी रुगाद्भयं ॥ चापेगुरौ शुभावृष्टिः
शुभं शस्यमहर्घता ॥ २० ॥ दुर्भिक्षं मकरे जीवे राजयुद्धं पशुक्षयं ॥ कुंभेगु
रौ च दुर्भिक्षं धातुमूलमहर्घता ॥ २४ ॥ दुर्भिक्षं दक्षिणेदेशे झषेजीवेन
चान्यथे ॥ टीका ॥ जवमेषपेर हस्पति आवेतो सुभिक्ष होइ वर्षा अच्छी होइ
य मनुष्य सुषित रहै २६ वृषके गुरु होयतो वर्षा थोडी होय प्रजापीडा

शी.टी. होय विग्रह होय ॥ मिथुन गुरु होय तो वृष्टि बहुत थोड़ी होय प्रजा बहुत
क्षीजै वैरवै ॥२१॥ औरु कर्कके उच्चकै बृहस्पति होय तो वडी वर्षा होय
औरु देश भंग होय अन्न महंगो होई सिंहके बृहस्पति होय तो सुभिक्ष हो
य वर्षा अधिक होय प्रजा सुखी रहै ॥२२॥ कन्याके गुरु होय तो रोगपीड़ा
होइ सुभिक्ष होय अन्न बहुत होय ॥ तुलाके बृहस्पति होय तो [illegible]ती का
नास होय दूध बहुत होय ॥२३॥ वृश्चिकके गुरु होय तो [illegible]नै तपडै औ
र चौर भय विशेष होय धनके बृहस्पति सुमेरु द्रव्य बो[illegible]ती बहुत
फलै ॥ रस महंगा होई ॥२४॥ मकरके बृहस्पति होय तो म[illegible]ई औ
र देशपति राजन सौं युद्ध होय कुंभके बृहस्पति होय तो [illegible] वर्षै [illegible] औ
र धान महंगो होय ॥२५॥ औरु जो बृहस्पति मीन राशि मे[illegible] बहुत कीर्य [illegible] पा
की दशा में दुर्भिक्ष पड़ै औरु दशा में नहीं ॥२६॥ इति बा[illegible]
गुरु शुभाशुभ फलं ॥ अथ संक्रांतिनो अधिपति [illegible]
न फलम् ॥ मूल ॥ मार्गकार्तिक संक्रांती वृषोबवेति [illegible]

नएणंमीनकर्कमकरतुलावृषसंघरा॥चैत्रफाल्गुणौवैशाख[illegible]थरे॥ना[illegible]ष
घनः॥यदिवर्षतिसर्वत्रसुभिक्षंचप्रजासुखं॥आषाढ[illegible]॥[illegible]मास॥
श्रावणेसुखं॥भाद्रेचबहुवोरेणासुखंसर्वत्रचाश्विने॥[illegible]
तीव्रौश्रापिपशुमाशुमं॥२५॥टीका॥जोआहनऔर[illegible]नाशोत्र[illegible]औ
तजोनेदिनलगेताहादिनवर्षाहोयचोरीकाअधि[illegible]कीप[illegible]
मध्यमवर्षाहोयऔरसमासमघामेहोय॥२४॥औरपे[illegible]मेहै
नेनकेमासतथावैशाखकेमहीनेकीसंक्रांतिनको[illegible]वृष्टिहो
यतीसर्वत्रसुभिक्षरहे॥औरअन्नादिकसकलपदार्थ[illegible]प्रजाआरो
ग्यतापूर्वकसुखीरहेऔरपाटजुटकीसंक्रांतिनकोमेघवर्षेतोप्रजा
सुखीरहै॥औरअन्नादिकसकलउत्पत्तिअधिकहोयऔरचैत्रकेम
हीनाऔरफाल्गुण॥२३॥औरआषाढकीसंक्रांतिकेदिनजलवृष्टिहो
यतोप्रजाकीरोगकीअधिकताहोय॥औरजोसंक्रांतिनकेदिनकोव
ष्टिहोयतोसुभिक्षकोअधिकसुखहोय॥२४॥औरभादोकीसंक्रांतिकोव

५३

ग्री·टी· ष्टि होय तो अनेक रोग होई ॥ और कुवार की संक्रांति कौ वर्षै तो सब ही कौ वर्षै
सब ही कौ आनंद होय ॥ या प्रकार सौं इन बारह संक्रांतिन कौ शुभाशुभ फल
कह्यौ ॥ और इन में कुछ राशि मास का संबंध नाहीं है या हेतु सब राशि के सूर्य आ
वे केवल मासिक फल है ॥ २५ ॥ इति द्वादश संक्रांति वृष्टि शुभाशुभ फलं ॥ अ·
थ मासे मासे पंचमी वायु संबंध फलं ॥ मूल ॥ चैत्रस्य शुक्ल पंचम्यां पूर्वे वायुघ
नागमे ॥ भाद्रे गुणत्रयं मौल्यं रसस्यां जायते तदा ॥ २६ ॥ ज्ये [illegible] पंचम्यां व
हे पश्चिम मारुतः ॥ तदा चतुर्गुणं मौल्यं धान्यानां कीर्तिके भवे [illegible] ॥ २७ ॥ श्रावणे
शुक्ल पंचम्यां वृष्टि वांते दिनत्रयं ॥ दा [illegible] पश्चिमे शेर्यं दुर्भिक्षं धान्य संलयं ॥ २८
टीका ॥ चैत्र शुक्ल पक्ष की पंचमी कौ और पूर्व कौ पवन चले आ [illegible] वर्षै ॥ तौ भादौ
मैं तिगुणै मोल बिकाय रस गौरस घीव ॥ २६ ॥ और ज्येष्ठ शु [illegible] की पंचमी कौ
जो पवन चलै तौ मेघ वर्षै ॥ तौ कातिक मैं चौगुणै मोल अन्न [illegible] ॥ [illegible] ॥ और सा
वन की शुक्ल पक्ष की पंचमी कौ तीन दिन पवन चलै मेघ [illegible]
दिशा मैं धान्य की नाश होय ॥ २८ ॥ इति शुक्ल पंचमी फल [illegible]

णाख्यां श्रावणे चैव वर्षति ॥ सर्व सस्य परिज्ञा ज्य... घर ॥ नां...
२८ ॥ इति ॥ टीका ॥ चि॰ स्वा॰ वि॰ ये नक्षत्र चैत्र श्रावण...
कूं छांडि के अन्न का संग्रह करिये ॥ २९ ॥ इति नक्षत्र... ॥ मूल ॥ आ
षाढी पूर्णिमायां चन्द्र नैर्ऋत जाति नैर्ऋतः ॥ अनावृष्टि... नाशो जलकू
येन हश्यते ॥ ३० ॥ टीका ॥ आषाढी पौर्णिमासी को जो नैर्ऋत... की पवन चलै
तौ लोक विषैं वर्षा थोडी होय ॥ और सकल अन्नादिक धान्य... थोडा उत्पति हो
य ॥ नव सर कापास समाई जायत ए थोडा उपजै जलकू... दीषै ॥ ३०
मूल ॥ आषाढ पूर्णिमायां तु वायव्यां यदि मारुतः ॥ धर्म... दा लोके
धन धान्य रहे र है ॥ ३१ ॥ टीका ॥ आषाढ की पूर्णिमासी को वायव्य दिशा की
पवन चलै तौ लोक विशेष शील धर्म होई ॥ ३२ ॥ मूल ॥ आषाढ पौर्णिमायां तु
ईशान्यां यदि मारुतः ॥ पृथिवी नो हित दा लोकाः गीत्वा द्य परायणाः ॥ ३२ ॥ वन्हि
कोणे वन्हि भीतिः पश्चिमे च जलाङ्गयं ॥ अमन्वयादि वायुः स्यात भिन्न जाय
ते तदा ॥ ३३ ॥ टीका ॥ आषाढ की पूर्णिमासी को ईशान दिशा का पवन चलै तौ

५२ लोके

शी·टी· विशेषसुख होय सब मनुष्य आनंद करै ॥३२॥ और जो अग्निकोणकी पवन चले
तौ जलको भय होय ॥३३॥ मूल ॥ सर्वमासेषु पूर्णिमायां भूमिकंपो यदा भवेत् ॥ उ
ल्कापातो वा वज्रपातः सत्यः शशिसूर्ययोः ॥३४॥ धूम्रकेतुः चक्रचापः ग्रहणे व
धूमपातथा ॥ तदा च सर्वत्र लोकानां जायते च महर्घता ॥३५॥ टीका ॥ किसी महीने
की पूर्णिमाको भूमिकंप होय ॥ अथवा वा दिनमे तारा टूटे का उल्का तारा वज्र
पात गाज परे तौ का चंद्र सूर्यका ग्रहण परे का धूम्रकेतु उ [illegible] आव तो साई
द्र धनुष ऊगै ॥ वहुत ग्रहण परे तौ सकल वस्तु महगी होई ॥३५॥ [illegible] अथ [illegible]
उत्पात फलं ॥ मूल ॥ आषाढे शुक्लपक्षे च प्रथमा द्वितीयायां च व [illegible] वर्ष भवत्
दा व [illegible] जायते श्रावणे ध्रुवं ॥३६॥ टीका ॥ आषाढ सुदि पड [illegible] तौ श्रा
वणमें वर्षा होय ॥३६॥ मूल ॥ तृतीयायां [illegible] वायुः पूर्वे जाति [illegible] यदि
ओ मलदामा द्वे वर्षति विपुलं जलं ॥३७॥ टीका ॥ आषाढ [illegible] से
वर्षै तौ भादौ जाई वर्षै ॥३७॥ मूल ॥ चतुर्थ्यां दा दक्षिणो वायुः [illegible]
श्विने च यदा मासे वृष्टिर्भवति निश्चितं ॥३८॥ टीका ॥ आ [illegible]

णकी वायु पूर्व को जायतौ आश्विनमे बहुत वर्षा होय [illegible] थरे ॥ संग्रह: ॥
३८ ॥ मूल ॥ पंचम्यामस्तरे वायुः दृश्यते चयदा बुधैः ॥ तद [illegible] ॥ [illegible] फलं [illegible]
मेवतिमयसी ॥ ३७ ॥ टीका ॥ आषाढसुदि ५ को उतरकी प [illegible] मूल ॥ तके
मेव बहुत वर्षा होय ॥ ३९ ॥ मूल ॥ चतुर्थ्ये चादिवसे यदि वर्षा [illegible] नाशो आतव
स्याच दुर्भिक्षं जायते नात्र संशयः ॥ ४० ॥ टीका ॥ आषाढकी [illegible] कीप को मेघ
वर्षे तौ अतिवर्षा होई अन्नथारे होय दुर्भिक्ष परे ॥ ४० ॥ मूल ॥ [illegible] थाउ यय दाजा
तो वात दक्षिण पश्चिमे ॥ तदा नश्यति धान्यानि दुर्भिक्षं च [illegible] ॥ ४१ ॥ टीका
आषाढसुदि ॥ ४ ॥ ३ ॥ पवन दक्षिण ते पश्चिमको जायतौ धान्य [illegible] होय ॥ ४१ ॥
मूल ॥ तृतीयायां च पंचम्यां वायुपूर्वोत्तरो यदि ॥ तदा धान्यानि जायंते सर्वे क्रत
युगोपमं ॥ ४२ ॥ टीका ॥ आषाढसुदि ॥ ३ ॥ ५ ॥ को पूरब वा इसके उतर ह हरी चलेतौ ब
हुत अन्न होय सतयुगकेसा ॥ ४२ ॥ मूल ॥ इत्याषाढशुक्ल द्वितीयादि दावत [illegible]
फलं ॥ पौषमूल मरणांत चंद्रचारेण गर्जति ॥ आर्द्रादितो विशाखायां सर्वेष्व
हेन वर्षति ॥ ४३ ॥ टीका ॥ जो पौषमासमे मैनि निस्यके चांद्र कनदत्र तेमरणालो

५५

श०टी० इनमें ११ बादरमाहोयतो आर्द्रनमेंविशाखालो ११ सर्येन दान्नानावरषैजो
इनमेंबादरहोयतोवैवरषै॥४३॥मूल॥यदितिष्ठतिभौमस्यदेवकोपिगृह
तदा॥ग्रामोसंतुषधान्यानांजायतेचमहर्घता॥४४॥टीका॥जोभौमकेदे
त्रकोउग्रहहोयतो ६ मासलौंहलकाजोतास्मन्नमहगारहै॥४४॥मूल॥शु
क्र देवे कुजेमासद्वयंन्नंमहर्घता॥चंद्रंचदिननाथेचसर्वेरोगाःशुभंतदा॥४५
टीका॥शुक्रकेक्षदेत्रीभौममें ६ मासमहगोरहै जोरविचंद्रके [illegible] क्षेत्रमेंकुज०
होयतोरोगहोई॥४५॥मूल॥शनौराहौसर्वधान्यंमहर्घंराजविग्रहः॥बुधेदे
त्रे रवौचंद्रेविरोधंसर्वेभभंजा॥४६॥टीका॥जोशुक्रक्षेत्रे [illegible] य औरशनि
राहुजायमिलेतोसकलअन्नमहगोहोय॥४६॥औरराज [illegible] मेंविरोधहोय
औरजोबुधकन्यामिथुनमेंहोय तिनमेंसूर्यचंद्रमादोनो [illegible] मिलेतोजोए
केराशिकेहोयजायतोहराजराजनमेंबडाविग्रहहोय [illegible] उत्पति
लवधान्यानांपंचमासञ्जायते॥हमिदंचमहर्घता पश्चा [illegible] रा [illegible]
४७॥टीका॥औरपश्चौतहीयोगासो ५ मासपर्यंतअन्नकीव्रतिउत्पत्तिकोह [illegible]

कालहोयरहेचौपायनकोचारावङ्कतहोय ॥ ४८ ॥ मूल ॥ शुक्र देत्रे मे वं[illegible] ॥
चंद्र देत्रेभ गोस्तत: ॥ पांषंडानां भवेद्वृद्धि: धाम्मानांच मह[illegible] ॥ [illegible]
जोशुक्रकी राशिके बुध चंद्रमा होय औरचंद्रमाकी रा[illegible] पांषं
डकीवृद्धिहोय ॥ ४८ ॥ मूल ॥ बुधे देत्रे शनौ चंद्रे सम धाम[illegible] हर्षेता ॥ शुक्रदे
त्रेगुरौभौमेकर्पासादिमहर्घता ॥ ४९ ॥ टीका ॥ बुध देत्रे मे[illegible]नि चंद्रमा होय
एकत्रअन्नमहगोहोय सातोअन्नधाटविके ॥ औरशुक्र[illegible]त्रमेगुरुभौम
होयतौकपासआदिकजेषटरसहैतेमहगोहोय ॥ मूल ॥ भौम देत्रे शनौ
राहौताम्रादीनांमहर्घेता ॥ शनि देत्रे शनौ राहौ समभेद[illegible]द्रमाकरे ॥ ५०
टीका ॥ जो भौमके घरमे शनिराहु एकठे होयतो तो ताबूं आदिलेके धा
तौ धातुमहगोहोयनिश्चै होय ॥ औरशनिकी राशिमें शनिराहुएकत्रहोय
तौ जो चंद्रमा सूर्ये जाय मिलेतो समभित्त होय ॥ ५० ॥ मूल ॥ पशुनाशो धा
न्यवृद्धिर्गुडादीनांमहर्घता ॥ गुरु देत्रे शनौ राहौ लवणस्तरणसयं ॥ ५२ ॥
टीका ॥ गुरुकीराशिमें शनिराहु होयतो पशुनकोनाश होय अतरणादि

वा॰री॰ कनकीतयहोय॥५१॥मूल॥भौमेराज्ञांविरोधस्स्वबुधेवृष्टिश्चभूयसी॥तत्रएवविष्टः
पशूनांचसौख्यंधान्यबहुनिच॥५२॥टीका॥जोगुरुक्षेत्रमेंभौमहोयतौराजानमें
विरोधहोय॥औरजोगुरुकेक्षेत्रमेंबुधहोयतौवर्षाअधिकहोयतत्रएवहिकवि
शेषहोयपशूनकोसुखकोयधान्यबहुतपैदाहोय॥२२॥मूल॥भौमेक्षेत्रेयदा
संतिराहुभौमार्किमार्गकः॥कामासंगुडसर्पोसघृतन्नामहर्घता॥५२॥टीका
जोमंगलकेक्षेत्रमेंराहुहोयतौअथवाभौमशुक्रहोयतौ [illegible] भौमशुक्रहो
यकासमयेंहोयतौमहीनेलौंगुडकपासघृतदूधमहंगाहोय॥५३॥मूल॥मंद
क्षेत्रेयदासंतिमंदराहुबुधलग्ना॥चतुष्पदानांनाशश्चविप[illegible]यजायते॥५४
टीका॥शनिक्षेत्रमेंशनिराहुबुधहोयतौचतुष्पदकोनाशहो[illegible]मविग्रपदजो
मनुष्यहैतिनकोनाशहोय॥५४॥मूल॥भौमक्षेत्रेयदासंति[illegible]मिलै[illegible]करे
तदामंत्रापशूनांचधान्यस्यचमहर्घता॥५५॥टीका॥जोभौ[illegible]
चंद्रमाहोयतौपशूनकोनाशहोयऔरसंखमहंगोहोय॥मूल॥[illegible]
नागवस्त्रधान्यानांचमहर्घता॥शनिक्षेत्रेरविश्चंद्रैवक्षाएंवृत्तिउत्पत्तिःकोट[illegible]

का॥ भौमके क्षेत्रमे शुक्र जायतौ अन्नमहगो होय॥ औरशो[illegible] शुक्र क्षेत्रमे व[illegible]॥
वषमहगो होइ तामें विशेषकरि अन्नपीतवर्णकेव[illegible]॥ ५[illegible]
मूल॥ शुक्रक्षेत्रे गुरौ भौमे प्रजापीडा च जायते॥ ग्रहराशि[illegible]
।कीर्तिताः॥ ५७ ॥टीका॥ जो शुक्र क्षेत्रमे भौम गुरु योग करै[illegible] पीडा
होय॥ ऐसे ग्रहको और राशिनको योग आनिपरै तौ ऐसे फल[illegible] निचंद्र शुभ ५७
मूल॥ चंद्रोदये कुजक्षेत्रे लवधान्यमपूर्वक्रये॥ चंद्रोदये म[illegible] लब्धि
कल्याणाय॥ ५८ ॥टीका॥ भौमके क्षेत्र चंद्रमाका उदय होय तौ[illegible] भौम मिलै तौ
धान्यकी वृद्धि होय॥ ५८ ॥मूल॥ प्रजापीडा बुधक्षेत्रे सोम[illegible]यो भवेत्॥
रविक्षेत्रे तुलावृद्धि शनि सोम भृगोदयः॥ ५९ ॥टीका॥ बुधके क्षेत्रमै चंद्र शुक्र
का उदय होय तौ प्रजाको पीडा होय॥ और सूर्यकी राशिमे शुक्रका उदय हो-
य तौ तुला जो है डाडी तिसकी वृद्धि होय अन्नसस्ता विकै॥ ५९ ॥मूल॥ चंद्रक्षेत्रे
शुक्र चंद्र बुधेनाभ्युदयो भवेत्॥ षण्मासमध्ये दुर्भिक्षं मनिवृष्टिश्च जायते॥
६० ॥टीका॥ जो चंद्रक्षेत्रमे शुक्र चंद्र बुधके उदय होय तौ ६ मासपर्यंत लो दुर्भि

शी॰टी॰ दा होय महर्गो रहै वर्षा अधिक होय ॥ ६० ॥ मूल ॥ उदितौ च बुधे क्षेत्रे यदा रा
हुः शनैश्चरे ॥ पशुक्षय प्रजापीडाः धान्यानां च महर्घता ॥ ६१ ॥ टीका ॥ बुधके
क्षेत्रमें राहु शनिका उदय होय तो पशुकी क्षय प्रजापीडा होय अन्न महर्गो हो
य ॥ ६१ ॥ मूल ॥ शुक्रक्षेत्रे सोम्यसूर्ये सूर्यपुत्रो दयो यदा ॥ उदयात् महापीडा॰
जायते च महर्घता ॥ ६२ ॥ टीका ॥ जो शुक्रके क्षेत्रमें चंद्र सूर्य शनि का उदय॰
होय तो सूर्यके उदयतें अस्त पर्यंत पीडा होय अन्न महर्गो हो[illegible] ॥ मूल ॥ य
दोदय शनिक्षेत्रे भौम भास्करयो भवेत् ॥ घृतानां च तदा [illegible]नां च मह
र्घता ॥ ६२ ॥ मूल ॥ जो शनि क्षेत्रमें सूर्यका उदय होय तो घृ[illegible] ॥ जो
रस कपड़ा महंगा होय सो भाग्य भाषित पदार्थ सब सस्ते रहै ॥ [illegible] क्षेत्रमें
भौम होय तो हू पूर्वोक्त फल होय ॥ ६३ ॥ मूल ॥ यदा सौम्[illegible] क्षेत्रे
शनैश्चरः ॥ तदा सौतृणकाष्ठानां लोहानां च महर्घता [illegible]
त्री शनि में तृणकाष्ठ होय वे महंगो होय ॥ ६४ ॥ इति य[illegible]
गुरुर्ये दा विशो वायांते दा धान्य महर्घता है मंगल व[illegible]

मंगलम् ॥ ६४ ॥ टीका ॥ जो विशाखाके गुरु होय तो सब [illegible]

लौ सर्वमंगल विनोद रहैः ॥ ६५ ॥ मूल ॥ आर्द्रायां लयद [illegible] ते

नवेत् ॥ बुधेमार्द्रे च तत्र भिदं सुभिदं महागुनं दशने ॥ ६६ ॥ टी[illegible] ॥

ल होय अथवा शनि होय तो दुर्भिक्ष होय ॥ और पूर्वाभाद्रपद [illegible] तो दु

दुर्भिक्ष परै ॥ ६६ ॥ शुक्र होय तो सुभिक्ष परै ॥ मूल ॥ सुभिक्षं च [illegible] ग्रहा दि

कोपि ग्रहो भवेत् ॥ कल्याणं च सुभिक्षं च दश्लेषायां स्थितेग्र [illegible] टीका ॥

जो चंद्रमा घा कोई ग्रह होय तो सुभिक्ष होय ॥ और जो श्लेषाके [illegible] होय तो प्र

जाका कल्याण होय सुभिक्ष होय ॥ ६७ ॥ मूल ॥ कर्पास वह [illegible] सौ सैकर्त

टपीडनं ॥ बुधे तल्लाश्च माषाश्च महर्घे वर्षकालतः ॥ ६८ ॥ सूर्येस्थो[illegible]ण धा

न्यानि महर्घानि भवंति च ॥ शुक्रे च महती वर्षा सस्यानि सकलानि च ॥ ६९ ॥

टीका ॥ जो श्लेषाके मंगल होय तो कपास सस्ती होय और फौज नमें पीडा हो

य ॥ जो बुध श्लेषाके होय तो तिल उर्द वर्षे दिनलौ महगे रहै ॥ ६८ ॥ और जो

श्लेषाके सूर्य होय तो अन्न महगो होय श्लेषाके शुक्र होय तो वर्षा वहुत हो

शी॰टी॰ य अन्नसववऊत होय॥६९॥मूल॥मूलेगुरौ कुलस्यानां सद्धाश्ववकुधामवे
त॥ भौमे मद्धस्यनाशस्यबुधे चसर्वत्रसंपदा॥७०॥टीका॥जो मूलके गुरु होयतो
कुलमें राग बहुत पेदा होय॥ और जो भौम होयतो मूलनाश होय और बुधके हो
यतो सर्व संपदा होय॥७०॥मूल॥पूर्वाषाढगते भौमे पीडा चपश्चूद क्षिणां॥केतौ
महर्घता मंदे जायते च महर्घता॥७१॥टीका॥जो पूर्वाषाढके भौम हो [illegible] प
शूपक्षिणाकों पीडा होय अधिक॥ और केतु होयतो सकल व [illegible] होय
७१॥मूल॥उत्तराषाढके जीवे गुडानां च महर्घता॥ भौमे चप [illegible] कां जाय
ते च महर्घता॥७२॥अभिजि नाम नक्षत्रे यदा ह्यायास्तो [illegible] सम्पत्ति
जायंते सुभिक्षं च कुजे तथा॥७३॥टीका॥जो उत्तराषाढके [illegible] होयतो
गुड महंगो होय॥ और जो भौम होयतो चौपाये महंगो होय [illegible] अ
जित नक्षत्रके शनि होयतो सर्व अन्न उपजे सुभिक्ष होय [illegible]
यदा जीवे तदा स्युः सर्वसंपदा॥ बुधे राजसुत त्रासो शनै [illegible]
७४॥कृतिकायां च रोहिण्यां यदा जीवो हि लिख्यते॥ मघा [illegible]

दवच्छिश्रमध्यमाः ॥७५॥ टीका ॥ जोश्रवणकेविषहस्त [illegible]

यबुधहोयतोराजपुत्रनकोपीडाहोय औरजोशनि [illegible]

तउपजे ॥७४॥ जोकृतिकारोहिणीकेगुरुहोयतो [illegible]

मध्यमहोय ॥७५॥ मूल ॥ आर्द्रायांमृगशीर्षेचययदावास्य [illegible]

दंसपादनावर्षेप्रजानांचसदाशिवं ॥७६॥ टीका ॥ जोआर्द्रा [illegible] गशिरके

गुरुहोयतोदुर्भिक्षहोयवर्षाथोडीहोय ॥ अनेकप्रकारप्र [illegible]

औरपीडाहोय ॥७६॥ मूल ॥ फाल्गुणीद्वयहस्तेषुमघा [illegible]

सुभिक्षंसमवच्छिश्रप्रजानांस्यादरोग्यता ॥७७॥ टीका ॥ [illegible] हस्तउत

राहस्तकेगुरुहोयतोसुभिक्षहोय ॥ अन्नउपजेवर्षाभलीहोयप्रानाथाहोय

७७ ॥ चित्रास्वातिकेगुरुहोयतोविचित्रमेघवर्षे ॥ औरएकहेंएकहेंविचित्रफल

फूलेअन्नथोथकउपजे ॥ मूल ॥ विशाखामैत्रयोजीवेधान्यंवर्षेचमध्यमा

ज्येष्ठामूलेमासयुग्मंवरच्छिमासद्वयोनच ॥७८॥ टीका ॥ विशाखाअनुरा

धाकेगुरुहोयतोवर्षे१दिनलोअन्नमध्यमरहे ज्येष्ठामूलकेगुरुहोयतो

६०

शी०टी०

मिथुन ३ ढाहकर्क ४ माठासिंह ५ पाठाकन्या ६ रातातुल ७ नोयावृश्चिक ८॥
माधाधन ९ षागामकर १० गोशाकुंभ ११ दाचामीन १२॥ इति लघु राशिः॥
मूल॥ तनु १ धनं २ भ्रात ३ चै ४ व सुहृत्सुत ५ फलत्रका ६ मरणं धर्मकर्माय
व्ययका द्वादश राशयः॥ सप्तविंशति मानांच नवभिर्नवभिः पदैः॥ २॥ अश्विनी
प्रमुखानां च मेषाद्या राशयस्मृताः॥ २॥ अथ तन्वादि [illegible] मानां बला
बलोक्त्यर्थनिर्णय ग्रहात शुभाशुभ फलज्ञानार्थे ग्रहाणां [illegible] का व्याक्र
मादृष्टि निर्णयः॥ मूल॥ तृतीये दशमे पंच नवपंचमयो दृ[illegible] पंचाष्ट
मेतुर्ये सप्तमे विंशति स्तथा॥ ४॥ विश्वाल ग्रह दृष्टीनां मेष[illegible] च्यते॥
पंचविंशोपकं प्रोक्तं पादमेकं क्रमोच्यते॥ ५॥ आये व्यये ध[illegible] यो
न दृश्ययः॥ ३॥ टीका॥ पंचविश्वा दृष्टि कौ एकचरण १ का[illegible]॥
२० विश्वालो चारचरण जानिये आयक हियै ११ व्यय[illegible]
लग्न कहै १ वहै कहै है ६ इन स्थानो मै काहू ग्रह की दृष्टि[illegible]
मूल॥ तृतीये दशमे मंदो नवमे पंचमे गुरुः॥ विंशते वी[illegible]

मेकुजः॥ ४ ॥ टीका ॥ तीसरे ३ दशमे स्थान शनिश्चर [illegible]
हस्पति और चौथे ४ आठवे ८ स्थान मंगल या प्रका[illegible]
सो २० विंश्वा संपूर्ण दृष्टि जहां परे हेत ह्यां देषत है ॥ [illegible]
कर्म विशोपक दृष्टिः ॥ मूल ॥ रविवारे एम युक्तायदा [illegible]
यो: ॥ अमायां तत दा पथ्वी खंड मंडंच जायते ॥ ५ ॥ टीका ॥ म[illegible] यो:
की अमावस्या जो रविवारी होय तो पथ्वी में खंड मुंड होय ॥ [illegible] अफला
त्रिगुणा मासा एक पंचाशत युताः ॥ दलिता घटिका [illegible] त्रिगुण
वामयाः ॥ ६ ॥ टीका ॥ मकर की अयन जो न दिन लगी होय [illegible] जनसे वने
मान दिन लो जे महीने परे वीत चुके हो तेई त्रिगुण को करत [illegible] ॥ पर रवा
वन और जोरकै सो अंक आधे करे जो रहे तितनी घरी जानिये ॥ और म
हीनन ते अधिक जे ई दिन वढे होय ॥ तिन को त्रि ३ गुनी करके जो अंक हो
य तितने पल उन घरिन जोरकार तेही दिन को प्रमाण घु कपा प्रकार
जानिये ॥ और कर्क की अयन के दिन ते गनि किया ही गनित सो रात्रि प्रमान

शी॰टी॰ जानियै॥ परंतुउत्तरायणसूर्येविषे दिनवढत है तहां दिनवनाइये॥ औरद-
क्षिणायनमें रात्रिवढत है तहां रात्रिप्रमाणवनाइये॥ ६॥ मूल॥ एकपक्षे यदा
जाताः तिथयश्चत्रयोदशाः॥ त्रयस्तत्र लयंयांतिवाजिनोमनुजागजाः॥ ७॥
टीका॥ जोएकपाखमें १३ तिथहोयतो मनुष्यघोडाहाथिनकोनाशकरे॥ ७
मूल॥ सूर्येयुक्तचंद्रनक्षत्रा दिनभं चत्रयंत्रयं॥ आदित्याश्चबु [illegible] शु [illegible] शनिश्च
द्रकुजास्तथा॥ ८॥ जीवोराहुश्चकेतुश्च होमंक्रूरान्नशोमने [illegible] चमवे

सू॰	बु॰	शु॰	श॰	चं॰	मं॰	वृ॰	रा॰	के॰
॰२	॰२	॰२	॰२	॰२	॰२	॰२	॰२	॰२
कू॰	शु॰	शु॰	कू॰	शु॰	कू॰	शु॰	कू॰	कू॰
ने॰	शु॰	शु॰	ने॰	शु॰	ने॰	शु॰	ने॰	नेष्ट
सू॰	बु॰	शु॰	श॰	चं॰	मं॰	वृ॰	रा॰	के॰

क्षोकवधे संपतिरत [illegible] शुकेचे
वधनंप्राप्तःशनोपी [illegible] पल॥ चंद्रे
भवतिलाभश्चभौमे [illegible] भवा॥ ९॥
गुरौश्चपमेकल्याणं [illegible]
दाः॥ केतौश्चप्रा [illegible]
दाहतं॥ ९॥ टी [illegible]
होय तानक्षत्रतेतीन तीनन क्षत्रसूर्योदियहकोवाढि [illegible]

केनतत्रलोगानिये ॥ जोशुक्रग्रहकेभागमेआनिपरैतोन [illegible] गो
होयतौशोकहोयबुधकेभागमेउतमसंपतिहोयशुक्र [illegible] तो
कलामहोय शनितेपीडाहोय चंद्रतेपीडाहोय भौमते [illegible] ।
१०॥ गुरुतेविशेषकल्याणहोय ॥ राहुतेसर्वहानिहोय केतु [illegible] है
होय ॥ याक्रमसैवन्हिचक्रकहाहै होमकेविचारकों शुभ [illegible] है तौ
मिलै तबहीनकरैतौकल्याकादाताहै ॥ इतिहवनकोमें [illegible] निवास
ज्ञानि शुभाशुभं ॥ मत्ल ॥ सैकातिथिर्वारसहितायुनाम्नाशेषेगुरु [illegible] निवासः
सौख्यायहोमेशशियुग्मशेषेप्राणार्थनाशौदिविभूतलेच [illegible] ॥ ति
थिवारजोसएकत्रकीजे तामेएकओरमिलावैफिरतीनकोभाग [illegible] जौती
नसून्यभागवचैतौपृथिवीमेजानियेसोसुखकोकरै एकवचैतौ [illegible] विषै
जानियेसोप्राणकोसंदेहकरै ॥ जोरवचैतौपातालमेजानियेसोलक्ष्मीको
नाशकरै ॥ इतित्रिलोकअग्निवासफलं ॥ मत्ल ॥ प्रभवोविभवःशुक्लःप्रमोदो
यप्रजापतिः ॥ अंगिराश्रीमुखोभावोयुवाधातातथैश्वरः ॥ २३ ॥ बहुधान्य

श्री॰टी॰ प्रमाथीचविक्रमोवृषभस्तथा॥ चित्रभानुस्वभानुश्चतारणःपार्थिवोव्ययः
ब्रह्मविंशतिरित्येतेरुद्रेप्रजायते॥टीका॥ अब २० संवत्सरकहतेहैः प्रभ
व १ विभव २ शुक्ल ३ प्रमोद ४ प्रजापतिः ५ अंगिरा ६ श्रीमुख ७ भाव ८ जुवा
९ धाता १० ईश्वरः ११ बहुधान्य १२ प्रमाथी १३ विक्रम १४ वृषभ १५ चि
त्रभानु १६ स्वभानु १७ तारण १८ पार्थिव १९ व्यय २० ये २० वीसंवत्सर ब्र
ह्माकीवीसीकेहैइनमेंरुद्रेरचतहै॥इतिविंशतिः॥ब्रह्मा[illegible]॥ सर्वे
जित्सर्वधारीचविरोधीविक्रमस्तथा॥ खरोनंदननामाच[illegible]जयश्चजयो
पर॥ मन्मथोदुर्मुखश्चैवहेमलंवविलंवको॥ २६॥ विकारी[illegible]चापलवश्च
शुभकृत्तथा॥ शोभनश्चततथाक्रोधीविश्वावसुततःपरा[illegible]ाभवश्चो
च्यपरोविष्णोरित्येवविंशतिः॥टीका॥ अबविष्णुकीवीसी[illegible]
त् १ सर्वधारी २ विरोधी ३ विक्रमः ४ खर ५ नंदन ६ वि[illegible]
९ दुर्मुख १० हेमलंव ११ विलंव १२ विकारी १३ सर्वरी[illegible]
१६ शोभन १७ क्रोधी १८ विश्वावसु १९ पराभव २०॥ इ[illegible]

मूल ॥ प्लवंगकीलकः सौम्यस्तथा साधारणोपरः ॥ विरो[illegible]
परभावी प्रमाथी दः ॥ आनंदो राक्षसश्चाथ नलश्च पिंग[illegible]
धिरोद्गारी रक्ताक्षो क्रोधनस्तथा ॥ २० ॥ क्षयकृत्स्य रतश्चा[illegible]
शतिः ॥ वत्सरः षष्टिराख्याता नामतुल्यफलप्रदाः ॥ २१ ॥ [illegible]
वीसी कहते हैं ॥ प्लवंग १ कीलक २ सौम्य ३ साधारण ४ [illegible] कृत ५ पर-
धावी ६ प्रमाथी ७ आनंद ८ राक्षस ९ नल १० पिंगल ११ [illegible] १२ सिद्धार्थ
१३ रौद्र १४ दुर्मुख १५ दुंदुभी १६ रुधिरोद्गारी १७ रक्ताक्ष १८ [illegible] क्रोधन १९ क्ष-
यकृत् २० ॥ इति षष्टिसंवत्सरनामानि ॥ मूल ॥ मेषस्य वृश्चिक[illegible]स्य शुक्रो वृष
तुलाधिपः ॥ बुधः कन्यामिथुनयो कर्कस्य पतिश्चंद्रमा ॥ २१ ॥ स्वामी मीनधन
जीवः शनिर्मकरकुंभयोः ॥ सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥
२२ ॥ टीका ॥ मेषराशि वृश्चिकराशिके स्वामी मीन ॥ २ वृषतुलाके शुक्र क-
न्यामिथुनके बुध कर्कके चंद्रमा मीनधनके गुरु मकरकुंभके शनि सिंह
के स्वामी सूर्य जानिये ॥ २२ ॥ मूल ॥ कन्याराज्ञ्यहं प्रोक्तं कर्कते वाश्च मिथुने स्मृता

टीका॥ कंन्या केपतिराज मिथुनकाकेतु॥ इतिराशिस्वरः॥ मूल॥ कार्तिका
द्विगुणामासागताश्चतिथिभिर्युताः॥ सप्तविंशतिभिर्न्नंदिनताऽरेकसंयुताः
२४॥ टीका॥ कार्तिकके गत मासद्विगुणोकीजे परवाते लेके तिथिजोरे॥
२७ तामेको भागकीजे शेष्रंकमे १ और जोरे अश्विनी सेगनिन [illegible] जाने
२४॥ मूल॥ राहूनी च धनष्टेवकेतु स्तस्माच्च सप्तकः॥ २५॥ [illegible]॥ धनका
राहूनीचताके सप्तमकेतु॥ मूल॥ वारेरूपतिथौ सुद्धा घट [illegible] शेषच॥
एकत्रिंशत्पलंदद्यात्सूर्य संक्रमणो भवेत्॥ २५॥ टीका॥ जो [illegible] लेनलायो
चाहे तो पिछले सालकी चाहिये जिकसी संक्रांतिके वा रके [illegible] अंकवार
को औ रतिथिमे ११ तिथबढावे और घरिनमे १५ घरी [illegible] पलनमें
३१ पलमिलायकै भागपूर्वक शुभकाल हो तो सो ही सं [illegible]
य॥ २५॥ मूल॥ माघी छमी सपूर्व स्मिन् उदितो यस्य [illegible]
सूर्ये मंगलेचलतो वसेत्॥ २६॥ उदितः पश्चिमे भागेन [illegible]
शाहस्सर्वेस छेदततः चालमितो भवेत्॥ २७॥ एकत्र [illegible]

जोविग्रहे॥ तीर्थयात्रा विवाहे च शुक्रदोषो न विद्यते॥
होने में शुक्र पूर्व दिशा में उदय होता है फिर ढाई २॥ मही [illegible] ता
न है फिर पूर्व दिशा उदय होत है॥ २८ जो एक गाउं में बस [illegible]
स ना मानिये अपवाम दुर्भिक्ष में राजविग्रह में विग्रह तो विवे [illegible]
त्रा के विवे में शुक्र का दोष सन्मुख वा दाहिने का मानिये॥ २८ [illegible] क दोष
निर्णयः॥ मूल॥ दशार्द्राद्याः स्त्रियस्ताराः विशाखाद्या नपुंस [illegible] लतश्च
मूलाद्याः पुरुषाश्च चतुर्दश॥ २९॥ टीका॥ आर्द्रा से १० न [illegible] तारों की संज्ञा है
विशाखा आदि ३ नक्षत्र की नपुंसक संज्ञा है मूल आदि १४ [illegible] नक्षत्र की पुरु
ष संज्ञा है॥ २९॥ मूल॥ स्त्रीपुंसयोर्महावृष्टिः स्त्रीनपुंसकयोः ध्व [illegible]॥ स्त्री स्त्री
योः शीतलच्छाया योगो पुरुषयोर्न च॥ ३०॥ टीका॥ आर्द्रा आदि दे १० नक्षत्र ये
वर्षा के है सो जो स्त्री पुरुष योग में लगे तो वर्षा अधिक होय॥ और स्त्री नपुंस
क योग में लगे तो थोड़ी होय वा इंनवषे॥ और जो स्त्री स्त्री के योग में लगे तो व
र्षा अधिक होय वादर की छाई बनी रहे॥ ३०॥ मूल॥ उदयात्लगाते शुक्रे वु·

 घष्ठवृष्टिकारकः॥ जलराशिस्थिते चंद्रे पदांते संक्रमेत यः॥ ३१ ॥टीका॥
जब शुक्र उदय अस्त होय तो वर्षा अधिक होय॥ और जो जलराशिका चंद्रमा
होय और पक्षके अंतमें संक्रांति परै तो हू मेघ वरषै॥ ३१ ॥मूल॥ चलसंगार
को वृष्टिनिरोधा वृष्टशनैश्चरे॥ वारिपूर्णा मही कृत्वा पश्चात्संचरते गुरु॥ ३२
ग ॥टीका॥ जब मंगलकी चाल है तब मेघ वर्षै और शनिकी चाल [illegible] उदय अस्त
होय तो जहां जहां वर्षा होय और तिनके पाछे गुरु हो[illegible] पृथ्वी
के विषै महावृष्टि होय॥ ३२ ॥मूल॥ बुध शुक्र समीपस्थः [illegible] का गांवी
मही॥ तयोरंतर्गत भानु समुद्रमपि शोषयेत्॥ ३३ ॥टी[illegible] शुक्र
क राशिके होय तो संपूर्ण पृथ्वीके विषै जलवृष्टि होय [illegible] राशि
के बीचमें सूर्य परै तो समुद्रहूकोशोषै फिर वर्षा कहा [illegible]
भानोरग्रे भूमिपुत्रो जलशोषकृजायते॥ भानोपश्चा[illegible]
भयप्रदः॥ ३४ ॥टीका॥ जो सूर्यके आगे मंगल होय तो [illegible]
जलका शोष करै तो है और सूर्यके पाछे होय तो वर्षा [illegible]

तिवर्षान्नदत्त ॥ भेदाविग्रहचारफलं ॥ मूल ॥ कर्के [illegible]
वदिवाकरे ॥ पूर्वेवापश्चिमेवापि द्वारं कुर्यात्सुवेश्म [illegible]
कुंभ सिंह मकर इन राशिनके सूर्य होय तो जो घरव [illegible] क
थवापश्चिम द्वार दिशा की जिये तो सौख्य है ॥ ३५ ॥ मूल [illegible] ३७ ॥
केवललेचापि यद्दारविः ॥ गृहद्वारं तदा कुर्यात् [illegible] ३७ ॥
टीका ॥ जब कर्क कुंभ मकर राशिनके सूर्य होय तो घर [illegible] उत्तर दक्षि
ण दिशा कीजै सौख्य है ॥ मूल ॥ धन मिथुन कन्या [illegible] वयदि भा
नुमान् ॥ न कर्तव्यं तदा गेहं कृते दुःखमवाप्नुयात् ॥ ३८ [illegible] धन मि
थुन कन्या मीन इन राशिनके सूर्य में घर बनावै तो दुःख होय ॥ ३८ ॥ इति
गृहवास्तुमुहूर्त ॥ मूल ॥ यदैकमासे ग्रहणं जायते शशिसूर्ययोः ॥ शस्त्र
कोपस्तु यंयांति तदा भयपरस्परं ॥ ३८ ॥ टीका ॥ जो एक मास विषें चंद्रसू
र्यका ग्रहण परै तो को धते राजा जाल रिमैरः ॥ ३८ ॥ मूल ॥ ग्रस्तोदितौ
चग्रस्तौ च धान्य नृपाल नाशकौ ॥ सर्वग्रस्तौ चंद्रसूर्यौ दुर्भिक्ष मरणप्रदौ ॥

शी॰टी॰ ३९ ॥ टीका ॥ सूर्यचंद्रराहुकेतुकाग्रहणसै ॥ फिरउग्रहहोनलगो फिरग्रसे
तौधान्यकाअरराजाकानाशकरै ॥ औरसर्वग्रस्तहोयमनुष्यनकोमृत्यु
भयहोय ॥ ३९ ॥ मूल ॥ उपप्लागोयदामेषेपीड्यंतेवह्वोजनाः ॥ कांबोजाश्च
किराताश्चपांचालाश्चकालिंगकाः ॥ ४० ॥ टीका ॥ मेषराशिपेग्रहणहो
यतौकांबोजदेशअरुकिरातदेशपांचालदेशके कलिं[illegible]केमनु
ष्यकोपीडाहोय ॥ ४० ॥ मूल ॥ वृषेचग्रहणेपीडापशव[illegible]काजनाः ॥
महांतोमनुजाश्चैवतेपीड्यंतिचसर्वदा ॥ ४१ ॥ टीका ॥ [illegible]राशीकाग्रह
णपरैतौपशुनकोपीडाहोय औरपथिनकोपीडाहो[illegible]मनुष्यन॰
कोपीडा ॥ ४१ ॥ मूल ॥ रविचंद्रमसौग्रस्तौमिथुनेचवरा[illegible]याश्चा॰
न्हिकामत्स्याजमुनातटवासिनः ॥ ४२ ॥ टीका ॥ मिथुन[illegible]
ग्रहणपरैतौदेवांगनाजोहैतिनकोपीडाहोयऔ[illegible]
शोककोप्राप्तहोई ॥ औरजोवाल्हिकदेशमत्स्यदेश[illegible]
जनोंकोपीडाहोय ॥ ४२ ॥ मूल ॥ कर्केटग्रहणेपीड[illegible]

ते॥ श्वेतं सर्ववराणां च तद्वाजस्थानिवासिनः॥ ४२॥ टी[illegible]
णपरेतौ श्वेत खेस्के श्री खस खार देश श्री खमस्त्र दे[illegible]
य॥ ४२॥ मूल॥ सिंहे च ग्रहणे पीडा सर्वेषां वनवासिना[illegible]
नां मनजानां च जायते॥ ४४॥ टीका॥ जो सिंह राशीका ग्र[illegible]
सिनको श्री र राज श्री र राजपत्न म्न मनुष्यनको पीडा कले[illegible]
ल॥ कंन्यायां ग्रहणे पीडा त्रिपुराणां च शालिनां॥ कवीनां[illegible] च जाय
ते पीडनं तदा॥ ४५॥ टीका॥ जो कंन्या राशिका ग्रहणपरे[illegible] कर देश
श्री र थानन को श्री र कविपन को श्री र लेखनको पीडा हो[illegible]॥ मूल॥
तुलाया सपराणे च नश्यंते चक्रवाक बौः॥ कौकनं च परास्य च[illegible] साधव
श्चयोः॥ ४६॥ टीका॥ जो तुला राशपर ग्रहण परेतौ पक्षिणको काकि चकादि
क श्री र कोकन देश श्री र कायथनको साधनको सत्यवादिनको पीडा हो
य॥ मूल॥ वृश्चिके ग्रहणे पीडा सर्वजातस्य जायते॥ श्री इंद्र स्यम द्रस्य चौ
ल जौधेयकस्य च॥ ४७॥ टीका॥ वृश्चिक राशिपै ग्रहणपरेतौ सर्वजातिन

श्री·टी· को॥ औदुंबरदेश औरचौलदेशकेमनुष्यनकोपीडाहोय॥ ४७॥ मूल॥ य
दापरागेचापेचलदामत्स्याश्चवाजिनः॥ विदेहमल्लपांचालपीड्यंतेभिषको
विदः॥ ४८॥ टीका॥ धनराशिपरग्रहणपरेतो मत्स्यदेशको घोडनको॥
विदेहदेश मल्लदेश पांचालदेशकेवासिनको वैद्यपंडितनकोपीडाहोय
अतभयहोय विदेहदेशजनकपुर॥ ४८॥ मूल॥ मकरेयु [illegible] डानीचा
नांमंत्रवादिनां॥ स्थावरंजंगमानांच चित्रकूटस्थमंत्र [illegible] ॥टीका॥
जोमकरराशिपरग्रहणपरै नीचलोगमंत्रवादी औरस्था [illegible] जोहैव
त्तादिकजंगमजोहै पशुनकोपीडाहोय॥ अरुचित्रकूटके [illegible] कोपीडा
होय॥ ४९॥ मूल॥ कुंभेचैवोपरागेच पाश्चिमस्थेच लवंबै [illegible]
मेतः पीड्यंतेवर्कधामिदाः॥ ५०॥ टीका॥ जोकुंभराशिन [illegible]
वैत औरपश्चिमदेशकेमनुष्यनकोपीडाहोय औरवे [illegible]
औरअर्बुददेशकेमनुष्यनकोनानाप्रकारकाकष्टहोय [illegible]
है॥ ५१॥ मूल॥ मीनेपरागेपीड्यंतेजलद्रव्याणिसाग [illegible]

लोकापेचपद्यात्प्रीतिरुत्थ्यः ॥ ५१ ॥ टीका ॥ मीनराशि [illegible]
जीव औरजलाश्रय उपार्जित द्रव्यते जिनकी आजी [illegible]
जनन को पीडा होय ॥ ५१ ॥ अतिग्रहणफलं ॥ मूल ॥ द [illegible]
नीहारेचभयं करः ॥ विद्युत्पातोनिर्दाहे चपरिवेषस्यरो [illegible] ॥
ग्धाहोत्तिभयंकुर्यात्तु निर्घातो नृपभीतिदः ॥ कुंज्झावा [illegible]
भीतिप्रदायकैः ॥ ५२ ॥ ग्रहयुद्धं राजयुद्धं केतोर्दृष्टे तथै [illegible] ॥ [illegible]ते
महावृष्टिः सर्वदोषविनाशिनी ॥ ५३ ॥ टीका ॥ अब देख [illegible] कहत है
जो आकाशते घर विषै विना वायुके योग मक्कनाहट [illegible] प्रजाजन
की दुःखहोय राजनको भयहोय ॥ औरविनावादरविजली [illegible] तो अ
ग्निका भयहोय औरपरिवेषकहै सूर्यके मंडलऊपर आहणमासचक्र
सो दीषै तो अग्निभयहोय रोगहोय ॥ ५२ ॥ जो दिग्दाह होय तो जो दिशा
नविषै किंचितरात्रगयेपर्यंत अग्निलागी कैसी अरुणतादीषइतो ॥
अथवातारूटनहा ऊतो अग्निभयहोय औरनिर्घातकहै सकावा

दरगजैतौ राजानकाभयहोय॥ श्रौरऊंजावायु चलैमहाप्रचंडश्वेजा
सोंवज्राहिकटूटैतौ चोरनकाभयहोय॥५४॥इतिधूलिवर्षा उत्पातफ
लं॥मूल॥ अश्विन्यामश्लिवेतौ रुमाय्यालंकपालकं॥भरण्यां चकिरा
तेशकृतिकायांकलिंगकं॥५५॥टीका॥ जोअश्विनिपैकेतहोयतो लंका
केराजाकोपीडाकरै भरणीपैउदयहोयतौ किरातदेशके [illegible] कोपी
डाकरै॥कृतिकापैहोयतौ कलिंगदेशकेराजाकोपीडा [illegible] ॥मूल
रोहिण्यांसूरसेनेसौम्यो काशीनराधिपं॥आर्द्रायांजल [illegible] श्लेषमैके
सौपुनर्वसौ॥५६॥टीका॥ रोहिणीपैकेतहोयतौ सूरसेन [illegible] कोपीडा
करै मृगशिरकेहोयतौ काशीकेराजाकोपीडाकरै॥ [illegible] होयतौ
जलकेजीवनकोपीडै॥५६॥मूल॥पुष्येचमगधाधी [illegible]
काधिपं॥मघायांवंगनाथंचपूर्वायांपांडुनायकं॥ [illegible]
यतौमगधदेशकोपीडै॥श्लेषाकेहोयतौकाशीकेरा [illegible]
होयतौवंगदेशकेराजाकोपीडै॥पूर्वाकेहोयतौपां [illegible]

पीछे ॥ ५७ ॥ मूल ॥ उत्तरायिमांनं पंहोंतिद्रुत्तरापाल्यु...
पतेह त्वाचत्राधांकुरुमभ्मजां ॥ ५८ ॥ टीका ॥ उत्तरा... ...तो
राजाको पीछे ॥ हलमेदं द्वनकेराजाको पीछे । चत्राव...
कोपीछे ॥ ५८ ॥ मूल ॥ त्वात्वांकाश्मीरवांबोजभूपतीना... ...
त्वाकुकुरदेशानांविशाखोयांविनाशकः ॥ ५९ ॥ टीका ... ...कि
यतो काश्मीरवांभोजदेशपतिकाविनाशकरै जो... ...होयतो के
रत्नाकदेशको रवदेशके राजानकोनाशकरै ॥ ५९ ॥ ... ...
खनाशंच सतेभौमतथेंद्रुके ॥ अंधमद्रकनाथं च मूल ... ...मिश्रि
तं ॥ ६० ॥ टीका ॥ सूर्यराधातेउयरदेशके राजानकोनाशकर ... ...देशके हो
यतो सर्वपृथ्वीकेपतिकापीछे ॥ मंगलकेहोयतो अंधमद्रकदेशके राजा
कोपीछे ॥ ६० ॥ मूल ॥ पूर्वाषाढेकाशिराजउत्तराषाढकेतथा ॥ पौंड्रेयशेव
वैदेशाश्रवणेकेनायेश्वरं ॥ ६१ ॥ टीका ॥ पूर्वाषाढके होयतो काशीकेरा-
जाकोपीछे उत्तराषाढके होयतो पौंडूदेशशेवदेश औ राजनकपुरकेरा

श्री·टी· जाकोपीड़ाकरै ॥ श्रावणके होयतौ कैकयदेशके राजाकौपीडाकरै ॥ मू
ला ॥ वसोपंचलथाधीशंवनगौसिंहलेप्रवौ ॥ पूर्वाभाद्रपदावंगांनैमिषेशं
तथोत्तरं ॥ टीका ॥ धनिष्ठाकेहोयतौ पंचनददेशकेराजाकोपीडै ॥ श
तभिषाकेहोयतौनैमिषारण्यकेराजाकोपीडाकरै ॥ तथाओरहउत्तरदिशा
केदेशपतिनकोपीडाकरै ॥ मूल ॥ रेवत्यामश्विनीकेतौ किरा[illegible] ॥ तवे
घात ॥ धूम्राकारःसपुच्छस्यकेतोविग्रहस्यपीडका ॥ ६[illegible] शि
तीकेकेतउदयहोयतौ किरातदेशकेराजाकोपीडै ॥ श्री[illegible] ॥ ७१ ॥ टी
धूम्राकाआकारएंछसीहोय ताकोपूछकरताराकहै[illegible]तौअश्व
पसेउदयकरैतौ समस्तविग्रहकोपीडाकरै ॥ इतिकेतुद[illegible] भाव:
मानभौमार्किवारेषुकार्त्तिकेद्वत्ययोभवेत् ॥ आयुष्मान[illegible]
नाशोपश्रुतयः ॥ ६४ ॥ टीका ॥ कार्त्तिककीजोअमावस्या[illegible]
वारहोय औरयोतिननमेआयुष्मानजोगहोयतौ [illegible]
पश्चात्रिकउत्पातअधिकहोय औरपशुनकानाशहो[illegible]

गो च मेषाद्याश्चत्वार स्कृति शाकरः ॥ ते विना मिथुन [illegible]
धैः ॥ ६५ ॥ टीका ॥ धन मकर मेष वृष मिथुन कर्क रु [illegible] तो
है ॥ ६५ ॥ मूल ॥ शीर्षोदयाश्च चत्वारः सिंहाद्याः कुं [illegible]
मीन लग्नवली राशीत थ्या दिने ॥ तर्द्धं द्विगुणं कृत्वा राम [illegible]
मनि मिश्चह स्नानं शेषांके चलमं ते फलं ॥ ६७ ॥ टीका ॥ [illegible] शी
रके ४ राशि जो कुंभ इनकी शीर्षोदय संज्ञा है ॥ मीन [illegible] म रह
वान है ॥ ६६ ॥ जो हीलग्न मे जो न द जलगी तिसको कि [illegible] शीर्ष
३ घटाय के फिर ७ को भाग हरिये जो शेष बचे तो फल [illegible]
मूल ॥ चंद्र केंद्रे च दुर्मित्रं समित्रं युग्मवाणयोः ॥ रामे रसे च [illegible] मूल
स्वम्पशुका तिता ॥ ६८ ॥ टीका ॥ जो १ । ५ । ९ शेष बचे तो दुर्मित्र का हये और
२ । ५ । वचे तो समित्र होय और ३ । ६ । बचे तो साधारण मान दह और
जो शून्य ८ बचे तो बजारन मे सकल वस्तु को ताय है जो मदनी कमूल्य
वै ॥ ६८ ॥ इति समर्घप्रकरणं ॥ मूल ॥ सतीचारे गते सौम्ये क्रूरे वक्र त्वमागते ॥

हाहाभूतं जगत्सर्वं दंडमंडंच जायते ॥ ६९ ॥ टीका ॥ जो सौम्यग्रह स्वाती
चारमें होय और पापग्रह वक्री होय तो सर्व संसार में हाहाकार रहै और
युद्ध तें दंडमंड डारै ॥ ६९ ॥ इति स्वाती चारवक्रफलम् ॥ मूल ॥ मंत्रलो
करणं चैत्रे च दुःखफलं प्रदा ॥ वैशाखे रत्नलाभश्च ज्येष्ठे च मरणं ध्रु
वं ॥ ७० ॥ टीका ॥ जो चैत्र में दीक्षा लेय तौ बहुत दुःख होय [illegible] ॥ वैसाखमें
रत्नलाभ होय ज्येष्ठ में मरण होय ॥ ७० ॥ मूल ॥ आषाढे [illegible] नाश
श्रावणे च प्रभावहं ॥ प्रजाहानि भाद्रपदे सर्वे सुखम [illegible] ॥ ७१ ॥ टी
का ॥ आषाढ में दीक्षा लेय तौ भ्राता का नाश करै ॥ श्राव[illegible] तौ प्रभ
है भादौ में दीक्षा लेय तौ प्रजा का नाश होय ॥ आश्विन [illegible] सर्व
की सुख होय ॥ ७१ ॥ मूल ॥ कार्तिके धनवृद्धिः स्यात्मा[illegible]
पौषे तु ज्ञानहानिस्यान्माघे मेधाभिवर्धनं ॥ ७२ ॥ [illegible]
त्र लेय तौ धन की वृद्धि होय ॥ अगहन में मंत्र सुनै [illegible]
सुनै तौ ज्ञान होय ॥ माघ में सुनै तौ ज्ञान की वृद्धि हो[illegible]

एतत्सर्वमो भाग्यं सर्वेत्रपरिकीर्तितं ॥ दीक्षाकर्मे फ [illegible]
माशुभं ॥ ७३ ॥ टीका ॥ फाल्गुणमे दीक्षा लेय तो [illegible] ते
७३ ॥ मूल ॥ मासे शुक्रबुधादित्याः सार्द्धं चंद्रे द्वि [illegible]
पत्तजीवे वर्षं सार्द्धं वर्षद्वयं शनि ॥ राहुकेतु सदा भ [illegible]
७५ ॥ टीका ॥ शुक्र बुध सूर्य ये ग्रह १ मास एक राशि में [illegible]
द्रमा २॥ दिन एक राशिपै वर्षद्वयं शनि रहत है और [illegible] ॥ [illegible] ही
ना एक राशिपै ठहरते है और ब्रहस्पति १ वर्ष को [illegible] द में रह
ते है शनिश्चर २॥ वर्षे एक राशि पै रहत है राहु शा वर्ष [illegible] राशिपै रह
ते है ॥ इति ग्रह राशी भुक्त फलम् ॥ मूल ॥ मये तो द्वस पष्ट [illegible] श्रुत
वेदैः ॥ शारो मतसुदं ४ वाहो नाम हसो त्व ॥ ८ ॥ भोगामल जामे [illegible] पनो
शयेत ॥ दो २ दो २ आगामले कल नमस्तत्र में हनंतत्सणा ॥ चु
ल्ह चक्र को विचार ॥ लघि ज्योतिस्त्र के चागों दिनि ॥ १ ॥ इति श्री काशी
नाथ कृतौ शीघ्रबोध भाषा टीकायां सनामिकं चतुर्थ प्रकरणं ॥ ४ ॥ संव

शी॰टी॰ त॥९९॥२०॥लिखितंवैस्नवमंगलदासजी॥कारणदीवलुनाम ब्रासणनेलिखायो॥शुभमस्तु॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥

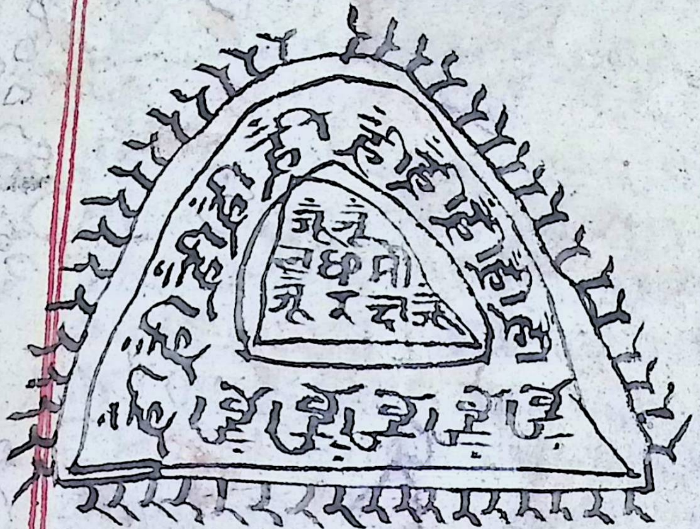

[illegible] र्तो

[illegible] र्तीत

[illegible] ट्टम

[illegible] शिवे

[illegible] सों

ॐ॥ सवसत्तानकमघेतु सत्तीसत्ताक संभव:
सर्वेनसरवतीसत्ती॥ नसत्तीसवसरवते॥१॥
चतुर्थं यथासगं च॥ अष्ट सगवर्प चमे॥ षष्ठे
चतुर्थं [illegible] च ४ अष्टसगं चसप्तमे॥ अष्ट [illegible] मे
कंतु॥ नवमे ब्रह्मसर्वस्मं॥ दश [illegible] ॥श
यांतु ७ सतपुसत्तानकमीति॥ श्री ७ गा [illegible] तोष्ठ
सुललिते; वामे; सुधासपूते; दी [illegible] सव
नासु विपुले; द जै; पधेवने; सर्वे [illegible]
एकताया ज्ञानसमालंवितं इत्यं [illegible]
जगतिसंसारना गाहुयं ७ शादुल [illegible]

ॐ श्रीगणेशाय नमः विप्रमस्त

स्प स्तनुमनुंलभंपवरस्यनारी

जोजोभावेस्वामदृष्टिजितं

स्पतस्पतस्याधर्वि घीपपेरव

स्पहानी:२॥मेषरवेश्चके भामे

वसाजुलाभतौ पुत्रजन्म ... ध

कर्कस्य पत्नी चंद्रमा:८॥स्पानभानस्तजी

वैसनमकरकं मयो १२ संघस्यात्सपत्नी

से पैनतयेते गणकोतमैो ३ ह्मौकापमम

२	८	२	१
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	१

८	१	१
३	५	८
४	६	४

सप्तनयाणिकोष्ठतंत्रैराजोनवे॥पंच
तुर्तवादति॥रसञ्चवेदाघटिकदूय
वस्त्रबूंदूपजकार्यसिद्धिः१ः२।

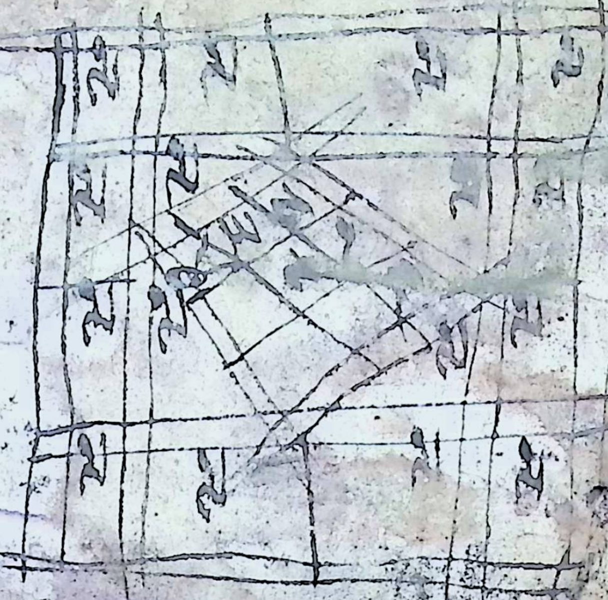

जन्मोर शेद सद॥ स्तुवेणीपादो द्वीपं चनंव मे [illegible] पच। गीस पद श्रमं चलपादं
पादयु॥ चतुर्थे मा ठलमे श्रीलोहापादौर हो॥ स॥ स जापिता श्र मोत्राता चस
तलदामीविनष्पाति; चौरनागगनाशायम [illegible] नो [illegible] गुन श्रात्र।
तीथ वां [illegible] नदेगं [illegible] नामा अद्वमाणं चणे [illegible] स्वापी स्यां [illegible] श्री
[illegible] पाते॥ [illegible] स्वापिस्यो [illegible] व। चलचि [illegible] च [illegible] के॥ रामवेद ४ भं [illegible]
[illegible] मेधा गस्या [illegible] चस [illegible] र णिप्रय॥ तास्या [illegible] धपो म
[illegible] चपाद [illegible] पं च [illegible] वै स्ते [illegible] सै मनो॥ स्त्रि [illegible]
[illegible] लिगते [illegible] सै संयुतं श्रीमै [illegible] मरशिवस्य देहनं
गारिवाव [illegible] दस्कू दिंद स्पात संगमंस गाभी [illegible]
[illegible] कष्ठा दी संस्थापने: स्व [illegible] नते गीणा नादीनन
[illegible] नीर म धूप ४ मप भी: पूर्वी ४ [illegible] म: दक्षा [illegible] निर
म: [illegible] का [illegible] म श्रम

॥ ६

चैतन्य

मव्रत ।

भुवनेश्वरी करुणा